✻ श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते ✻

।। श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ।।

श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः

रचयिता --

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री ''श्रीजी'' महाराज

* ग्रन्थ विमोचन *

प्रस्तुत ''स्तवरत्नाञ्जलि'' ग्रन्थ का विमोचन व्रजविदेही चतुः सम्प्रदाय श्रीमहान्त श्रीधनञ्जयदासजी महाराज (काठिया बाबा) तर्क-तर्क तीर्थ के पुनीत कर-कमलों द्वारा श्रीवृन्दावन एवं मथुरा के लब्धप्रतिष्ठ सन्त-महान्त विद्वानों की महती सभा के मध्य श्रीयमुना-जयन्ती एवं श्रीपुरुषोत्तमाचार्य जयन्ती के पुनीत पर्व पर दि० २२-३-८० चैत्र शु० ६ शनिवार सं०२०३७ को सम्पन्न हुआ। श्रीमहान्तजी महाराज ने स्वास्थ्य सानुकूल न रहने पर भी अपना अमूल्य समय देकर विमोचन-समारोह को विधिवत् पूर्ण कराया। ग्रन्थ रचयिता अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री ''श्रीजी'' श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के अध्ययन-काल में जो आपका सर्वविध योगदान रहा है वह श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के इतिहास में सदा-सर्वदा के लिये आपकी अनुपम-सेवा की अक्षुण्ण-प्रेरणा कराता रहेगा। श्रीकाठियाजी महाराज ने भगवत्सेवा, सन्तसेवा, सम्प्रदाय सिद्धान्तप्रचार एवं दार्शनिक ग्रन्थों के सुन्दर प्रणयन से श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय के आदर्शपूर्ण गौरव का अभिवर्द्धन किया है। सम्प्रति ८१ वर्ष की वृद्धावस्था में भी आप निरन्तर श्रीयुगल-उपासना में तत्पर रहते हुए सम्प्रदाय के प्रचार-प्रसार में अग्रसर हैं। युगलकिशोर सर्वेश्वर श्रीराधामाधव प्रभु से आपके चिरकालिक माङ्गलिक कुशलता के लिए पुनः पुनः मङ्गल-कामना है।

--सम्पादक

विमोचन किया

धनञ्जयदास

* श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते *
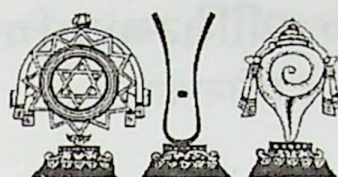
॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः

रचयिता--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज

सम्पादक--

निम्बार्कभूषण अधिकारी व्रजवल्लभशरण, वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ

,, पं० रामगोपाल शास्त्री, साहित्याचार्य

,, पं० गोविन्ददास सन्त, धर्मशास्त्री-पुराणतीर्थ

,, पं० मुरलीधर शास्त्री, कथाव्यास

,, पं० दयाशङ्कर शास्त्री साहित्याचार्य

प्रकाशक--

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ शिक्षा समिति

निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

पुस्तक प्राप्ति स्थान--
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

प्रकाशन तिथि--
नवसंवत्सर
श्रीनिम्बार्काब्दः ५०९७
वि० सं० २०५६

द्वितीयावृत्ति
एक हजार

न्यौछावर
तीस रुपये मात्र

मुद्रक--
श्रीनिम्बार्क--मुद्रणालय
निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद)

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥

श्रीयुगलकिशोर श्यामाश्याम

*   श्रीराधासर्वेश्वरो विजयते   *

समर्पणम्

राधामुकुन्द ! गोविन्द ! व्रजवृन्दावनेश्वर ! ।
निकुञ्ज-कुञ्ज-सञ्चारिन् ! श्रीकृष्ण ! करुणार्णव ! ॥१॥

कलिन्दनन्दिनीकूल-विहारिन ! भक्तवत्सल ! ।
सर्वाधिष्ठान ! सर्वज्ञ ! सर्वजीवनजीवन ! ॥२॥

अमन्दानन्दपीयूष--महासिन्धो ! कृपानिधे ! ।
राधासर्वेश्वर ! श्रीश ! लीलाविलासतत्पर ! ॥३॥

नाथ ! त्वदीयपादाब्ज---कृपयाऽयं प्रकाशितः ।
स्तुतिभावसमायुक्तः स्तवरत्नाञ्जलिर्लघुः ॥४॥

समर्प्यते मया भक्त्या तव पादारविन्दयोः ।
गृहाण श्रीप्रियाप्राण ! सर्वत्राणपरायण ! ॥५॥

समर्पकः--
श्रीराधासर्वेश्वरचरणारविन्दमिलिन्दायमानः
श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यः

सम्पादकीय

अनन्तानन्त ब्रह्माण्डाधिपति सर्वात्मा सर्वाधार सर्वनियन्ता श्रीसर्वेश्वर प्रभु की लीला अनन्त है, वह सर्वद्रष्टा सबके प्रत्यक्ष रहते हुए भी अप्रत्यक्ष, अत्यन्त सन्निकट रहते हुए भी अत्यन्त दूर, सबके बाहर भीतर रहते हुए भी निर्लिप्त, समस्त सद्‌गुण और असद्‌गुणों का समुद्र होते हुए उन गुण-दोषों से अप्रभावित, अतएव अचिन्त्य विचित्र समस्त विरोधों का एकमात्र आश्रय, सर्वव्यापक होते हुए भी सक्रिय हैं । समस्त वेदादि-शास्त्र और ऋषि-महर्षि अहर्निश चिन्तन करते हुए भी उनकी लीला का पार नहीं पाते, यही कहते रहते हैं--

तदेजति तन्नैजति तद्दूरे तद्वन्तिके ।
तदन्तरस्य सर्वस्य तदुसर्वस्यास्य वाह्यतः ।। ई० ५

प्राणी और अचेतन पदार्थ सब कुछ वही हैं, अतएव इस चेतनाचेतनात्मक विश्वम्भर रूप विश्व की उपासना करनी चाहिये--सर्वं खल्विदं ब्रह्म तज्जलान्निति शान्त उपासीत० । (छान्दोग्य उप०) । श्रीनिम्बार्क--सम्प्रदाय के पूर्वाचार्यों ने कहा है--किञ्च किञ्चदिह विद्यते, नहि, त्वां विनाऽण्वपि तथाखिलेश्वर ।

इसी दृष्टिकोण से पृथ्वी जल तेज वायु आदि समस्त जड़ प्रतीत होने वाले पदार्थों की भी पूजा एवं सत्कार करना शास्त्र विहित है । वेदों में पृथ्वी वायु उषः आदि के सूक्त उपलब्ध हो रहे हैं । प्रभु का वही अनन्य उपासक है जो विश्व के पृथ्वी समुद्रादि सभी पदार्थों को भगवत् रूप मानकर इन्हें प्रणाम करे ।

खं वायुमग्निं सलिलं महीञ्च ज्योतींषि सत्वानि दिशो द्रुमादीन् ।
सरित्समुद्राँश्च हरेः शरीरं यत्किञ्चभूतं प्रणमेदनन्यः ।।
(भा० २-११-४१)

इन सब पदार्थों को भगवान् का ही अंश मानकर इनकी चर्चा की जाय तो वह भगवच्चर्चा ही कहलाती है उससे प्रभु बड़े प्रसन्न होते हैं। कहा भी है--भगवान् की सेवा की तो बात ही क्या ? भगवान् के गुणानुवादों को सुनने से भी समस्त क्लेशों का शमन हो जाता है--

अशेषसंक्लेशशमं विधत्ते गुणानुवादश्रवणं मुरारेः ।
कृतः पुनस्तच्चरणारविन्द-परागसेवारतिरात्मलब्धा ।।
(भा० २-७-१४)

जिनके जन्म--जन्मान्तरों के पुण्योदय होते हैं वे ही जीव प्रभु के सन्मुख होते हैं, उन्हीं के हृदय में प्रभु की भक्ति का अंकुर जमतां है, अन्यथा संसार के प्रपञ्च में फँसकर जन्म-मरण के चक्कर में भटकते रहते हैं । जिनके दुष्कर्म उद्भूत हो जाते हैं वे चाहे ऋषि-महर्षि भी क्यों न हों, भगवद्विमुख होने पर उन्हें भी भव-प्रवाह में भटकना ही पड़ता है । अतः प्राणियों को भगवदुपासना की ओर अग्रसर होना चाहिए ।

प्रस्तुत स्तवरतनाञ्जलि का भी मुख्य उद्देश्य यही है--इसमें गणपति, दुर्गा, शङ्कर, लक्ष्मी, पुष्कर, हनुमान्, गरुड़, नारायण आदि के स्तवन पूर्वक, श्रीसर्वेश्वर, श्रीराधा, श्रीनन्दनन्दन, भगवान् का स्तवन किया गया है । जो प्रेमी पाठक इसके श्लोकों का भाव समझ कर पठन और मनन पूर्वक अनुष्ठान करेंगे निश्चित उनका परम हित होगा । इसमें किसी भी प्रकार का सन्देह नहीं करना चाहिए, क्योंकि जो संशय पूर्वक कार्य किया जाता है उसमें सफलता मिलना कठिन है । श्रद्धा विश्वास पूर्वक किया हुआ कार्य अवश्य ही सफल होता है ।

रत्नाञ्जलि का हिन्दी अनुवाद भी परम आवश्यक था यह कार्य पं० रामगोपालजी शास्त्री साहित्याचार्य द्वारा सम्पन्न हुआ । पं० मुरलीधरजी शास्त्री और पं० वासुदेवशरणजी व्याकरणाचार्य द्वारा प्रूफ संशोधनादि कार्य सराहनीय है । ग्रन्थ प्रणेता आचार्यश्री के जीवन-चरित्र के लिए भी बहुत से प्रेमी पाठक लालायित थे । पं० गोविन्ददासजी सन्त ने संक्षिप्त रूप में लिखकर उसकी भी पूर्ति की है, मुद्रण कार्य के प्रथम प्रकाशन में पं० व्रजमोहनलालजी शर्मा व माधवशरणजी का सुन्दर सहयोग रहा । कार्यालय के कार्यकर्ता व प्रेस कर्मचारी आदि सभी ने इस कार्य में यथोचित सहयोग प्रदान किया, ये सभी धन्यवाद के पात्र हैं । आशा है प्रेमी पाठक इस स्तवरत्नाञ्जलि को उपयोग में लेकर अलभ्य लाभ लेंगे । श्रीसर्वेश्वर के ग्राहकों का परम हित हो, इसीलिये यह विशेषांक रूप में भी प्रकाशित की गई थी । आशा है प्रेमी पाठक इसको विशेष आदर से पढेंगे और परम लाभ प्राप्त करेंगे ।

--अधिकारी व्रजवल्लभशरण वेदान्ताचार्य

❊ उपासनीयं नितरां जनैः सदा ❊

नौमि सर्वेश्वरं नित्यं राधामाधवरूपिणम् ।
हंसं श्रीमत्कुमाराञ्श्च नारदं निम्बभास्करम् ।।

यह क्षणिक जीवन यों ही निर्बाध गति से चला जा रहा है, इसमें यदि उत्तम कर्म सम्पादित न हों तो मानवता का फिर कोई अर्थ ही नहीं । केवल शरीर धारण, सुन्दर स्वरूप तथा जीवनशक्ति से ही मानवता का अङ्कन सम्भव नहीं । यह सब तो इतर प्राणियों में भी विद्यमान है । मानवता का मूल अर्थ है विवेक पूर्वक वेदादिशास्त्र प्रतिपादित सत्कर्म धर्माचरण में संलग्न रहते हुए जगन्नियन्ता जगज्जन्मादिहेतु सर्वाधार सर्वशक्तिमान् सर्वान्तरात्मा सर्वज्ञ श्रीसर्वेश्वर श्रीहरि की परमकल्याणकारिणी मङ्गलमयी उपासना में अपने आपको अभिरत करे । वस्तुतः उपासना ही जीवन की प्रमुख सरणि है और यही सर्वतोसुख्य दृढ़ अवलम्ब है, उपासना विहीन जन आध्यात्मिकता से वञ्चित रहता है जिसकी परिणति अहितकर होती है इसीलिए श्रुति-स्मृति-पुराण-सूत्र-तन्त्रादि संस्कृत-वाङ्मय शास्त्रों का सार गर्भित सरस सन्तवाणियों तथा आप्तपुरुषों के उत्कृष्टतम वचनों ने श्रीभगवदुपासनापरक ही प्रतिपादन किया है । अनन्त श्रीसमलंकृत जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर आचार्यप्रवर श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज ने अपने **श्रीमहावाणी** ग्रन्थ में उपासना विषयक वर्णन कितना मनोरम एवं हृदयग्राही किया है--

जिनकें यहै अनन्य उपास ।
तिनकौ प्रिया-लाल नित हित, करि राखें अपने पास ।।
माया त्रिगुन प्रपंच पवन की, अंच न आवैं तास ।
श्रीहिरप्रिया निपट अनुवर्तिनि, ह्वै निरखें सुखरास ।।

(श्रीमहावाणी, सिद्धान्त सुख, पद-२२)

यथार्थतः उपासना ही जीवन का मूल आधार है मूल साधन है जिसके अनुपालन से सहज ही में परमाराध्य परमकरुणावरुणालय वृन्दावननिकुञ्जविहारी युगलकिशोर सर्वेश्वर श्यामाश्याम श्रीराधामाधव अपनी अहैतुकी कृपाकादम्बनी का अभिवर्षण कर अनन्तानन्द-सुधारस का दान करने को उत्सुक हो जाते हैं--

सकृदेव प्रपन्नाय तवास्मीति च याचते ।
अभयं सर्वभूतेभ्यो ददाम्येतद्व्रतं मम ।।

(श्रीवाल्मीकि रामायण, युद्धकाण्ड, सर्ग १८, श्लोक ३३)

अर्थात् जो भक्त एक बार भी शरण होकर हे प्रभो ! मैं आपका हूँ, इस प्रकार अपनी वाणी से याचना करले तो वे शरणागतवत्सल श्रीहरि इतने कृपामय हैं कि उन प्रपन्न उपासकों को सब कुछ प्रदान करने को तत्पर हो जाते हैं ।

इस दृष्टि से स्पष्ट ही है कि उन जगन्नियन्ता श्रीसर्वेश्वर का प्रतिक्षण अभिचिन्तन करते हुए अपने जीवन को सार्थक करे । शास्त्रों के ये परमोच्चतम वचन भी इसी भाव को व्यक्त कर रहे हैं--

तस्मात् सर्वात्मना राजन् हरिः सर्वत्र सर्वदा ।
श्रोतव्यः कीर्तितव्यश्च कर्तव्यो भगवान्नृणाम् ॥

(श्रीमद्भा० स्क० २ अ० २ श्लोक ३६)

श्रीशुकदेव मुनि राजा परीक्षित् को उपदेश करते हैं कि राजन् ! इसलिए मानवमात्र को चाहिए कि वे निरन्तर प्रत्येक स्थिति में अपनी समस्त शक्ति से उन सर्वेश्वर श्रीहरि का ही श्रवण तथा स्मरण करें ।

इसी प्रकार सृष्टि रचयिता जगत्पिता श्रीब्रह्मा ने भी अनन्तकोटिब्रह्माण्डाधिपति निखिलभुवनमोहन गोलोकविहारी व्रजेन्द्रनन्दन भगवान् श्रीकृष्ण की स्तुति करते हुए उपासना का कितना मधुर भाव व्यक्त किया है--

ये तु त्वदीयचरणाम्बुजकोशगन्धं
जिघ्रन्ति कर्णविवरैः श्रुतिवातनीतम् ।
भक्त्या गृहीत-चरणः परया च तेषां
नापैषि नाथ हृदयाम्बुरुहात्स्वपुंसाम् ॥

(श्रीमद्भा. स्क. ३ अ. ९ श्लो. ५)

हे सर्वेश्वर ! जो अनन्य उपासक भक्तजन वेदरूप वायु से लायी हुई आपके युगल-चरण रूप कमलेश की दिव्य सौरभ (सुगन्ध) को अपने कर्णपुटों से पान करते हैं, ऐसे आपके रसिक भक्तजनों के हृदय--कमल से आप कभी भी विलग नहीं होते, क्योंकि वे प्रेमलक्षणा पराभक्ति रूप रज्जू (डोरी) से आपके चारु चरण-कमलों को सदा बांधे हुए रहते हैं ।

वस्तुतः इस प्रकार ध्यान-स्मरणादि रूप से उन हृदयेश्वर की मनसा, वाचा, कर्मणा सार्वकालिक उपासना करे । इसीलिये पूर्ववर्ती सभी आचार्यप्रवरों ने अपने स्वाराध्य-चिन्तन के लिये विभिन्न परम माङ्गलिक मधुरातिमधुर स्तवों से आराधना (उपासना) की है । जिससे उन्हें स्वतःस्वोपास्य का परमानुग्रह प्राप्त होता रहा है ।

उन्हीं प्रातर्वन्दनीय पूर्वाचार्यचरणों की सरणि-स्वरूप ही यह लघुकले-

वरात्मक **स्तवरत्नाञ्जलि** नामक पुस्तिका रसमर्मज्ञ रसिक महानुभावों रसिक भावुक भक्तों के समक्ष प्रस्तुत है । इसमें श्रीयुगलप्रियालाल की एवं अस्मद्गुरुवर्य्य आचार्य श्री की सहज अनुकम्पा से जो कुछ स्फुरण हुआ है यह उन्हीं की कृपा का प्रसाद है । इसमें शीघ्रतावश विविध स्थलों पर परिस्खलन का होना भी स्वाभाविक ही है तथापि सहृदय भावुक विद्वज्जन स्वकीय सौजन्यपूर्ण सरल स्वभाव से उन स्थलों को परिशुद्ध कर इस उपासना-परक ग्रन्थ को हृदयङ्गम कर श्रीभगवल्लीला का अनुसन्धान करेंगे ऐसा हम अनुभव करते हैं ।

अनेक विद्वज्जन एवं भगवद्भक्तों की पुनीत भावनानुसार इस ग्रन्थ का श्रीसर्वेश्वर मासिक पत्र के विशेषांक रूप में प्रकाशन हुआ है । इसके साङ्गोपाङ्ग सम्पादन, प्रकाशन, मुद्रणादि कार्यों में अ० श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य पञ्चतीर्थ, विद्वद्वर पं० श्रीगोविन्द-दासजी सन्त पुराणतीर्थ द्वैताद्वैत विशारद धर्मशास्त्री, पण्डितप्रवर श्रीरामगोपालजी शास्त्री साहित्याचार्य, पं० श्रीदयाशङ्करजी शास्त्री साहित्यपुराणाचार्य, पं० श्रीमुरलीधरजी शास्त्री भागवत विशारद तथा पं० श्रीवासुदेवशरणजी उपाध्याय व्याकरण साहित्याचार्य प्रभृति विद्वज्जन अग्रगण्य हैं । पं० श्रीरामगोपालजी शास्त्री द्वारा तो समग्र ग्रन्थ का भाषानुवाद किया जाकर इसे सर्वसुलभ बनाने का सुप्रयास सर्वाधिक प्रशंसास्पद है । पं० श्रीव्रजमोहनजी शर्मा (हाथरस) वालों एवं स्थानीय सन्त-परिकर में से श्रीमाधवशरणजी का श्रीसर्वेश्वर प्रेस की व्यवस्था सम्बन्धी कार्य तत्परता निश्चय ही उत्साहपूर्ण रही है। उपर्युक्त ये सभी श्रीसर्वेश्वर प्रभु के विशिष्ट परिकर में से हैं इनको जितना भी साधुवाद दिया जाय वह अत्यल्प ही है । इन सभी के सर्वविध आनन्द सम्बृद्धि के लिये श्रीसर्वेश्वर प्रभु के श्रीयुगल पादपद्मों में मङ्गल-कामना है । सम्प्रति इस द्वितीयावृत्ति प्रकाशन में निम्बार्क-मुद्रणालय के व्यवस्था कार्यों एवं मुद्रण कार्यों में सदा तत्पर श्रीऋषिकुमार जासरावत निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) का परिश्रम परम प्रशंसास्पद है भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु से इनके सर्वाविध अभ्युदय के लिये पुनीत-कामना है ।

--श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

अनुवादक का निवेदन

चिदानन्दघन पूर्णकाम श्रीवृन्दावनधाम की अनुपम महिमा है । अनन्त-कोटि-ब्रह्माण्ड-नायक जगदभिन्ननिमित्तोपादनकारण, अकारण-करुणा-वरुणालय अचिन्त्य अनन्त स्वाभाविक गुण व शक्तियों के आगार, नित्य निकुञ्जविहारी, दिव्य युगल, श्रीराधामाधव जहाँ कलिन्दनन्दिनी श्रीयमुनाजी के तट पर वंशीवट के निकट आह्लादिनी शक्ति श्रीप्रियाजी के साथ नित्य विहार करते रहते हैं । जिनके पद-नख-ज्योति की आभा के अनुलेश मात्र रो ही जगत् में परमेश्वर परब्रह्म जगमगाते हैं । नारायण, विष्णु, शिव आदि विविध श्रीविग्रहधारी देवता जिस युगलकिशोर के अंश हैं तथा स्वयं अंशी हैं । जिसकी ललित अगाध लीलाओं का वर्णन किया नहीं जा सकता । भागवत में जिसकी प्रभुता का निर्देश है । ऐसे समस्त कारणों के भी कारण, मंगल के मंगल, अवतारों के अवतारी, अंशों के अंशी श्रीप्रिया-प्रियतम की अंशांशी भेद से विविध रूपों में की गई स्तुतियों का संकलन रूप यह स्तवरत्नाञ्जलि है, जिसकी रचना अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीपति श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज ने की है ।

तात्कालिक नवनिर्मित तथा कतिपय स्वतन्त्र रूप से प्रकाशित स्तोत्रों के इस संकलन को दो भागों में विभक्त किया है । पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध । धाम धामी व गुरु-वन्दनापरक स्तोत्र पूर्वार्द्ध में हैं एवं धामी के विविध रूपों की वन्दना उत्तरार्द्ध में की गई है । दोनों भागों के औचित्य का निरूपण उन-उन भागों के प्रारम्भ में अनुवाद की अवतरणिका में कर दिया गया है ।

स्तव-रत्नों की इस अञ्जलि में स्वतः महान् प्रकाश है । अनुपम साधना है । प्रसाद व माधुर्य गुणों की अहमहमिका भाषा में प्राञ्जलता को ला रही है । इसका प्रत्येक वर्ण मन्त्र रूप है ।

स्तवों के मूल पाठ में ही इतना चमत्कार है कि नित्य पाठ करने वाले भक्तजनों के लिए तत्काल आनन्द की प्राप्ति होती है एवं उनके मनोरथ भी सफल हो जाते हैं, तथापि संस्कृत से अनभिज्ञ सर्वसाधारण के अर्थावबोध हेतु पूज्यपाद आचार्यचरणों के आदेश की अनुपालना में हिन्दी अनुवाद भी इसके साथ प्रस्तुत कर दिया गया है । जिससे भावुकजन सरलता से लाभ ले सकेंगे । वस्तुतः इस ग्रन्थ का अनुशीलन सभी के लिए परम हितकर होगा ऐसा मेरा दृढ विश्वास है ।

--रामगोपाल शास्त्री

स्तवरत्नाञ्जलि प्रणेता--

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपादपीठाधीश्वर

श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज

अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ

सलेमाबाद (अजमेर) राजस्थान

का

संक्षिप्त--इतिवृत्त

अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक, करुणा-वरुणालय, सर्वशक्तिमान्, सर्वान्तिर्यामी, सर्वनियन्ता, सर्वाधार, सर्वज्ञ श्रीसर्वेश्वर प्रभु की अवतार एवं क्रीड़ास्थली भारत वसुन्धरा की गोद में स्थित पर्वतराज हिमालय तथा गङ्गा-यमुना-सरस्वती आदि देव-नदियाँ एवं भगवदवतारादि के होने से यह पुण्य भूमि परम भाग्यशालिनी कही गई है। ऋषि-महर्षियों के त्याग-तपस्या, भजन-साधना, यज्ञ-यागादि एवं आध्यात्मिक (भगवद्-प्राप्ति की ओर अग्रसर करने वाले) विधानपूर्ण शास्त्रों के निर्माण तथा उनके प्रचार-प्रसार द्वारा इसका ओर भी उत्कर्ष (महत्व) बढ़ गया है । इसके अतिरिक्त जहाँ भगवद्भक्तों (वैष्णवों) का प्रादुर्भाव हुआ हो, उसका तो **वसुन्धरा भाग्यवती च धन्या** कहकर वर्णन किया गया है । तभी तो **अहो अमीषां किमकारि शोभनं** तथा **गायन्ति देवा कला किल गीतकानि** इन श्रीमद्भागवत एवं विष्णु-पुराण के वचनों द्वारा ज्ञात होता है कि-सुर-वृन्द भी इस भारत-भूमि पर जन्म लेने की अभिलाषा करते हैं ।

सभी प्राणी सुख-शान्ति की अभिलाषा करते हैं उसकी समुपलब्धि का मूल कारण धर्माचरण ही है । यही कारण है कि यहाँ के ऋषि--महर्षि एवं राजा-महाराजाओं ने धर्म की प्राणपन से रक्षा की है ।

अतः इस धर्मप्राण देश में जब-जब धर्म का ह्रास एवं अधर्म की अभिवृद्धि हुई है, तब-तब सर्वशक्तिमान् भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु ने अवतार ग्रहण कर अपने स्वरूपभूत धर्म की रक्षा की है । अब भी आवश्यकतानुसार अपनी दिव्य विभूतियों (पार्षदों) को धर्माचार्यों के रूप में भेजकर समयोचित उद्देश्यों की पूर्ति करवाते हैं । उन्हीं धर्माचार्यों की सम्प्रदाय परम्परायें अद्यावधि अक्षुण्ण रूप में चली आ रही हैं । इन परम्पराओं में भी बीच-बीच में जब कभी किसी प्रकार की कोई शिथिलता आ जाती है, तो भगवत् कृपा से किसी न किसी शक्ति-सम्पन्न महापुरुष

॥ श्रीराधासर्वेश्वरो जयति ॥

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री 'श्रीजी' महाराज

का प्राकट्य हो जाता है, जिनके द्वारा पुन: जागृति का सञ्चार हो उठता है । बस उन्हीं दिव्य-विभूतियों में एक हमारे परम पूज्य प्रात: स्मरणीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति जगद्गुरु निम्बार्काचार्य वर्तमान श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज हैं ।

जन्म और शैशवावस्था--

आपका जन्म विक्रम संवत् १९८६ वैशाख शुक्ल प्रतिपदा शुक्रवार कृत्तिका नक्षत्र तदनुसार दिनाङ्क १० मई सन् १९२९ ईस्वी में श्रीनिम्बार्कतीर्थ (परशुरामपुरी) सलेमाबाद-किशनगढ़ (राजस्थान) निवासी परम पावन गौड़ ब्राह्मण वंश के एक परिवार में प्रात: ५ बजकर ५४ मिनट पर हुआ था । माता का नाम श्रीस्वर्णलता (सोनीबाई) और पिता का नाम श्रीरामनाथ शर्मा गौड़ था । यह समस्त परिवार श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय परम्परानुयायी परम वैष्णव था ।

प्राक्तन पुण्य कर्मानुसार किसी भाग्यशाली दम्पत्ति को ही ऐसे महापुरुष को जन्म देने एवं लालन-पालन का सुयोग प्राप्त होता है ।

जिस वसुन्धरा पर ऐसे महापुरुषों का जन्म होता है, वह वसुन्धरा तथा उनका कुल (परिवार), माता-पिता एवं उनके स्वर्गस्थ पितृगण आदि परम धन्य हो जाते हैं । आपका बाल्यकालिक प्रचलित (बोलता) नाम रतनलाल था । यद्यपि कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आपका जन्म नाम उत्तमचन्द रखा गया था, तथापि नामकरण के दिन पीठ के व्यास पं० श्रीगोवर्धनलालजी के द्वारा यह बोलता नाम रतनलाल रखा जाने के कारण सब रतनलाल ही कहते थे । एक दिन की बात है-आपके जन्म स्थान पर एक अज्ञात वैष्णव जटाधारी महात्मा भिक्षावृत्ति के बहाने आये । माताजी ने बालक रतनलाल को गोद में लिये हुए ही श्रद्धापूर्वक उठकर उन्हें भिक्षा दी । माताजी की गोद में हँसते हुये बालक रतन को देखकर प्रसन्न मुद्रा में महात्माजी ने कहा-माता ! तुम्हारा यह पुत्र अत्यन्त तेजस्वी एक रतन है, आगे चलकर यह बालक एक अच्छे (उत्तम) पद को प्राप्त करेगा । इस शुभाशीर्वाद को श्रवणकर माताजी बड़ी प्रसन्न हुई । महात्माजी पधार गये, तब उन के चले जाने के बाद माताजी को तुरन्त स्मरण हो आया कि हो न हो ये महात्मा श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के संस्थापक श्रीपरशुरामदेवाचार्य (स्वामी) जी महाराज ही होंगे जो इस बालक को आशीर्वाद देने को ही आये हों । माताजी ने पहिले यह बात बड़े-बूढ़ों से सुन भी रखी थी कि-इसी प्रकार इस पीठ में तथा श्रीपुष्करराज के परशुरामद्वारे में कई लोगों को श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन हुये हैं ।

का प्राकट्य हो जाता है, जिनके द्वारा पुनः जागृति का सञ्चार हो उठता है। बस उन्हीं दिव्य-विभूतियों में एक हमारे परम पूज्य प्रातः स्मरणीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति जगद्गुरु निम्बार्काचार्य वर्तमान श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज हैं।

जन्म और शैशवावस्था--

आपका जन्म विक्रम संवत् १९८६ वैशाख शुक्ल प्रतिपदा शुक्रवार कृत्तिका नक्षत्र तदनुसार दिनाङ्क १० मई सन् १९२९ ईस्वी में श्रीनिम्बार्कतीर्थ (परशुरामपुरी) सलेमाबाद-किशनगढ़ (राजस्थान) निवासी परम पावन गौड़ ब्राह्मण वंश के एक परिवार में प्रातः ५ बजकर ५४ मिनट पर हुआ था। माता का नाम श्रीस्वर्णलता (सोनीबाई) और पिता का नाम श्रीरामनाथ शर्मा गौड़ था। यह समस्त परिवार श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय परम्परानुयायी परम वैष्णव था।

प्राक्तन पुण्य कर्मानुसार किसी भाग्यशाली दम्पत्ति को ही ऐसे महापुरुष को जन्म देने एवं लालन-पालन का सुयोग प्राप्त होता है।

जिस वसुन्धरा पर ऐसे महापुरुषों का जन्म होता है, वह वसुन्धरा तथा उनका कुल (परिवार), माता-पिता एवं उनके स्वर्गस्थ पितृगण आदि परम धन्य हो जाते हैं। आपका बाल्यकालिक प्रचलित (बोलता) नाम रतनलाल था। यद्यपि कृतिका नक्षत्र के तृतीय चरण में जन्म होने के कारण आपका जन्म नाम उत्तमचन्द रखा गया था, तथापि नामकरण के दिन पीठ के व्यास पं० श्रीगोवर्धनलालजी के द्वारा यह बोलता नाम रतनलाल रखा जाने के कारण सब रतनलाल ही कहते थे। एक दिन की बात है-आपके जन्म स्थान पर एक अज्ञात वैष्णव जटाधारी महात्मा भिक्षावृत्ति के बहाने आये। माताजी ने बालक रतनलाल को गोद में लिये हुए ही श्रद्धापूर्वक उठकर उन्हें भिक्षा दी। माताजी की गोद में हँसते हुये बालक रतन को देखकर प्रसन्न मुद्रा में महात्माजी ने कहा-माता ! तुम्हारा यह पुत्र अत्यन्त तेजस्वी एक रतन है, आगे चलकर यह बालक एक अच्छे (उत्तम) पद को प्राप्त करेगा। इस शुभाशीर्वाद को श्रवणकर माताजी बड़ी प्रसन्न हुई। महात्माजी पधार गये, तब उन के चले जाने के बाद माताजी को तुरन्त स्मरण हो आया कि हो न हो ये महात्मा श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के संस्थापक श्रीपरशुरामदेवाचार्य (स्वामी) जी महाराज ही होंगे जो इस बालक को आशीर्वाद देने को ही आये हों। माताजी ने पहिले यह बात बड़े-बूढ़ों से सुन भी रखी थी कि-इसी प्रकार इस पीठ में तथा श्रीपुष्करराज के परशुरामद्वारे में कई लोगों को श्रीस्वामीजी महाराज के दर्शन हुये हैं।

बालकपन से ही आपका लौकिक खेल-खिलोनों में मन न जाकर स्वाभाविक रूप से धार्मिक कार्यों जैसे भगवान् श्रीराधामाधव की मंगला, श्रृङ्गार एवं सायंकालीन आरती के दर्शन तथा स्तुति-संकीर्तनादि में सम्मिलित होने तथा पुजारी श्रीरघुनाथदासजी से श्रीलड्डू-गोपालजी की सेवा प्राप्त कर दैनिक पूजा करने आदि में प्रवृत्ति रहती थी। जिस प्रकार प्राची दिशा में सूर्योदय से पूर्व ही अरुणोदय-वेला में एक प्रकाशमयी लालिमा की दिव्य छटा दिखाई देने लगती है, ठीक उसी प्रकार--**होनहार विरवान के होत चीकने पात** वाली कहावत के अनुसार भगवत्कृपापात्र सद्गुण सम्पन्न महापुरुषों की भी उनके बालकपन में ही प्रतिभा झलकने लगती है। श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) के सुयोग्य विद्वान् ज्योतिषि पं० श्री लादुरामजी व्यास द्वारा निर्मित आपकी जन्म कुण्डली का फलादेश जन्म से लेकर आज पर्यन्त ज्यों का त्यों मिलता हुआ आ रहा है।

दीक्षा-युवराज पद नियुक्ति एवं आरम्भिक शिक्षा--

वैष्णव घराने में उत्पन्न हुए बालक घर में अपने माता-पिता एवं बन्धु बान्धवों का शिष्टाचार पूर्वक रहन-सहन, आचार-विचार, पाठ-पठन एवं धर्म-कर्मादि सभी नियमों को जैसा देखते हैं उसी प्रकार उनके हृदय पटल पर वैसे ही संस्कार जम जाते हैं और फिर वे **यन्नवे भाजने लग्नः संस्कारो नान्यथा भवेत्** के अनुसार बालकपन से लेकर आजीवन पर्यन्त अमिट बन जाते हैं। आपके बालकपन से ही आपमें इन सदाचार सद्विचार सम्बन्धी भावों को देखकर अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीपति श्री श्रीजी श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज बड़े प्रसन्न होते थे।

हिन्दुसूर्य उदयपुर नरेश महाराणा श्रीभोपालसिंहजी के आवाहन और स्थलाधीश महान्त श्रीगंगादासजी की विनीत प्रार्थना पर विक्रम सम्वत् १९९४ वैशाख शु० ३ को भूतपूर्व आचार्यश्री का उदयपुर में पादार्पण हुआ। आपकी समारोहपूर्ण यह एक आदर्श यात्रा हुई थी। पं० श्रीअमोलकरामजी शास्त्री, पं० श्रीवैष्णवदासजी शास्त्री, पं० श्रीगणपतिजी शास्त्री, अ० भा० श्रीनिम्बार्क महासभा के महामन्त्री श्रीनन्दकुमारदासजी ब्रह्मचारी तथा श्रीदामोदर स्वामी की रासमण्डली एवं अधिकारी श्रीमनोहरदासजी आदि वृन्दावनस्थ परिकर भी साथ था निकट भविष्य में आने वाले कुम्भ अवसर पर आचार्यश्री के वृन्दावन में पादार्पण का प्रस्ताव उदयपुर में ही पारित हुआ। महाराणा साहब ने इसका हार्दिक अनुमोदन

किया और सेवा-शुश्रूषा की भी आपने अभ्यर्थना की । आचार्यश्री की अत्यन्त वृद्धावस्था थी, भावी उत्तराधिकारी मनोनीत नहीं किया था, जो मनोनीत किये थे, दैव उनके अनुकूल नहीं था, वस्तुतः वे इस पद के योग्य नहीं थे । सम्प्रदाय के विशिष्ट महन्त-सन्त और सेवकगण इसलिये चिन्तित थे । आतुरतापूर्वक आचार्यश्री से निवेदन करते रहते थे, उस समय आचार्यपीठ के प्रबन्धक अधिकारी भी नहीं रहे, अतः कुम्भ अवसर पर वृन्दावन यात्रा के सम्बन्ध में संकल्प विकल्प चल रहा था । दैवयोग से निम्बार्क महासभा के कार्यकर्ता पं० श्रीव्रजवल्लभशरणजी आचार्यश्री के दर्शनार्थ मार्गशीर्ष मास में आचार्यपीठ पहुँचे, आचार्यश्री बड़े प्रसन्न हुए, विचार विमर्श के अनन्तर आचार्यश्री के अनुरोधपूर्ण आदेश से आप ठहरे और वृन्दावन-यात्रा में आचार्यश्री के साथ ही रहे । कुम्भ पर्व सानन्द सम्पन्न हुआ । उसी समय सभी महन्त-सन्तों के अनुरोध से आचार्यश्री ने पं० श्रीलाड़िलीशरणजी और श्रीनरहरिदासजी की अधिकारी पद पर नियुक्ति की ओर भावी उत्तराधिकारी भी सोच-समझकर जहाँ तक हो शीघ्र ही नियुक्त किया जाय यह सर्वसम्मति से निश्चित हुआ ।

दो वर्ष (१९९५-९६) अकालों की स्थिति और दोनों अधिकारियों के अनमेल के कारण सफलता नहीं मिल सकी । वि० सं० १९९७ वैशाख शु० १ को आचार्यश्री ने पं० श्रीव्रजवल्लभशरणजी को अधिकारी पद पर नियुक्त किया, उस समय उदयपुर महान्तजी के आदेशानुसार समय-समय पर वियोगीविश्वेश्वरजी भी आचार्यपीठ आते-जाते थे--विचार-विमर्श होता था, सभी ने हमारे चरित्र नायक ११ वर्षीय बालक चि० रतनलाल को आचार्यपीठ के भावी उत्तराधिकारी पद की नियुक्ति का प्रस्ताव आचार्यश्री के समक्ष प्रस्तुत किया, इस प्रस्ताव से किशनगढ़ राज्य के दीवान पंचौली श्री केशरीसिंहजी भी सहमत थे, तब आपकी जन्म कुंडली देख, प्रतिभा सम्पन्न जान आपके माता-पिता से सत्परामर्श कर विक्रम सं० १९९७ के आषाढ शुक्ल २ (श्रीरथयात्रा) दिनाङ्क ७ जुलाई सन् १९४० ईस्वी में उक्त आचार्यश्री ने आपको विधि-विधानपूर्वक पंच संस्कार युक्त विरक्त वैष्णवी दीक्षा प्रदान कर युवराज पद पर नियुक्त कर दिया तथा आपके रतनलाल नाम को परिवर्तित कर श्रीराधासर्वेश्वरशरण नाम से आपको सम्बोधित किया । आपकी प्रारम्भिक संस्कृत शिक्षा आरम्भ करा दी गई । उससे पूर्व आपने राजकीय स्थानीय प्राथमिकशाला में चतुर्थ कक्षा उत्तीर्ण कर ली थी । कुछ समय तक आपने निम्बार्कतीर्थ के व्यास श्रीबजरंगलालजी से भी अध्ययन किया था,

तत्पश्चात् आपके अध्यापनार्थ विरक्त वैष्णव ब्रह्मचारी पण्डित श्रीलाड़िलीशरणजी काव्यतीर्थ को नियुक्त किया जो कि बड़े श्री श्रीजी महाराज के ही कृपापात्र (शिष्य) थे ।

श्रीआचार्यपीठासीन--

विक्रम संवत् २००० दो हजार में अपने श्रीगुरुदेव के गोलोक धाम पधारने पर ज्येष्ठ शुक्ल २ दिनांक ५ जून सन् १९४३ में १४ वर्ष की अवस्था में ही आप श्रीनिम्बार्काचार्य पीठासीन हुये । उस समय सर्वसम्मति से श्रीसर्वेश्वर संघ नामक एक संस्था की स्थापना हुई और उसे किशनगढ स्टेट से रजिस्टर्ड भी करवा लिया गया । उसके सभापति व्रजविदेही चतुः सम्प्रदाय के श्रीमहान्त धनञ्जयदासजी (श्रीकाठियाजी) महाराज वेदान्त न्याय भूषण तर्क-तर्क तीर्थ-व्याकरणतीर्थ श्रीनिम्बार्कश्रिम, श्रीधाम वृन्दावन और अधिकारी श्रीलाडिलीशरणजी न्याय-व्याकरण-काव्यतीर्थ निर्वाचित हुये । आपकी नाबालिकी के कारण भूतपूर्व श्री श्रीजी महाराज ने पीठप्रबन्धार्थ षड्वर्षीय एक ट्रस्ट भी नियुक्त कर दिया था-- उसमें श्रीमहान्त श्रीगङ्गादासजी महाराज स्थलाधीश उदयपुर, महान्त श्रीराधिकादासजी महाराज किशनगढ-रैनवाल (जयपुर) एवं जोधपुर राज्यान्तर्गत खेजड़ला ठिकाने के ठाकुर साहब श्रीभैंरोसिंहजी आदि महानुभावों के नाम थे । इन ट्रस्टियों की देख-रेख में वियोगी विश्वेश्वरजी, श्रीनरहरिदासजी तथा श्रीलाडिलीशरणजी इन अधिकारी त्रय महानुभावों एवं वयोवृद्ध पु० श्रीरघुनाथदासजी, पु० श्रीसर्वेश्वरदासजी (चोथूबाबा) पं० श्रीदेवकीनन्दनजी, श्रीश्यामसुन्दरदासजी (बाबूजी) पु० श्रीबालकदासजी प्रभृति द्वारा पीठ का कार्य सञ्चालन सुचारु रूप से चलने लगा । ६ मास के पश्चात् दैवयोगवशात् अ० पं० श्रीलाडिलीशरणजी वृन्दावन से अस्वस्थावस्था में आचार्यपीठ (सलेमाबाद) आ गये और गहन चिकित्सोपरान्त भी वे गोलोकवासी हो गये तब अ० श्रीव्रजवल्लभशरणजी आचार्यपीठ से वृन्दावन आकर तत्रत्य व्यवस्था में निर्धारित हो गये ।

अध्ययनकाल--

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के ट्रस्ट महानुभाव तथा अधिकारी वर्ग के परस्पर सत्परामर्शानुसार आपने श्री श्रीजी की बड़ी कुञ्ज वृन्दावन में ही निवास करते हुये अध्ययन किया तत्पश्चात् श्रीमहान्त श्रीधनञ्जदासजी महाराज (श्रीकाठियाजी) की देख-रेख में मन्दिर श्रीदावानल विहारी (दावानलकुण्ड-वृन्दावन) में निवास करते हुए पं० श्रीलाड़िलीशरणजी, अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी, श्रीवैष्णवदासजी

श्रीवृन्दावन में अध्ययन के समय आचार्यश्री
वि.सं. 2001, आय 15 वर्ष

आचार्यपीठाभिषेक के समय आचार्यश्री
वि.सं. 2000, आय 14 वर्ष

शास्त्री, श्रीरासविहारीजी गोस्वामी व्याकरण साहित्याचार्य तथा पं० श्रीसोहनलालजी चतुर्वेदी व्याकरणाचार्य प्रभृति महानुभावों से व्याकरण, न्याय-वेदान्तादि का विधिवत् अध्ययन किया। श्रीआचार्यपीठासीन होने से पूर्व नौ वर्ष की अल्पायु में भी स्वयं के पितृचरण पं० श्रीरामनाथजी शर्मा गौड़ एवं पुजारी श्रीकिशनदासजी के संरक्षकत्व में श्रीवृन्दावन धामस्थ राजकीय पाठशाला में द्वितीय कक्षा पर्यन्त अध्ययन किया। श्रीधामस्थ षडरोना वाली कुञ्ज के निकट बजाजा की स्कूल में ही आपश्री का यह अध्ययन सम्पन्न हुआ था।

पीठासीन होने पर श्रीधाम में निवास करते समय अध्ययन काल में आपकी परिचर्या में वहाँ महात्मा श्रीगोपालदासजी, पु० श्रीबालकदासजी, पु० श्रीदम्पतिशरणजी, महान्त श्रीरामकृष्णदासजी कामवन, राधावल्लभजी शर्मा गौड़, रसोईया लाडिलीशरणजी शर्मा, ब्रजवासी श्रीप्यारेलालजी शर्मा, गोपालशरण पर्वतीय तथा कुछ समय के लिये बाबा गोमतीदासजी भी थे।

इस प्रकार वि० सं० २००० से वि० सं० २००४ पर्यन्त अर्थात् सन् १९४३ से १९४७ तक श्रीधाम वृन्दावन में ही आपश्री का अध्ययन काल व्यतीत हुआ।

अजमेर में शुभागमन--

वृन्दावन स्थित इस अध्ययन काल के भीतर ही वि० सं० २००१ वैशाख मास में अजमेर के भक्तजनों की विनीत प्रार्थना पर अजमेर के नवीन श्रीलक्ष्मीनारायण मन्दिर स्थान पट्टी कटला की प्रतिष्ठा महोत्सव पर श्रीवृन्दावन से ही आपश्री का अजमेर में पादार्पण हुआ। श्रीनिम्बार्काचार्यपीठासीन होने के पश्चात् आचार्य पदेन अजमेर में पहली बार आपका शुभागमन होने से भक्तजनों ने हर्षोल्लास पूर्वक भव्य स्वागत एवं विशाल समारोह के साथ आपकी शोभायात्रा का आयोजन किया था। इस अवसर पर भक्तप्रवर सेठ श्रीरतनलालजी चोधरी (अग्रवाल) के घर पर उनकी भावनानुसार बड़े समारोह पूर्वक पधरावनी का आयोजन सोल्लास सम्पन्न हुआ। इस आयोजन में आचार्यपीठ के अ० श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी, अ० श्री नरहरिदासजी, पु० श्रीबालकदासजी तथा महन्त श्रीराधिकादासजी (रैनवाल), महन्त श्रीमोहनदासजी (लूणवा), श्रीप्रेमदासजी काठिया (वृन्दावन), श्रीसर्वेश्वरदासजी (वृन्दावन) प्रभृति श्रीहरिवल्लभदासजी (रैनवाल) आदि अनेक महानुभाव भी उपस्थित थे।

कुरुक्षेत्र के साधु सम्मेलन में पादार्पण--

इस अध्ययन काल की अवधि में ही विक्रम सम्वत् २००१ के श्रावण मास में कुरुक्षेत्र में होने वाले सूर्य सहस्र रश्मि महायाग के शुभावसर पर आयोजित अखिल भारतीय साधु सम्मेलन में श्रीवृन्दावन से पधार कर सर्व सम्मति से आपने सभापति पद को समलंकृत किया । उस समय अनन्त श्रीसमलंकृत जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य श्रीभारती कृष्णतीर्थजी महाराज श्रीगोवर्धनपीठाधीश्वरपुरी का भी पादार्पण हुआ था । इस प्रकार आपको अध्यक्ष पद पर देखकर जगद्गुरु श्रीशंकराचार्यजी ने अपने भाषण में सम्मान पूर्वक इन शब्दों में कहा कि-आज हमें बड़ा ही गौरव है कि हम अपने इस साधु समाज के बीच जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यजी को इस बाल्यकालिक स्वल्पावस्था में ही अध्यक्ष पद पर देख रहे हैं । आप लोग अवस्था पर कोई विचार न करें-तुलसी पत्र या शालग्राम का श्रीविग्रह छोटा हो या बड़ा, किन्तु उसके महत्व में कोई अन्तर नहीं आता ।

इसी शुभावसर पर आपके शिविर में एक दिन विद्वत्सभा का आयोजन भी रखा गया था, जिसमें जयपुर महाराजा संस्कृत कालेज के अध्यक्ष महामहोपाध्याय पं० श्रीगिरधरजी शर्मा चतुर्वेदी, पं० श्रीअखिलानन्दजी कविरत्न अनूप शहर, शास्त्रार्थ महारथी पं० श्रीमाधवाचार्यजी दिल्ली प्रभृति अनेक विद्वद्वृन्द सम्मिलित थे । सभा समारोह के अन्त में समुपस्थित सभी विद्वानों का श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ की ओर से (आपश्री द्वारा ही) प्रसाद, वस्त्र एवं मुद्रा (दक्षिणा से) सत्कार किया गया ।

सर्वप्रथम वृन्दावन के कुम्भ पर्व पर पादार्पण--

विक्रम सम्वत् २००६ के फाल्गुन मास में सर्वप्रथम आपका श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित श्रीधाम वृन्दावन के कुम्भ पर्व पर पादार्पण हुआ था । सर्वप्रथम श्रीनारदटीला (मथुरा) पर दर्शनोपरान्त आपश्री की विशाल शोभायात्रा मथुरा के प्रधान बाजार में बग्गी में विराजित होकर समायोजित हुई । श्रीविहारीजी का बगीचा (वृन्दावन) पधारना हुआ । यहाँ वयोवृद्ध महन्त श्रीदम्पतिशरणजी ने आचार्यश्री की बड़े उत्साह पूर्वक पधरावनी कराई एवं तदुपरान्त श्रीविहारीजी के बगीचा से बैण्डवाद्य, नौबत-निशान पट्टेबाजी, छड़ी, चँवर, छत्र, मसाल आदि के साथ भगवन्नाम संकीर्तन करते हुए आपकी बड़े समारोह पूर्वक पदाति शोभायात्रा श्रीधाम के मुख्य-मुख्य स्थानों में होती हुई--यमुना पुलिन में जहाँ शिविर लगा हुआ था सभास्थल (पंडाल) में पहुँच कर एक सभा के रूप में परिणित हो गई ।

श्रीवृन्दावन कुम्भावसर के समय आचार्यश्री
वि.सं. 2006, आयु 20 वर्ष

समागत विद्वानों के प्रवचन एवं आचार्यश्री के सदुपदेश श्रवण कर भावुक भक्तजन भाव विभोर हो उठे थे ।

प्रारम्भ से कुम्भ की समाप्ति पर्यन्त श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पञ्चकालीन सेवा, अखण्ड हरिनाम संकीर्तन, वैष्णव विद्वानों द्वारा श्रीगोपाल मन्त्रराज के जाप, श्रीगोपाल महायाग, इन पंक्तियों के लेखक (पं० गोविन्ददास सन्त) द्वारा श्रीमद्भागवत सप्ताह पारायण, वैष्णव (सन्त) सेवा और रात्रि में प्रतिदिन प्रवचन तथा श्रीरासलीलानुकरण इस शुभावसर पर एक दिन व्रजसेवा समिति के विशाल पण्डाल में बाबा श्रीमाधुरीशरणजी के संयोजकत्व में कई एक रास मण्डलियों द्वारा महारास का भी वृहद् रूप में आयोजन था ।

कुम्भ के बाद संक्षिप्त-व्रजयात्रा--

कुम्भ समाप्ति पर बाबा श्रीमाधुरीशरणजी, ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी-मन्त्री श्रीनिम्बार्क महासभा, सेठ श्रीरतनलालजी बेरीवाले, सेठ श्रीरामजीलालजी वेरीवाले आदि कतिपय महानुभावों ने आचार्यश्री से संक्षिप्त व्रजयात्रा के लिये भी निवेदन किया, एतदर्थ उसी समय कार द्वारा आचार्यश्री ने जहाँ-जहाँ कार पहुँच सकी वहाँ-वहाँ के स्थलों का दर्शन एवं अवलोकनार्थ पधार कर दर्शन किये, साथ में श्रीमहान्त श्रीगङ्गादासजी उदयपुर, अधिकारी श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी, आदि तीनों अधिकारी वृन्द ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी तथा अनेक विद्वान् सन्त-महान्त वृन्द आदि कई महानुभाव थे ।

यही उपर्युक्त विचार कालान्तर में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से अनेक भक्तों द्वारा प्रस्तावित होता हुआ वि० सं० २०२६ के माघ में वृहद् रूप से फलीभूत हुआ ।

पूर्वाचार्यों द्वारा-जयपुर छोड़ने के ८५ वर्ष पश्चात्
आपश्री का जयपुर में पादार्पण-

वि० सं० २००६ के वृन्दावनीय कुम्भ में जब आपश्री का पादार्पण हुआ तब उसमें जयपुर के कई एक भक्तजन सम्मिलित हुये थे । उस समय सबकी यही इच्छा हुई कि जयपुर में भी आपश्री का अब इसी प्रकार पादार्पण हो । परन्तु आचार्यश्री से निवेदन करने का किसी का भी साहस नहीं हो रहा था, कारण यह था कि आपके पूर्वाचार्यों द्वारा जयपुर त्याग दिया गया था, अब आप कैसे स्वीकार करेंगे । अन्त में जयपुर के ही भक्त रँगीलीशरण (छगनलाल बजाज चौमूवाले)

और उनके पुत्र मोहनलाल इन दोनों पिता-पुत्र ने साहस करके आचार्यश्री की सेवा में जयपुर पधारने का प्रस्ताव प्रस्तुत कर ही दिया । इस पर आचार्यश्री ने कहा कि पीठ के अधिकारी और वृन्दावन के वयोवृद्ध स्वसाम्प्रदायी महान्त-सन्त इस विषय पर विचार करके जैसा भी निश्चय करें, वही किया जाय ।

इस पर पीठ के अधिकारी वर्ग तथा पं० श्रीकिशोरदासजी वंशीवट आदि वयोवृद्धों ने निश्चय किया कि--अब सभी राज्य प्रजातन्त्र में विलीन हो चुके हैं- अतः जयपुर की जनता का प्रार्थना पत्र आना चाहिये । इस पर भक्तप्रवर श्रीरंगीलीशरण (छगनलाल) बजाज कमर कसकर पीछे पड़ गये । न रात गिनी न दिन देखा, न शीत की परवाह की और न कड़कड़ाती धूप से ही डरे । जयपुर से वृन्दावन, वृन्दावन से निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) कई बार फिरे, किशनगढ से निम्बार्कतीर्थ तक पैदल आने-जाने का भी साहस किया । जयपुरस्थ शीर्षस्थ विद्वज्जनों, सन्त-महान्तों एवं विशिष्ट महानुभावों तथा हजारों नर-नारियों के हस्ताक्षरों से युक्त जयपुर की जनता का प्रार्थना-पत्र लाकर श्रीचरणों में समर्पित किया । विचार-विमर्श कारिणी समिति को भी इस पर अनुमोदन करना पड़ा । तदुपरान्त भी आचार्यश्री ने कहा कि पूर्वाचार्य श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने जयपुर नरेश श्रीरामसिंहजी महाराज के वैष्णवाचार्यों को भस्म के त्रिपुण्ड धारण का अमर्यादित दुराग्रह पर आपने जयपुर का परित्याग कर दिया था जो तीन पीढियों से जयपुर का सम्बन्ध विच्छेद किया हुआ था । अतः आपश्री ने इसका निषेध कर दिया । अ० श्रीव्रजवल्लभशरणजी के यह कहने पर कि श्रीसर्वेश्वर प्रभु की यदि आज्ञा मिल जाय तो स्वीकृति होनी ही चाहिये और वह स्वीकृति इस रूप में ली जाय । निश्चित हुआ कि दो कागज की चिटों में एक पर जयपुर जाना चाहिए दूसरी पर जयपुर नहीं जाना चाहिए लिखकर दोनों चिटों की गोली बनाकर श्रीसर्वेश्वर प्रभु के सामने रखी जायें तब स्वयं आचार्यश्री द्वारा ही वह क्रमशः तीन बार गोली उठवाई गई तीनों बार में ही जयपुर जाना चाहिये यही आया, तब दृढ निश्चय हो गया कि भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की ही ऐसी आज्ञा है। तब आचार्यश्री ने स्वीकृति प्रदान की । आचार्यचरणों की स्वीकृति मिलते ही श्रीरंगीलीशरणजी कृत-कृत्य हो गये । समस्त खर्चे का भार प्रभु कृपा से उन्होंने अपने ऊपर ले लिया।

वि० सं० २००७ में आषाढ पुरुषोत्तम (अधिक) मास था, आगे स्थान आदि की प्रबन्ध व्यवस्था देखने के लिये अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी, अधिकारी श्रीनरहरिदासजी तथा योगमाया बाबा श्रीमाधुरीशरणजी इन पंक्तियों का लेखक

(पीठ प्रचारमन्त्री पं० गोविन्ददास सन्त) आदि की नियुक्ति हुई । उपर्युक्त महानुभाव कई बार जयपुर पहुँच कर सभी व्यवस्थाओं के सम्बन्ध में जयपुर के नागरिकों के साथ विचार-विमर्श किया । उसी समय श्रीरंगीलीशरणजी कानोता ठाकुर साहब के गढ के बुर्ज में रहा करते थे ।

दाँता हाउस स्थान ठहरने के लिये निश्चित हुआ । अखण्ड भगवन्नाम संकीर्तन, भागवत सप्ताह, भक्तमाल कथा आदि कार्यक्रमों के सूचना-पत्र छप गये और २२ दिन का कार्यक्रम निर्धारित हो गया ।

द्वितीय आषाढ कृष्णा द्वादशी को आचार्यश्री का ट्रेन (रेलगाड़ी) द्वारा जयपुर पादार्पण हुआ । स्टेशन पर सहस्रों नर-नारी अगवानी (स्वागत) हेतु मालायें लिये प्लेटफार्म पर खड़े हुये थे । फूलों की वर्षा से प्लेटफार्म और मुसाफिरखाना (प्रतीक्षालय) रंग-बिरंगी बिछायत के रूप में सुशोभित हो गया । ट्रेन से ज्यों ही आचार्यश्री उतरने लगे उस समय तत्काल सर्वप्रथम वृन्दावनस्थ रासमण्डली के स्वामी श्रीरामजी के लघु भ्राता श्रीघनश्यामजी जो स्वयं श्रीठाकुरजी की स्वरुपाई में थे जिन्होंने आचार्यश्री को पुष्पमाल्यार्पण कर सबको चकित कर दिया । दिन के ११ बजे से शोभायात्रा प्रारम्भ हुई जो प्रमुख बाजारों से होती हुई सायंकाल ८ बजे के लगभग दाँता हाउस पहुँची । सहस्रों स्थलों पर आचार्यश्री की आरतियाँ उतारी गई । अनेक संकीर्तन मण्डलियाँ, विविध बैण्डबाजे, सन्त-महन्त-महात्मा, विद्वान् संकीर्तन तथा जय ध्वनि के साथ असंख्य भक्तजन एवं भक्तिमती मातायें हर्षोल्लास पूर्वक सुशोभित हो रही थी । इस शोभायात्रा में जयपुर के सभी सम्प्रदायों के वैष्णव सम्मिलित थे । सभी प्रेमविभोर हो रहे थे । वस्तुतः इतनी लम्बी शोभायात्रा किसी भी धर्माचार्य की इन वर्षों में यहाँ जयपुर में आयोजित नहीं हुई थी ।

निर्धारित क्रम के अनुसार सुन्दर कार्यक्रम चलता रहा । जयपुर के भक्तों ने हृदय खोलकर अपने-अपने मकानों पर पधरावनियाँ करवाई । आखिरी पधरावनी श्रीरंगीलीशरणजी (छगनलालजी) मोहनलाल बजाज के यहाँ उसी दाँता हाउस में हुई । चरण पूजा के पश्चात् श्रीरंगीलीशरणजी ने अपना समस्त घर-द्वार दुकान आदि सब की चाबियाँ लेकर आचार्यश्री के चरणों में रख दीं । दर्शकजन चकित हो गये । ऐसी भेंट ८५ वर्ष पूर्व जयपुर त्यागने के बाद पीसांगण नगर में हुई थी । पीसांगण दरबार ने अपनी एक सवा लाख वार्षिक आय के राज्य का पट्टा लिखकर जगद्‌गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज के चरणों में यह कहकर अर्पित कर दिया था--जयपुर राज्य की ओर से जो सवालाख रुपये की वार्षिक सेवा होती थी, उसकी कमी हुई है अतः उसकी पूर्ति पीसांगण ठिकाने

की पूरी जागीरी से हो जाय । श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा में यह अङ्गीकार की जाय। श्री श्रीजी श्रीगोपीश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने पीसांगण के राजाजी को धन्यवाद देते हुये कहा-राजन् ! श्रीसर्वेश्वर प्रभु की चारों दिशाएँ जागीर में हैं, कुछ भी कमी नहीं । पीसांगण की जागीरी पीसांगण राज-परिकर के लिये है, उसी कार्य में उपयोग किया जाय । किन्तु जब राजाजी ने नहीं ही माना, तब आचार्यश्री ने आज्ञा दी--अच्छा आपकी भेंट स्वीकार की गई, किन्तु भगवान् की प्रसादी प्राप्त करना भक्त का परम कर्तव्य है । श्रीसर्वेश्वर प्रभु की प्रसादी के रूप में पीसांगण राज्य दिया जा रहा है इसकी आय में से केवल दो सौ रुपये वार्षिक आचार्यपीठ भेजते रहें । गुरुप्रदत्त भगवत्प्रसादी के लिये शिष्य को अस्वीकार नहीं करना चाहिये।

आज जयपुर में आचार्यश्री के पुनः पादार्पण के अवसर पर भी भक्त श्रीरंगीलीशरणजी ने वही दृश्य उपस्थित कर दिया था । प्रसादी रूप में आचार्यश्री ने उनको भक्त-भूषण की पदवी के साथ-साथ चाबियाँ पुनः प्रदान कीं, तब उन्होंने स्वीकार कर लिया ।

यद्यपि ८५ वर्ष पश्चात् पुनः जयपुर में आचार्यश्री के पादार्पण होने का यह श्रेय जयपुर निवासी सभी भक्तजनों को है, तथापि लगन, परिश्रम और अर्थ व्यय एवं शारीरिक श्रम ये सब भक्त-भूषण श्रीरंगीलीशरणजी का था अतः इस आयोजन में उनका नाम विशेष उल्लेखनीय है । उसके पश्चात् तो आचार्यश्री का जयपुर में कई बार समारोह पूर्वक पादार्पण हुआ और होता ही रहता है । यहाँ के भक्तों की भावनाएँ आदर्श एवं अनुकरणीय हैं । इसी से कई सज्जन जयपुर की श्रीवृन्दावन से तुलना करते हैं ।

कानपुर सार्वभौम साधु मण्डल के विशेषाधिवेशन पर आपश्री का पादार्पण-

विक्रम सम्वत् २००९ के कार्तिक कृष्णपक्ष में स्वामी श्रीनारदानन्दजी एवं श्रीभास्करानन्दजी द्वारा आयोजित सार्वभौम साधु-मण्डल के विशेषाधिवेशन पर आपश्री का कानपुर पधारना हुआ । आपके साथ श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के तीनों अधिकारी वृन्द तथा वृन्दावन से व्रजविदेही चतुःसम्प्रदाय के श्रीमहान्त श्रीधनञ्जयदासजी काठिया तर्क-तर्कतीर्थ, अ. भा. श्रीनिम्बार्क महासभा के प्रधानमन्त्री ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी, बाबा श्री माधुरीशरणजी वन-विहार, वर्तमान अली माधुरी कुटी (रमणरेती) श्रीठाकुरदासजी विहारी जी का बगीचा, विद्वद्वरेण्य पं. श्रीभागीरथ झा न्याय-वेदान्ताचार्य आदि महानुभाव थे ।

शोभायात्रा के शुभावसर पर वायुयान द्वारा की गई पुष्पवृष्टि को देखकर जनसमुदाय का मन हर्षोल्लसित हो रहा था। इस अवसर पर विशेष रूप से सुसज्जित राजकीय मार्ग में भक्तों द्वारा पद-पद पर नीराजन एवं ऋतु अनुसार भावनापूर्ण सेवा सम्पादन की गई थी।

इस आयोजन में उत्तर-प्रदेश के मुख्यमन्त्री श्रीगोविन्दवल्लभजी पंत तथा राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ के संचालक गुरुजी श्रीगोलवलकरजी, स्वामी श्रीअखण्डानन्दजी महाराज एवं रामायणी श्रीप्रेमदासजी आदि महानुभावों का भी पधारना हुआ था।

इस पंचदिवसीय वृहत्सम्मेलन में एक दिन अर्थात् कार्तिक कृ० दशमी सोमवार के दिन आपश्री के सभापतित्व में समागत सन्त-महान्त एवं विद्वानों के प्रवचन तथा सभापति पद से दिये गये आपश्री के शुभाशीर्वादात्मक सन्देश को श्रवण कर इस अनुपम सत्संग समारोह का सभी महानुभावों ने अपूर्व लाभ लिया।

मल्हारगढ़ के श्रीविष्णुयाग में पादार्पण--

इसी वर्ष माघ शुक्ल पक्ष में मल्हारगढ जि० गुना (म० प्र०) के महान्त श्रीरामगोविन्ददासजी द्वारा आयोजित श्रीविष्णु-याग के शुभावसर पर आपश्री का श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित मल्हारगढ पधारना हुआ। इस आयोजन पर चारों ओर के सन्त-महान्त एवं मठाधीशों का शुभागमन हुआ था। यह विशाल याग अनेक याज्ञिक विद्वानों के साथ वाराणसी के सुप्रसिद्ध विद्वान् पं० श्रीदौलतरामजी गौड़ वेदाचार्य के आचार्यत्व में सुसम्पन्न हुआ था, जो ग्राम से दूर बाहर एकान्त स्थल परम पावन वेत्रवती के (पर्वत मालाओं से घिरे हुये सुरम्य) महुठा घाट पर आयोजित था। भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पञ्चकालीन सेवा के दर्शन, सभा मंच पर समागत सन्त-महान्त एवं विद्वानों के प्रवचन तथा आचार्यश्री के सदुपदेशों से परम प्रभावित हो दर्शकगण श्रोताओं की अपार भीड़ लगी रहती थी। एक ओर सुदूर तक साधु-सन्त, महात्मा एवं महन्त, मठाधीशों के तम्बू, डेरा तथा रावटियाँ और भक्तों के आवास स्थान और दूसरी ओर व्यापारियों की दुकानों का दोनों ओर बाजार तथा रासलीला, रामलीला का भी सुन्दर आयोजन था।

इस शुभावसर पर आपश्री के तत्त्वावधान में ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमार-शरणजी के सुप्रयास से अ० भा० श्रीनिम्बार्क महासभा वृन्दावन एवं अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठस्थ श्रीसर्वेश्वर संघ का विशेषाधिवेशन भी सुसम्पन्न हुआ।

वीना स्थान के महान्त श्रीभगवानदासजी की विशेष प्रार्थना पर आपश्री का यहाँ वेत्रवती पार कर बीना पधारना हुआ, वहाँ सहस्रों की संख्या में भक्तजनों ने आपश्री का स्वागत किया और शोभायात्रा में सम्मिलित होने हेतु उपस्थित रहे। स्थान में श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पंचकालीन सेवा सुसम्पन्न हुई और रात्रि में विद्वानों के प्रवचन तथा आचार्यश्रीचरणों के सदुपदेश होकर दूसरे दिन प्रातःकाल वहाँ से प्रस्थान कर ललितपुर श्रीमहान्तजी के यहाँ एक रात्रि ठहर कर वहाँ से तालबहेट के मन्दिर में सेवा हुई, वहाँ सायंकाल इण्टर कालेज के अध्यापक वर्ग एवं सहस्रों छात्रों द्वारा कालेज में ही आयोजित एक सभा में आपश्री के द्वारा शुभाशीर्वादात्मक मार्ग-दर्शन संप्राप्त किया । तदनन्तर प्रातः वहाँ से दतिया पधारना हुआ। दतिया स्थान के महान्त श्रीसर्वेश्वरदासजी ने अनेक सन्त-महन्तों एवं भक्तजनों को साथ लेकर आपश्री का स्वागत किया और विशाल शोभायात्रा के साथ मन्दिर में विराजमान कर चरण-पूजन किया । रात्रि में सदुपदेश हुये । एक दो रोज विराजना हुआ । दतिया के अन्य कई एक मन्दिरों में भी आचार्यश्री का पादार्पण हुआ ।

दतिया से झाँसी पधारना हुआ । वहाँ श्रीकुञ्जविहारीजी के मन्दिर में विराजना हुआ यहाँ के महन्त श्रीछवीलीदासजी ने अपने भक्तों के साथ आपश्री का स्वागत सत्कार कर रात्रि में सत्संग का अनुपम लाभ लिया । दूसरे दिन स्थानीय वैद्यनाथ आयुर्वेद भवन के संचालक वैद्यप्रवर श्रीरामनारायणजी आयुर्वेदाचार्य की प्रार्थनानुसार आयुर्वेद भवन में भी पादार्पण हुआ । चरण-पूजनादि के पश्चात् श्रीवैद्यराजजी ने लगभग एक सौ से अधिक ग्रन्थ एवं औषधियाँ समर्पण कर निर्माणशाला का अवलोकन कराया ।

एक दिन झाँसी से आपश्री का भगवद्दर्शनार्थ ओरछा भी पधारना हुआ। वहाँ युगलकिशोर भगवान् श्रीसीतारामजी की परम मनोहर दिव्य झाँकी के दर्शन कर तथा मन्दिर की निर्माणशाला का अवलोकन कर आचार्यश्री अत्यन्त प्रमुदित हुए ।

झाँसी से प्रस्थान कर ट्रेन द्वारा आगरा पहुँचना हुआ । प्रातःकाल आगरा छावनी उतरे । भगवत्सेवार्थ वहाँ से दो माइल की दूरी पर एकान्त में जल जंगल की सुविधा देख एक कूप पर भगवान् के राजभोग पर्यन्त की सेवा सुसम्पन्न की । प्रसाद पाकर वहाँ से वापिस लौटते समय कुछ ही आगे चले होंगे कि पीछे से बाबा ठहरो ! बाबा ठहरो ! ऐसी आवाज देते हुये ५-७ व्यक्ति दौड़े चले आ रहे हैं- उनमें आगे जो एक व्यक्ति था, उसका काला वर्ण मोटा शरीर, केवल बनियान

पहिने और तहमद लगाये हुए था, उसकी आँखों से आँसू बह रहे थे और भगे आने के कारण शरीर के कपड़े पसीने से गीले हो रहे थे । आचार्यश्रीचरणों के सामने आकर एकदम गिरते हुए दण्डवत् प्रणाम किया । आचार्यश्री के पूछने पर साथ वाले व्यक्तियों ने कहा--महाराज ! यह जाति का मुसलमान है, और बड़ा ही भक्त है, जिस समय हम लोग दर्शन करने आये थे उस समय यह बाहर चला गया था आने पर इसे मालुम हुआ कि इस प्रकार सन्त आये हुए थे, इसने कहा देखो इस गाँव में मैं ही एक ऐसा अभागा रहा जो दर्शन नहीं कर सका तब दौड़ता हुआ दर्शन करने को आया है । दतिया महान्त श्रीसर्वेश्वरदासजी भी आपश्री के साथ ही थे सभी ने देखकर उसकी बड़ी प्रशंसा की और कहा कि देखो सन्तों के प्रति इनकी कितनी श्रद्धा और भावना है । और उसे भगवत्प्रसाद तथा उत्तरीय पीत वस्त्र प्रदान किया ।

स्थल-सूर्यपोल उदयपुर के आयोजन में पादार्पण--

विक्रम संवत् २०१० के वैशाख शु० ३ (अक्षय) तृतीया को मेवाड़ मण्डलेश्वर स्थलाधीश श्रीमहान्त श्रीगङ्गादासजी द्वारा आयोजित श्रीमद्भागवत सप्ताह तथा श्रीभक्तमाल कथा प्रवचन के विशाल समारोह (विशेषाधिवेशन) पर आपश्री का उदयपुर पादार्पण हुआ । आपकी शोभायात्रा का दृश्य परम मनोहर एवं दर्शनीय था । इस शुभावसर पर तीनों अनियों के श्रीमहन्त एवं व्रजविदेही चतु:सम्प्रदाय के श्रीमहान्त श्रीधनञ्जयदासजी महाराज तर्क-तर्क तीर्थ का भी पधारना हुआ था । भक्तमाली श्रीमदनमोहनदासजी द्वारा गायन रूप में भक्तमाल की सुललित कथा का अपूर्व रस पान कर प्रेमी श्रोताजन भाव-विभोर हो जाते थे ।

इस शुभावसर पर एक दिन महाराणा श्रीभोपालसिंहजी साहब (उदयपुर नरेश) का भी पधारना हुआ और दिन भर स्थल में ही विराजना रहा ।

श्रीनिम्बार्कतीर्थ-यात्रा स्पेशल ट्रेन में भी श्रीनिम्बार्क-जयन्ती महोत्सव उदयपुर स्थल में ही हुआ था । वर्तमान महन्त श्रीमुरलीमनोहरशरणजी आयुर्वेदाचार्य ने भी उसी नियमानुसार भावनापूर्वक कई बार आचार्यश्री का पादार्पण कर विशेष समारोह पूर्वक चरण-पूजन किया है ।

प्रयाग कुम्भ में श्रीनिम्बार्क नगर की स्थापना--

विक्रम संवत् २०१० के माघ मास में श्रीप्रयागराज के कुम्भ पर्व पर अधिकारी श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी, अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी वेदान्ताचार्य तथा अधिकारी श्रीनरहरिदासजी श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के अधिकारीत्रय, ब्रह्मचारी श्रीनन्दकुमारशरणजी मन्त्री-श्रीनिम्बार्क महासभा वृन्दावन तथा बाबा श्रीमाधुरीशरणजी आदि महानुभावों के पारस्परिक पूर्ण सहयोग से श्रीनिम्बार्क-नगर की संस्थापना हुई । सरकार से भूमि ली गई, उसकेचारों ओर परिधि (हद-बन्दी) कर मध्य में विशाल सभा-स्थल (पंडाल) श्रीसर्वेश्वर प्रभु का मन्दिर, आचार्यश्री-कक्ष, रसोई-भण्डार, सन्त-सेवा सदन चारों ओर समागत सन्त-महन्तों के आवास स्थान, अ० भा० श्रीनिम्बार्क महासभा का शिविर, औषधालय, वाचनालय, तथा पूछताछ प्रधान कार्यालय आदि-आदि का निर्माण हुआ । नल-बिजली आदि सभी का प्रबन्ध कराया । तीसरी पंक्ति में चारों ओर सद्गृहस्थ भक्तजनों के आवास आदि का निर्माण हुआ । श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा सहित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी महाराज का पादार्पण हुआ । भक्तप्रवर श्रीटण्डनजी के बँगला से लगभग त्रिवेणी संगम तक ३ मील है वहाँ से प्रातः ८ बजे से आचार्यश्री की भव्य शोभायात्रा पदादि प्रारम्भ होकर दिन के ११ बजे श्रीनिम्बार्क नगर पहुँची इस शोभायात्रा में--तीनों अनी अखाड़ों के श्रीमहान्त नागा अन्य कई सन्त-महान्त छड़ी, चँवर, छत्र, वैण्डवाद्य, नौबत, निशान, पट्टेबाजी आदि के साथ तथा सद्गृहस्थ दर्शनार्थी भक्तजनों द्वारा जयघोष की तुमुल ध्वनि हो रही थी, शोभायात्रा का अद्भुत (परम मनोहर) दृश्य प्रतीत हो रहा था ।

श्रीनिम्बार्क नगर में कई भक्तजनों ने पूरे माघ मास निवास करते हुए कल्पवास व्रत किया । प्रतिदिन श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पंचकालीन सेवा, अखण्ड हरिनाम संकीर्तन, सन्त-सेवा, समागत सन्त-महान्त एवं विद्वानों के प्रवचन, आचार्यश्री के सदुपदेश, औषधालय-वाचनालय आदि पारमार्थिक सेवायें पूरे माघ मास चलकर यह आयोजन सानन्द सम्पन्न हुआ ।

आचार्यश्री के शिविर का श्रीनिम्बार्क-नगर नाम इसी कुम्भ से प्रचलित हुआ । तत्पश्चात् प्रत्येक कुम्भ पर नगर निर्माण होता आ रहा है, वह वि० सं० २०३६ के नासिक कुम्भ तक इन नगरों की संख्या १६ तक हो गई । भक्तजनों की ओर से आर्थिक सहायता एवं रसोईयाँ खूब मात्रा में आती हैं । सभी कुम्भ पर्वों पर बराबर भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं आचार्यश्री का पादार्पण होता है । प्रत्येक कुम्भ में श्रीनिम्बार्क नगर के भव्य पण्डाल में प्रातः ६ बजे से लेकर रात्रि ११ बजे

पर्यन्त मंगला, श्रृङ्गार, कथा, प्रवचन, नाम संकीर्तन, रात्रि में रासलीला, रामलीला आदि विविध कार्यक्रम निरन्तर चलते ही रहते हैं सहस्रों की संख्या में भक्तजनों की उपस्थिति रहती है । श्रीनिम्बार्क-नगर में आचार्यश्री के साथ कई एक सन्त-महान्त एवं सैकड़ों भक्त परिवार सुविधापूर्वक ठहरते हैं ।

श्रीनिम्बार्क नगर खालसा की महन्ताई भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु एवं आचार्यश्री के तत्त्वावधान में समस्त भेष की ओर से अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के अधिकारी श्रीवियोगी विश्वेश्वरजी को विगत नासिक कुम्भ के शुभावसर पर प्रदान की गई थी । एक युग अर्थात् १२ वर्ष तक आपने सुचारु रूप से श्रीनिम्बार्क नगर का कार्य संचालन किया, किन्तु १९७४ के प्रयाग कुम्भ में अस्वस्थ हो जाने पर एवं वृद्धावस्था में अधिक दौड़ धूप न होने के कारण आचार्यश्री ने सेवाभावी भक्तों की एक कुम्भ-प्रबन्ध-समिति बना दी है । इसी कुम्भ प्रबन्ध समिति के द्वारा अब सब कार्य संचालन हो रहा है और होता रहेगा ।

चित्रकूट भक्ति-सम्मेलन में पादार्पण--

विक्रम संवत् २०१२ के आश्विन मास के शुक्लपक्ष में सन्त श्रीकृपालुदासजी द्वारा आयोजित भक्ति-सम्मेलन में आपश्री का श्रीचित्रकूट भी पादार्पण हुआ । वहाँ श्रीमन्दाकिनी के परम पावन तट पर संस्थित तुमसरवाली धर्मशाला में विराजना हुआ । श्रीसर्वेश्वर प्रभु का अभिषेक दर्शन तथा पंचकालीन सेवा में दर्शनार्थी भक्तजनों की प्रतिदिन अपार भीड़ लगी ही रहती थी ।

इस वृहत्सम्मेलन में एक दिवस आश्विन शुक्ला पूर्णिमा दि० ३१-१० सन् १९५५ को आपश्री के सभापतित्व में भक्ति तत्त्व पर अनेक विद्वानों के प्रवचन हुए तथा आपश्री के शुभाशीर्वादात्मक शुभ सन्देशों से समुपस्थित सभी भक्तजनों को अनुपम मार्गदर्शन मिला ।

भक्ति-सम्मेलन सानन्द सम्पन्न होने के पश्चात् श्रीकामद गिरि परिक्रमा के अनन्तर श्रीनिम्बार्कीय चोपड़ स्थान से आपश्री ने अपने परिकर तथा अनेक सन्तों के साथ पदाति यात्रा प्रारम्भ कर स्फटिक-शिला, अनुसूया, गुप्त गोदावरी, हनुमानधारा तथा भरतकूप आदि तीर्थ स्थलों की यात्रा सुसम्पन्न की । आपके साथ इस यात्रा में पीठ के तीनों अधिकारी एवं बाबा श्रीमाधुरीशरणजी प्रभृति अनेक महानुभाव भी सम्मिलित थे ।

श्रीनिम्बार्काचार्य स्पेशल ट्रेन द्वारा तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा--

विक्रम संवत् २०१३ में भक्तप्रवर श्रीरामनिवासजी गोयल (रेल्वे दलाल एण्ड क्लेम्स एजेन्ट) माल गोदाम अजमेर के संयोजकत्व में आपश्री ने श्रीनिम्बार्काचार्य स्पेशल ट्रेन द्वारा तीनधाम सप्तपुरी की यात्रा की । यह यात्रा भाद्रपद शुक्ला दशमी को अजमेर से प्रस्थान कर मार्गशीर्ष कृष्ण पक्ष में लौटकर श्रीपुष्करराज के स्नान के अनन्तर अजमेर में आकर सानन्द सम्पन्न हुई । इस यात्रा की यह विशेषता थी कि श्राद्ध पक्ष में गया श्राद्ध, मैसूर का सुप्रसिद्ध दशहरा, रामेश्वर में शरद्-पूर्णिमा, बम्बई की दीपमालिका-अन्नकूट और उदयपुर के स्थल में श्रीनिम्बार्क जयन्ती मनाई गई ।

तीनधाम सप्तपुरी एवं मार्ग में आने वाले सभी स्थलों का परिचय, माहात्म्य, कथा, सत्संग, भगवन्नाम संकीर्तन, सन्त सेवा आदि इस स्पेशल ट्रेन की विशेषता थी । आपश्री की अधिकारी पं० श्रीव्रजवल्लभशरणजी ने आगरा में अगवानी की, रात्रि में आगरा बाजार में आपश्री के सदुपदेश श्रवण का आयोजन नागरिकों ने किया । प्रबन्धाधिकारी श्रीवियोगीविश्वेश्वरजी, अधिकारी श्रीनरहरिदासजी, पुजारी, रसोईया, भण्डारी, विद्वानों में पं० श्रीसुरति झा, पं० श्रीगोविन्ददासजी सन्त, श्रीरंगीलीशरणजी वेदान्ताचार्य, छड़ीदार आदि एवं साथ में किशनगढ रैनवाल के महान्त श्रीहरिवल्लभदासजी तथा वृन्दावन की संकीर्तन मण्डली एवं अनेक महान्त, सन्त-महात्मा थे । अजमेर, ब्यावर, किशनगढ, रेनवाल और श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के आस-पास के भक्त परिवारों से पूरी स्पेशल ट्रेन भरी हुई थी । सुख शान्तिपूर्वक यात्रा सानन्द सम्पन्न हुई ।

विक्रम संवत् २०१४ में आचार्यश्री का चला नगरस्थ श्रीगोपाल मन्दिर में पादार्पण हुआ । यह स्थान विक्रम की सोलहवीं शताब्दि के अन्त और सत्रहवीं शताब्दि के आरम्भ में श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज के शिष्य श्रीपीताम्बरदेवजी ने संस्थापित किया था । यहाँ चार सौ वर्षों में अच्छे-अच्छे सिद्ध सन्त हो चुके हैं, श्रीपीताम्बरदेवजी से ग्यारहवीं पीठिका में बजरङ्गदास (अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के अधिकारी श्रीव्रजवल्लभशरणजी) है । आपने २०१४ ज्येष्ठ शु० ९ को परम गुरु महान्त श्रीब्रह्मदासजी महाराज का मेला (भण्डारा) महोत्सव किया उसमें आचार्यश्री का समारोह पूर्वक पादार्पण हुआ । अधिकारीजी को महन्ताई प्रदान की गई । थोड़े ही दिनों बाद नीम का थाना (श्रीनिम्बार्क स्थान) की बड़ी जमात के महान्तजी का परमधाम वास हो जाने पर

पूज्य आचार्यचरण
वि. सं. 2020, आयु 34 वर्ष

उनके स्मृति-महोत्सव पर भी बड़ी जमात में पादार्पण हुआ । इधर आपश्री की ये दोनों प्रथम यात्रायें थीं ।

विक्रम सम्वत् २०१६ से २०२१ तक महाराजश्री का भारत के कई प्रदेशों में भ्रमण हुआ ।

प्रयाग कुम्भ में होने वाले विश्व हिन्दु परिषद् के महाधिवेशन में आपश्री का पादार्पण--

विक्रम सम्वत् २०२२ के माघ मास में होने वाले श्रीप्रयागराज के कुम्भावसर पर आयोजित विश्व हिन्दु परिषद् के महाधिवेशन में माघ शुक्ला प्रतिपदा शनिवार दि० २२ जनवरी सन् १९६६ के दिन इस महाधिवेशन का निमन्त्रण आने पर आपश्री का प्रयाग कुम्भ स्थित श्रीनिम्बार्क नगर से विश्व हिन्दु परिषद् के महाधिवेशन में पधारना हुआ । इस महाधिवेशन में प्राय: सभी मठों के शंकराचार्य और वैष्णवाचार्य तथा कई एक विशिष्ट-विशिष्ट विद्वानों का पधारना हुआ था, महाराणा साहब श्रीभगवतसिंहजी उदयपुर एवं धर्म सम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज भी पधारे थे । राजस्थान-विश्व हिन्दु परिषद् के संघटन मन्त्री श्री द्वारकाप्रसादजी पाटोदिया भी थे । धर्माचार्यों के सदुपदेश तथा विद्वानों के प्रवचनों से सभी समुपस्थित जन-समुदाय ने मार्गदर्शन प्राप्त किया ।

७ नवम्बर १९६६ के गोरक्षा आन्दोलन दिल्ली में पादार्पण--

विक्रम सम्वत् २०२३ के कार्तिक मास में गोरक्षा महाभियान समिति दिल्ली द्वारा आयोजित गोरक्षा आन्दोलन दिल्ली में भी आपश्री का कार्तिक कृष्णा ९ सोमवार दिनांक ७ नवम्बर सन् १९६६ को सैकड़ों सन्तों को साथ लेकर दिल्ली पादार्पण हुआ ।

इसके पूर्व आपने अपने क्षेत्र जैसे-किशनगढ, अजमेर, ब्यावर तथा जयपुर आदि कई एक नगरों में गोरक्षा हेतु भ्रमण कर प्रचुर प्रचार-प्रसार भी किया ।

इसी प्रकार अपने ही एक स्वसाम्प्रदायिक स्थान मालाधारी अखाड़ा वृन्दावन के महान्त श्रीकमलदासजी भी वहाँ से कई एक महात्माओं को साथ लेकर दिल्ली आकर अपने प्राणों का भी बलिदान दिया और सदा के लिये अपना नाम अमर कर गये ।

इस आन्दोलन में सभी मत मतान्तरों के गो-प्रेमी भक्तजन लगभग पन्द्रह लाख की संख्या में उपस्थित होकर न भूतो न भविष्यति वाली कहावत को चरितार्थ कर दिखाया था ।

गोरक्षार्थ किये जाने वाले अनशन व्रत पर गम्भीर स्थिति युक्त जगद्‌गुरु शङ्कराचार्य श्रीनिरंजनदेवतीर्थजी महाराज से मिलने हेतु श्रीगोवर्धनपीठ, पुरी में आपश्री का पादार्पण--

७ नवम्बर सन् १९६६ में दिल्ली के गोरक्षा आन्दोलन होने के पश्चात् श्रीगोवर्धनपुरी पीठाधीश्वर अनन्त श्रीसमलंकृत जगद्‌गुरु शङ्कराचार्य श्रीस्वामी निरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज के गोरक्षार्थ अनशन व्रत लेने पर उसके २१ वें ही दिन पश्चात् उनकी गम्भीर स्थिति के समाचार श्रवण कर आपश्री का उनसे मिलने हेतु पुरी पधारना हुआ । मार्गशीर्ष कृ० सोमवती अमावस्या सं० २०२३ दिनाङ्क १२ दिसम्बर का दिन था, वहाँ परस्पर मिलकर और कुशल मंगल समाचार पूछने पर। जगद्‌गुरु श्रीशंकराचार्यजी महाराज ने आचार्यश्री से कहा कि आपश्री को इतनी दूर पधारने का बड़ा कष्ट हुआ ।

आपश्री के साथ उस समय पं० श्रीमुरलीधरजी शास्त्री और श्रीनवलकिशोरजी व्यास तथा महात्मा श्रीशुकदेवदासजी संगीताचार्य भी थे ।

पुरी से लौटते हुये सम्बलपुर (उड़ीसा) में सम्वाददाताओं की एक गोष्ठी में गोरक्षा सम्बन्धी अपने विचार व्यक्त किये तथा यहाँ से नागपुर, दुर्ग अमरावती, आकोला, खाँमगाँव, धूलिया, सैन्धवा एवं इन्दौर आदि विशिष्ट नगरों में गोरक्षा पर जन-समुदाय को प्रेरणा देते हुए आपश्री का श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ पधारना हुआ । यहाँ से पुनः श्रीप्रभुदत्तजी ब्रह्मचारी के अनशन काल में उनसे गोरक्षा सम्बन्धी विशेष विचार-विमर्श करने हेतु आपश्री का श्रीधाम वृन्दावन पधारना हुआ ।

ब्यावर के गोरक्षा सम्मेलन में आपश्री का पादार्पण--

विक्रम सम्वत् २०२५ सन् १९६८ में श्रीगोवर्धनपीठाधीश्वर पुरी के शंकराचार्य जगद्‌गुरु श्रीस्वामी निरञ्जनदेवतीर्थजी महाराज ने ब्यावर (राजस्थान) में ही चातुर्मास्य किया था ।

व्रत समाप्ति पर आश्विन मास में गोरक्षा सम्मेलन का विशाल आयोजन भी रखा गया था, जिसमें धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज, शारदापीठाधीश्वर जगद्‌गुरु शङ्कराचार्य श्रीअभिनव सच्चिदानन्दतीर्थजी महाराज, ज्योतिष्पीठाधीश्वर जगद्‌गुरु शङ्कराचार्य श्रीकृष्णबोधाश्रमजी महाराज तथा अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज (आपश्री) का पधारना हुआ था ।

इन धर्माचार्यों के अतिरिक्त कई एक विशिष्ट विद्वान् तथा धर्मसंघ के पदाधिकारी एवं कार्यकर्ताओं की भी उपस्थिति थी । आश्विन कृ० ४ मंगलवार १० सितम्बर १९६८ को सभी धर्माचार्यों की एक साथ विशाल शोभायात्रा का आयोजन परम दर्शनीय था । इस आयोजन के विस्तृत वर्णन युक्त स्मारिका भी ब्यावर से मिलती है ।

व्रज चौरासी कोसीय पद यात्रा--

विक्रम सम्वत् २०२६ तदनुसार ईस्वी सन् १९७० फाल्गुन चैत्र मास में आपने तीन सौ से अधिक विरक्त वैष्णव सन्तों तथा लगभग तीन हजार सद्गृहस्थ भक्तों को साथ लेकर श्रीव्रज-चौरासी कोसीय पदाति व्रजयात्रा शास्त्रीय विधान से सम्पन्न की । यह यात्रा श्रीवृन्दावन वंशीवट से प्रारम्भ होकर पुनः वहीं आकर सानन्द सम्पन्न हुई । यात्रा करने वाले भक्तों का कहना था कि--न भूतो न भविष्यति वाली कहावत को चरितार्थ करने वाली ऐसी पदाति व्रज-यात्रा हमने तो नहीं देखी । नगर-नगर, ग्राम-ग्राम में भक्तों का उत्साह प्रेम तथा उनके द्वारा कृत स्वागत समारोह शोभायात्रा आदि का अपूर्व दृश्य था ।

अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ से प्रतिपक्ष प्रकाशित होने वाले श्रीनिम्बार्क के वर्ष ९ का विशेषाङ्क श्रीव्रजयात्रा अङ्क के नाम से प्रकाशित हुआ है, स्थान-स्थान पर लिये गये चित्रों से सुसज्जित जिसमें पूरी व्रजयात्रा का वर्णन है । इस अंक को पढने से उस समय का तत्कालीन दृश्य मानो नवीन बनकर सामने आ जाता है । व्रजयात्रा वर्णन के अतिरिक्त अनेक सन्त-महात्मा एवं विद्वानों के व्रज-महत्व पर लेख हैं, अतः यह अंक पठनीय है । इसके पढने से सब ज्ञात हो सकता है ।

इस यात्रा की विशेषता यह थी कि भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की पञ्चकालीन सेवा के दर्शन, कथा, सत्संग, नाम संकीर्तन एवं आचार्यश्री के सदुपदेश तथा रात्रि में श्रीरासलीलानुकरण और स्थान-स्थान पर आचार्यश्री की पधरावनियाँ व वैष्णव-सेवा (पंगत) होती थी । कई एक चमत्कार पूर्ण घटनाओं से ओत-प्रोत श्रीव्रजयात्रा अंक को एक बार मँगाकर अवश्य पढिये ।

धर्म संघ द्वारा आयोजित विशेषाधिवेशनों पर आपश्री का पादार्पण--

धर्मसंघ द्वारा आयोजित महाधिवेशनों पर जैसे-श्रीगंगानगर, मेरठ, आकोला के वेद सम्मेलन दक्षिण हैदराबाद (आन्ध्र प्रदेश) के सर्व वेद शाखा सम्मेलन, धर्मसंघ सम्मेलन जमसेदपुर आदि-आदि कई स्थानों में आपश्री का पादार्पण हुआ।

महान्त श्रीराधिकादासजी के स्मृति महोत्सव पर रैनवाल में पादार्पण--

वि० सं० २०३० के आश्विन मास में किशनगढ रेनवाल के सुप्रसिद्ध स्थान श्रीकृष्णविहारीजी मन्दिर के वर्तमान महान्त श्रीहरिवल्लभदासजी साहित्य-दर्शन शास्त्री द्वारा आयोजित अपने परम पूज्य गुरुदेव गोलोकवासी महान्त श्रीराधिकादासजी महाराज भागवत-भूषण की २१ वीं पुण्य तिथि के उपलक्ष्य पर विद्वद्वरेण्य पं० श्रीबदरीनारायणजी कृत सप्ताह प्रवचन, गोलोकवासी महान्त श्रीराधिकादासजी की छत्री पर कलशारोहण तथा उनके जीवन-चरित्र सम्बन्धी प्रकाशित ग्रन्थ का विमोचन आदि विविध आयोजनों के साथ होने वाले समारोह पर आश्विन शु० में आपश्री का किशनगढ-रेनवाल पादार्पण हुआ ।

जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्य षष्ठ शताब्दी महोत्सव के उपलक्ष्य में अखिल भारतीय श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का अभूतपूर्व आयोजन--

विक्रम सम्वत् २०३१ के चैत्र कृ० तृतीया रविवार से चैत्र कृ० सप्तमी गुरुवार तदनुसार दि० ३० मार्च से दि० ३ अप्रेल सन् १९७५ पर्यन्त अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ, निम्बार्कतीर्थ-सलेमाबाद (अजमेर) राजस्थान में आपश्री के तत्त्वावधान में ही अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का पञ्चदिवसीय वृहद् आयोजन अनेक कार्यक्रमों के साथ बड़े समारोह पूर्वक सानन्द सम्पन्न हुआ ।

इस सम्मेलनान्तर्गत सुदर्शन महायाग, वैष्णव धर्म सम्मेलन, हिन्दु संस्कृति सम्मेलन, शिक्षा सम्मेलन, देवस्थान सुरक्षा सम्मेलन, गोरक्षा सम्मेलन, और महिला सम्मेलन एवं नवनिर्मित भव्य गोशाला का उद्घाटन, ग्रन्थ विमोचन प्रभृति धार्मिक समारोह सम्पन्न हुए।

इस शुभावसर पर चारों पीठों के जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य, चतु:सम्प्रदाय पीठाधीश्वर जगद्गुरु श्रीवैष्णवाचार्य, विभिन्न सम्प्रदायों के धर्माचार्य और धर्मसम्राट् स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज एवं अनेक सन्त-महान्त, मण्डलेश्वर, महामण्डलेश्वर, अनी अखाड़ों के श्रीमहान्त तथा विश्व विख्यात विद्वान् और विदुषी महिलायें तथा अनेक धार्मिक सांस्कृतिक कविगण भी पधारे थे ।

पंच दिवसीय इस परम पुनीत कुम्भ सदृश महान् पर्व पर समस्त धर्माचार्यों का एकत्रित हो एक मञ्च पर विचार विनिमय करने का भारत में यह पहिला ही दृश्य था ।

अतएव न भूतो न भविष्यति वाली सदुक्ति को चरितार्थ करने वाला यह पंच दिवसीय अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन अपने ढङ्ग का एक निराला ही था । उक्त सम्मेलन में राजस्थान के मुख्यमन्त्री श्रीहरदेवजी जोशी, राजमाता सिंधिया ग्वालियर, महाराणा साहब श्रीभगवतसिंहजी उदयपुर तथा नेपाल नरेश के प्रतिनिधि में उनके नायब बड़े राजगुरु पं० श्री जूनानाथजी आदि-आदि महानुभाव भी पधारे थे ।

इस विराट् सम्मेलन की सविवरण सनातन धर्म सम्मेलन स्मारिका प्रकाशित है । बहुमूल्य चित्र एवं समय-समय पर लिये गये चित्रों से सुसज्जितयुक्त स्मारिका की न्यौछावर २१) रु० मात्र है मंगाकर धर्माचार्य एवं विद्वानों के प्रवचन पढकर लाभ लीजिये ।

वि० सं० २०४७ में आपके तत्त्वावधान में युगसन्त श्रीमुरारी बापू की नव दिवसीय श्रीरामकथा का एक महत्वपूर्ण आयोजन हुआ था । विस्तृत विवरण श्रीरामकथा अंक में द्रष्टव्य है । वि० सं० २०५० में आपश्री के आचार्यपीठाभिषेक के अर्द्धशताब्दी पाटोत्सव स्वर्णजयन्ती महोत्सव के शुभावसर पर अ० भा० विराट् सनातन धर्म सम्मेलन का वृहद् आयोजन हुआ था । जिसका विस्तृत विवरण स्वर्ण जयन्ती स्मारिका में द्रष्टव्य है । वि० सं० २०५३ में युगसन्त श्रीमुरारी बापू द्वारा श्रीव्रजदासी भागवत का विमोचन समारोह भी यहीं आचार्यपीठ में अत्यन्त हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुआ ।

इसी प्रकार आपके द्वारा अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ में ही श्रीपुरुषोत्तम-मासीय आयोजनों पर श्रीमद्भागवत के अष्टोत्तरशत पाठ पारायण तथा श्रीसुदर्शन--महायाग, श्रीगोपालयाग, श्रीमुकुन्द महायाग एवं श्रीरासलीला, रामलीला, संगीत समारोह भी बड़े समारोह पूर्वक सम्पन्न हुए हैं ।

भारत भ्रमण और धर्म प्रचार-प्रसार--

आपने पीठासीन होने के पश्चात् (वि० सं० २००० के बाद) १४ वर्ष की अवस्था से ही निज आराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा एवं परिकर सहित देश के विभिन्न क्षेत्रों में जैसे- जयपुर, जोधपुर, अजमेर-पुष्कर, भीलवाड़ा, उदयपुर, इन्दौर, पूना, मुम्बई, सोलापुर, इचलकरंजी, अयोध्या, बनारस, कलकत्ता, पुरी, उज्जैन, द्वारका, मथुरा-वृन्दावन, सौराष्ट्र, मुंगी-पैठण, प्रभृति तथा इनके आस-पास के छोटे-बड़े कई स्थानों में अनेक बार भ्रमण कर अपने दिव्य आदेशों-सन्देशों द्वारा भारतीय संस्कृति तथा वैष्णव धर्म की जागृति की है ।

इस प्रकार इस दीर्घकालिक ५८ वर्ष के परिभ्रमण में सहस्रों ही की संख्या में धर्मप्राण जनता ने आपसे दीक्षा-शिक्षा ग्रहण कर आपके दिव्य सदुपदेशों द्वारा अनुपम लाभ प्राप्त किया है ।

श्रीनिम्बार्क दर्शन एवं साम्प्रदायिक सिद्धान्त व उपासना प्रचार-प्रसार भी आपके आचार्यत्व में विशिष्ट व्यवस्था के साथ सुचारु रूप से होता रहा है । निम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) की श्रीकृष्ण जन्माष्टमी महोत्सव (ऐतिहासिक-धार्मिक वृहद् मेला), निम्बार्क सत्संग भवन के श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर (मदनगंज) की श्रीराधाष्टमी महोत्सव, श्रीपरशुरामद्वारा (श्रीपुष्करराज) की श्रीनिम्बार्क जयन्ती, श्रीनिम्बार्ककोट (अजमेर) की श्रीमद्भागवत जयन्ती आपकी सत्प्रेरणा का ही सत्फल है ।

इसी प्रकार श्री श्रीजी मन्दिर (श्री श्रीजी महाराज की बड़ी कुञ्ज) प्रताप बाजार वृन्दावन में दैनिक सत्संग और श्रावण शुक्ल पक्ष में आपश्री के तत्त्वावधान में झूलनोत्सव बड़े समारोह पूर्वक सुसम्पन्न हो रहे हैं । आपश्री के कृपा प्रसाद से ही आज श्रीसर्वेश्वर शोधपूर्ण मासिक पत्र वृन्दावन से तथा श्रीनिम्बार्क पाक्षिक-पत्र श्रीनिम्बार्कतीर्थ (सलेमाबाद) से विधिवत् प्रकाशित हो रहे हैं । इन दोनों ही पत्रों ने निम्बार्क साहित्य शोध का अभूतपूर्व कार्य किया है । श्रीसर्वेश्वर मासिक-पत्र के विशेषाङ्क रूप में--श्रीनिम्बार्क अङ्क, श्रीवृन्दावनाङ्क, श्रीयुगलशतक, श्रीमहा-वाणीजी, रसोपासनाङ्क, श्रीनागरिदासजी की वाणी, व्रजलीला अङ्क, आदि अनेक अङ्क और श्रीनिम्बार्क पाक्षिक-पत्र के श्रीसर्वेश्वर-अङ्क, श्रीव्रजयात्रा अङ्क, सनातन धर्म सम्मेलन स्मारिका, श्रीरामकथा अङ्क, स्वर्ण जयन्ती स्मारिका आदि तथा श्रीनिम्बार्क ग्रन्थमाला प्रभृति साहित्य सम्पादनादि से सम्प्रदाय को महती प्रसिद्धि मिली है ।

निर्माण की दृष्टि से भी आपश्री के कार्यकाल में बहुत काम हुए हैं जैसे-पूरे मन्दिर का जीर्णोद्धार, मदनगंज का भव्य श्रीराधासर्वेश्वर मन्दिर, अजमेर में श्रीनिम्बार्ककोट का भव्य निर्माण, भगवान् श्रीनिम्बार्क तपःस्थली निम्बग्राम में श्रीनिम्बार्क राधाकृष्णविहारीजी का प्राचीन मन्दिर के अतिरिक्त भव्य नूतन मन्दिर,श्रीपुष्करराज स्थित प्राचीन श्रीपरशुरामद्वारा का नवीन रूप द्वारा भव्य मन्दिर का निर्माण, आचार्यपीठ के दोनों विद्यालयों के भवन, सत्संग कथा भवन, राधामाधव गोशाला, यज्ञशाला, औषधालय, श्रीसर्वेश्वर उद्यान, आचार्यकक्ष, छात्रावास भवन, श्रीराधामाधव चौक, श्रीस्वामीजी महाराज की तपःस्थली का

नया प्रारूप, आचार्यपञ्चायतन स्थापना, बैंक तथा पोस्ट ऑफिस भवन, गंगासागर पर उद्यान श्रीहनुमान मन्दिर तथा भव्य अतिथि गृह, भव्य गोशाला, श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर तथा यमुनासागर की चहार दीवारी व सभा मञ्च का निर्माण, श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर पर परकोटा व श्रीनिम्बार्क महादेव मन्दिर का निर्माण, खातोली मोड़ श्रीनिम्बार्कतीर्थद्वार पर श्रीनिम्बार्कमारुति मन्दिर का निर्माण, श्रीनिम्बार्काचार्य राजकीय प्राथमिक विद्यालय भवन का निर्माण कर सरकार को प्रदान, झीटियाँ स्थान का श्रीगोपाल मन्दिर का नव निर्माण, श्रीविजयगोपालजी मन्दिर एवं श्रीनृसिंहजी मन्दिर निम्बार्कतीर्थ का जीर्णोद्धार, श्रीधाम वृन्दावन में श्री श्रीजी बड़ी कुञ्ज, पन्नाबाई वाली कुञ्ज, विहारघाट वाली अति प्राचीन कुञ्ज, राधा – सर्वेश्वरवाटिका, श्रीजी का पक्का बगीचा व अन्य सम्बन्धित कुञ्जों में जीर्णोद्धार व निर्माण, हीरापुरा पावर हाउस के पास निम्बार्कनगर जयपुर में श्रीनिम्बार्कनिकुञ्जविहारीजी के मन्दिर का भव्य नव निर्माण, श्रीगोपालद्वारा किशनगढ़ का जीर्णोद्धार, श्रीनिम्बार्कतीर्थ सरोवर के चारों ओर पक्का परिक्रमा मार्ग का नव निर्माण, पण्डरपुर, महू आदि के नव निर्माण सम्बन्धी अनेक कार्य आपके आचार्यत्व काल में सम्पन्न हुए हैं । सुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के प्राकट्य स्थल महाराष्ट्र में पैठण समीप मूगीं--ग्रामस्थ श्रीगोदावरी के पावन तटवर्ती अरुणाश्रम पर भव्यतम श्रीनिम्बार्क मन्दिर की नव निर्माणाधीन योजना का शुभारम्भ भी सम्प्रदाय के लिये परम गौरवास्पद है ।

श्रीसर्वेश्वर संस्कृत महाविद्यालय एवं श्रीनिम्बार्क दर्शन विद्यालय श्रीनिम्बार्कतीर्थ की विशिष्ट आदर्श शिक्षण संस्थायें हैं जहाँ प्राचीन गुरुकुल प्रणाली का निःशुल्क छात्रावास, आपश्री की देखरेख में चल रहा है । वहाँ के छात्र भारत की संस्कृति का आदर्श जीवन सीखते हैं । आपने संस्कृत और संस्कृति के लिये जो क्रियात्मक योगदान दिया है, वह सर्वथा अनुकरणीय है । श्रीसर्वेश्वर आराधना, गोपालन, भारतीय संस्कृति का संरक्षण, सनातन-वैष्णव धर्म का प्रचार-प्रसार, मानव मात्र का कल्याण, साधु-समाज का संघटन, सन्तों और विद्वानों की सेवा ही आपके जीवन की मुख्य साधनाएँ हैं । इन्हीं उद्देश्यों की संपूर्ति हेतु आपकी कई भारतव्यापी यात्रायें हुई हैं ।

संस्कृत में न्याय-व्याकरण एवं वेदान्तादि के गम्भीर अध्ययन के साथ-साथ संगीत, आयुर्वेद, हिन्दी, बंगला, राजस्थानी आदि भाषाओं की जानकारी पूर्वक आप एक कुशल धर्मोपदेशक ही नहीं, अपितु विविध ग्रन्थों के रचयिता भी है--संस्कृत एवं हिन्दी दोनों भाषाओं में आपने अनेक ग्रन्थों की रचना की है ।

आपके द्वारा विरचित श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातः स्तवराज स्तोत्र पर युग्मतत्त्वप्रकाशिका, श्रीयुगलगीतिशतकम्, उपदेश दर्शन, श्रीसर्वेश्वर सुधा बिन्दु, श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः, श्रीराधामाधवशतकम्, श्रीनिकुञ्ज सौरभम्, हिन्दु संघटन, भारत-भारती-वैभवम्, श्रीयुगलस्तवविंशतिः, श्रीजानकीवल्लभस्तवः, श्रीहनुमन्महाष्टकम्, श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम्, भारत-कल्पतरु, श्रीनिम्बार्क-स्तवार्चनम्, विवेक-वल्ली , नवनीतसुधा, श्रीसर्वेश्वरशतकम्, श्रीराधाशतकम्, श्रीनिम्बार्कचरितम्, श्रीवृन्दावनसौरभम्, श्रीराधासर्वेश्वर मंजरी, श्रीमाधवप्रपन्नाष्टकम्, छात्र-विवेक-दर्शन, भारत-वीर-गौरव, श्रीराधासर्वेश्वरालोकः, श्रीपरशुराम-स्तवावली, श्रीराधा-राधना, मन्त्रराजभावार्थ-दीपिका, श्रीसीतारामस्तवादर्शः, गोशतकम् आदि-आदि ग्रन्थ परम उपादेय एवं मनन करने योग्य हैं जो धार्मिक एवं भारतीय संस्कृति की विचारधाराओं के ग्रन्थ हैं ।

आपकी बाल्यावस्था के कतिपय संस्मरण--

(१) एक बार आप ७ वर्ष की अवस्था में ज्वरग्रस्त हो गये थे, उन दिनों घर पर कोई नहीं थे, केवल माताजी ही थी । पिताजी वृन्दावन थे । एक दिन माताजी जब जल लाने के लिये बाहर चली गई, दिन का समय था आप चौक में खाट पर लेटे हुए थे इतने में ही छत पर सामने एक छोटा सा बन्दर दिखाई दिया और वह आपकी ओर आगे हाथ करता हुआ यों कह रहा था-ले लड्डू खायेगा, ले लड्डू खायेगा । इतने में ही माताजी आ गई तब आपने कहा देखो यह बन्दर मेरी ओर हाथ करके क्या कह रहा है । माताजी ने देखा तो कुछ दिखाई नहीं दिया । केवल आपको ही दीख रहा था, उसी दिन से आपश्री की बीमारी दूर हो गई । यह बन्दर के रूप में श्रीहनुमत्लालजी के दर्शन हुए थे ।

(२) ८ वर्ष की अवस्था थी । एक बार दीपावली के दिन सायंकाल के समय जब अपने जन्म स्थान से बाहर पास में ही श्रीहनुमान्जी के स्थान पर दीपक जला रहे थे, उस सगय दीपावली के कारण चारों ओर पचासों दीपक जल रहे थे एक दीपक की ज्योति आपकी कमीज के पीछले भाग में लग जाने से कमीज का पिछला भाग जल रहा था आपको पता नहीं उस समय सलेमाबाद का ही एक चत्रा बाबा (बागड़ा ब्राह्मण) पीछे बैठा हुआ देख रहा था, उसने तुरन्त दौड़कर पीछे से कमीज को बुझाया तब आपने कहा हट यह क्या कर रहा है तब

उसने कहा देख क्या कर रहा हूँ इतना कमीज जल गया । यह हनुमान्जी महाराज की परम कृपा थी कमीज जलता रहा पर आँच नहीं आने दी ।

(३) अभी हाल ही की बात है-विक्रम सं० २०३१ में होने वाले अ० भा० सनातन धर्म-सम्मेलन से एक मास पूर्व माघ मास की बात है कि आपश्री को स्वप्न हुआ कि रात्रि में शयन काल के समय एक हृष्ट-पुष्ट बन्दर आया है तब आपने उनका सत्कार करते हुए कहा कि-पधारिये आज आपने अद्भुत कृपा की, उन्हें प्रसाद पवाया और रात्रि में विश्राम करने को कहा-रात्रि में विश्राम कर सवेरे उठकर चल दिये । इसके बाद स्वप्न समाप्त हो गया । जिस दिन आपको यह स्वप्न रात्रि में आया था उसके दूसरे ही दिन आपश्री का अजमेर पधारना हुआ । श्रीनिम्बार्ककोट में मिलने पर आपश्री ने मुझे संकेत किया कि-सन्तजी ! आज रात्रि में ऐसा स्वप्न हुआ , यह कैसा है । मैंने निवेदन किया भगवन् यह तो अच्छा ही है श्रीहनुमत्लालजी ही पधारे होंगे । उनकी प्रसन्नता हेतु सुन्दरकाण्ड के पाठ होने चाहिये । तब आपने कहा आप चलें तो करवा दें । मैं भी साथ आ गया । बगीची में हनुमान्जी के सान्निध्य में बैठकर ११ विद्वानों ने सुन्दरकाण्ड के पाठ किये । फलस्वरूप पाठ के मध्य ही राजस्थान सरकार द्वारा यह सूचना मिली कि कल के दिन से आपके सम्मेलन के लिये खातोली फाँटा से सलेमाबाद तक एक मास में डामर रोड़ सड़क सरकार की ओर से बनकर तैयार हो जायेगी । इसी सड़क के लिये कुछ दिन पहले लिखा-पढी करके बहुत प्रयत्न कर चुके थे । जबाब आया कि अभी बजट में गुंजाइस नहीं हैं, इसका निर्णय केन्द्र सरकार से हो सकता है ? किन्तु अब सड़क बन जायगी ऐसी सूचना पाकर सबका चित्त प्रफुल्लित हो उठा । यह है श्रीहनुमत्लालजी का प्रत्यक्ष चमत्कार ।

(४) बाल्यकाल से ही आपका स्वभाव ऐसा है कि दुःखी मनुष्य को देखकर दुःखी होना । बालपने की बात है--एक दिन बड़े महाराजश्री के जन्म स्थान के सेठ श्रीशिवचन्दजी जो कि वृद्ध थे और मन्दिर में ही रहते थे । पुजारी श्रीरघुनाथदासजी के भाई के सुपुत्र दुर्गालाल ने उनसे विनोद कर दिया । श्रृङ्गार आरती के दर्शन करने के समय जब वे जगमोहन में ही दर्शन करके बैठ गये । पुजारीजी आरती के बाद जब बालकों को श्रृङ्गार आरती का पुड़ी प्रसाद बाँट रहे थे, उनका नियम था कि वे हाथ में घड़ियाल बजाने का डंका रखते थे और उससे प्रसाद लेने में जो बालक गड़बड़ मचाते थे उन्हें डराते रहते थे । जब सेठ श्रीशिवचन्दजी ने कहा कि पुजारीजी आपका यह बालक हमसे दुर्व्यवहार करता है--पुजारीजी ने पूछा--कौन ? तब शिवचन्दजी ने कहा कि-कौन-कौन क्या

आपका यह जाम। इस शब्द पर पुजारीजी को आवेश आ गया और उसी हाथ वाले डंके की शिवचन्दजी के मस्तक में मार दी, उनके शिर में बाल न होने के कारण शिर में खून आ गया। इस दशा को देखकर बालक रतनलाल के भी नेत्रों में आँसू आ गये और बड़े जोर से रोने लगे। रोना बन्द ही नहीं हुआ, रोते-रोते घर जा रहे थे तब बीच में आपने यह विचार किया कि घर वाले पूछेंगे कि क्यों रोते हो तब क्या जबाब देंगे तो आपने एक पत्थर उठाकर अपने पैर की अंगुली पर जोर से मारली खून निकल आया। घरवालों ने जब रोने का कारण पूछा तो कहा पैर में लग गई। साथ वाले बालकों ने कहा--नहीं इसी ने पैर में मारी है और मन्दिर में होने वाली घटना सुनाई। आज भी यही है कि जब कभी आप किसी की दयनीय दशा देखते हैं तो करुणार्द्र हो उठते हैं।

(५) पुजारी श्रीरघुनाथदासजी द्वारा दिये गये श्रीलड्डूगोपालजी की सेवा आप घर पर नित्य किया करते थे, जैसा मन्दिर में देखते वैसे ही नित्य स्नान कराना, वस्त्र पहिनाना एवं भोग लगाना इत्यादि। आज भी बालकपन के वे जमे हुए शुभ संस्कार ज्यों के त्यों विराजमान हैं। नित्य भगवत्सेवा और सायंकाल नाम-संकीर्तन स्वयं ही करते कराते हैं।

यद्यपि विगत कुछ वर्षों से आपका स्वास्थ्य अनुकूल नहीं रहता, तथापि आपके आत्मबल एवं मनोबल में कोई न्यूनता नहीं पाई जाती है। सदा ही मन प्रसन्न रहता है किसी समय स्वास्थ्य में भी कोई साधारण गड़बड़ रहने पर भक्तों के पूछने पर ऐसा ही भाव व्यक्त कर देते हैं कि सब ठीक है। पीठासीन होने से लेकर अद्यावधि पर्यन्त ५८ वर्षों में आपके जीवनकाल में अनेक संघर्ष आये, किन्तु श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा और आपकी सरलता, समदर्शिता एवं सौम्य स्वभाव के कारण सब स्वतः समाधान हो जाते हैं। इन पंक्तियों का लेखक कई बार यात्रा में साथ रहा है- शहर और ग्रामों की तो बात ही क्या, किन्तु वीहड़ वनों में श्रीसर्वेश्वर प्रभु के साथ विराजने से जंगल में मंगल वाली कहावत अक्षरशः सत्य (चरितार्थ) हो जाती है। इस प्रकार आपका व्यक्तित्व एवं कृतित्व दोनों ही परम वन्दनीय हैं। भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु हमारे आचार्यश्री को पूर्ण स्वस्थ रखते हुए दीर्घायु प्रदान करें, जिससे सनातन (वैष्णव) धर्म का अधिकाधिक प्रचार-प्रसार होकर जन कल्याण हो, इन्हीं मांगलिक वचनों के साथ हम अपनी लेखनी को विश्राम देते हैं।

विनीत--

निम्बार्कभूषण पं० गोविन्ददास सन्त
धर्मशास्त्री, द्वैताद्वैतविशारद, पुराणतीर्थ
प्रचारमन्त्री--
अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ

✻ विषयानुक्रमणिका ✻

स्तवरत्नाञ्जलि-पूर्वार्द्ध

क्र. सं. विषय **पृ० सं०**

□

❋ विषयानुक्रमणिका ❋

स्तवरत्नाञ्जलि-उत्तरार्द्ध

* श्रीसर्वेश्वरो जयति *

॥ श्रीभगवन्निम्बार्काचार्याय नमः ॥

निखिल महीमण्डलाचार्य चक्रचूड़ामणि

सर्वतन्त्रस्वतन्त्रानन्तानन्त-

श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति-

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज

द्वारा विनिर्मित--

स्तवरत्नाञ्जलिः

राधासर्वेश्वरं ध्यात्वा श्रीनिम्बार्कपदाम्बुजम् ।

विरच्यते गुरुं नत्वा स्तवरत्नाञ्जलिर्हरेः ॥

(हिन्दी भाषानुवाद सहित)

श्रीव्रजभावनाष्टकम्

(१)

श्रुतिमन्त्र पुराण पदोच्चरिता
रसिकैः सततं रसगीतिवृता ।
युगलांघ्रिसरोजसुगन्धवरा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ।।

(२)

वृषभानुसुतापदकञ्जधुता
व्रजवल्लभमञ्जुकेलिभृता ।
गिरिराजलताद्रुमकुञ्जतता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ।।

(३)

विधि-शम्भु-पुरन्दरसेव्यतमा
बुधसाधु-मुनीश्वर-गेयतमा ।
निजभानिकरैर्जन-चित्तहरा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ।।

(४)

रसिकैः रसविज्ञवरैः प्रणुता
रसधामधरा रसमोदकरा ।
सुखशान्तिसुधासरसा मधुरा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ।।

श्रीव्रज भावनाष्टक

नित्य निकुञ्ज विहारी प्रिया-प्रियतम श्रीश्यामाश्याम के चरण-कमलों में अन्तःस्थल से भावनामय स्तवरत्नों की अञ्जलि समर्पित करते हुये श्रद्धेय श्री आचार्य चरण जगदभिन्न निमित्तोपादान कारण, स्वाभाविक द्वैताद्वैत बोधक श्रुतियों के आश्रय, स्वभावतः अपास्त समस्त दोष, अशेष कल्याण गुणैक राशि, व्यूहाङ्गी, वरेण्य, परब्रह्म, श्रीसर्वेश्वर प्रभु के ही अनेक रूपों में सर्वप्रथम श्रुति रूप, परम प्रिय, गो गोप गोपी परिकर के साथ सम्पन्न लाड़िलीलाल की अनुपम लीलाओं की परम पावन स्थली श्रीव्रज-भूमि की भावात्मक स्तुति करते हैं ।

(१)

वेद मन्त्रों व पुराणों में जिसका वर्णन है, जो निरन्तर रसिक भक्तों द्वारा गाई गई रसमय गीतियों की ध्वनि से व्याप्त है, दिव्य युगल के चरण-कमल की शोभन गन्ध से जो श्रेष्ठ है, सर्वेश्वर श्रीश्यामाश्याम से अलंकृत उस व्रज स्वरूप कुञ्ज की पावन भूमि की जय हो ।

(२)

वृषभानुनन्दिनी श्रीप्रियाजी के चरण कमलों के स्पर्श जनित आनन्द से जो रोमाञ्चित है, व्रजवल्लभ श्रीलालजी की मंजुल केलि से जो सतत उनके अधीन है, गिरिराज श्रीगोवर्द्धन लता, तरु व कुञ्जों से * विस्तृत, सर्वेश्वर श्रीप्रियाप्रियतम से शोभित, उस व्रज कुञ्ज की पवित्र वसुन्धरा की जय हो ।

(३)

ब्रह्मा, शिव तथा इन्द्र से संसेव्य, विद्वान्, साधु व मुनीश्वरों द्वारा गेय (गाई जाने योग्य) अपनी छवि पुञ्ज से भक्तजनों का मन हरने वाली, ईश (श्रीसर्वेश्वर प्रभु) द्वारा धारण की गई, कुञ्जमयी उस व्रज वसुन्धरा की जय हो ।

(४)

रसिक, रस के विशेषज्ञ श्रेष्ठ भक्तों द्वारा नमस्कृत, रस (चिन्मय, आनन्दघन, दिव्य युगल स्वरूप) का मोद (परम आनन्द) करने वाली, रसमय धाम स्वरूप यह वसुन्धरा है । सुख व शान्ति रूप सुधा से सरस, मधुर, श्रीसर्वेश्वर से धृत इस व्रज कुञ्ज धरा की जय हो ।

---

* विसृतं विस्तृतं ततमि--इत्यमरः ।

(५)

विविधाऽमितपादपपुष्पवृता
नवकोकिलकूजितहर्षयुता ।
कमनीयमयूररवोल्लसिता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(६)

शुकशुद्धमनोज्ञगिरोच्चरिता
भ्रमरावलिगुञ्जनरम्यधरा ।
व्रजभक्तजनैर्नितरामुषिता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(७)

व्रजगोव्रजगोपकदम्बलसा
व्रजगोपसखीमधुगीतरसा ।
व्रजवासिभिरुत्तमनृत्ययुता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(८)

यमुनारमणीयसुतीरवरा
तपसाऽपि न लभ्यतमा सरसा ।
कृपया सुलभा खलु पूर्णतमा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(९)

व्रजभक्तिप्रदं दिव्यं श्रीव्रजभावनाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(५)

विविध प्रकार के असंख्य वृक्षों के पुष्पों से आवृत, नव कोकिल के कूजित (मधुर स्वर) से हर्ष युक्त, सुन्दर मयूर की केका (आवाज) से उल्लास भरी, श्रीसर्वेश्वर से धृत इस कुञ्जमय व्रज-वसुन्धरा की जय हो ।

(६)

शुक (मुनि व तोता) की शुद्ध व मनोहर वाणी से वर्णित भ्रमरावली के मधुर गुञ्जन से सुरम्य यह धरा है, जिसमें पर्याप्त व्रज भक्तजन निवास करते हैं, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से सुशोभित उस व्रज--कुञ्ज धरा की जय हो ।

(७)

व्रज के गो--गोप समुदाय से जो शोभित है, व्रज-गोप व सखियों के सुमधुर गीतों से जो सरस है, जो व्रजवासियों के उत्तम नृत्यों से युक्त है, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से विलसत उस व्रज-कुञ्ज की जय हो ।

(८)

श्रीयमुनाजी के सुरम्य तट पर विलसित रसमय, तपस्या से भी सुलभ न हो सकने वाली, एकमात्र कृपा से ही सुलभ, पूर्णतम, श्रीसर्वेश विधृत , व्रज--कुञ्ज धरा की जय हो ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह परम दिव्य श्रीव्रजभावनाष्टक नाम का स्तव व्रज भक्ति देने वाला है ।

श्रीव्रजभावनाष्टकम्

(१)

श्रुतिमन्त्र पुराण पदोच्चरिता
रसिकैः सततं रसगीतिवृता ।
युगलांघ्रिसरोजसुगन्धवरा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(२)

वृषभानुसुतापदकञ्जधुता
व्रजवल्लभमञ्जुकेलिभृता ।
गिरिराजलताद्रुमकुञ्जतता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(३)

विधि-शम्भु-पुरन्दरसेव्यतमा
बुधसाधु-मुनीश्वर-गेयतमा ।
निजभानिकरैर्जन-चित्तहरा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(४)

रसिकैः रसविज्ञवरैः प्रणुता
रसधामधरा रसमोदकरा ।
सुखशान्तिसुधासरसा मधुरा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

श्रीव्रज भावनाष्टक

नित्य निकुञ्ज विहारी प्रिया-प्रियतम श्रीश्यामाश्याम के चरण-कमलों में अन्तःस्थल से भावनामय स्तवरत्नों की अञ्जलि समर्पित करते हुये श्रद्धेय श्री आचार्य चरण जगदभिन्न निमित्तोपादान कारण, स्वाभाविक द्वैताद्वैत बोधक श्रुतियों के आश्रय, स्वभावतः अपास्त समस्त दोष, अशेष कल्याण गुणैक राशि, व्यूहाङ्गी, वरेण्य, परब्रह्म, श्रीसर्वेश्वर प्रभु के ही अनेक रूपों में सर्वप्रथम श्रुति रूप, परम प्रिय, गो गोप गोपी परिकर के साथ सम्पन्न लाड़िलीलाल की अनुपम लीलाओं की परम पावन स्थली श्रीव्रज-भूमि की भावात्मक स्तुति करते हैं ।

(१)

वेद मन्त्रों व पुराणों में जिसका वर्णन है, जो निरन्तर रसिक भक्तों द्वारा गाई गई रसमय गीतियों की ध्वनि से व्याप्त है, दिव्य युगल के चरण-कमल की शोभन गन्ध से जो श्रेष्ठ है, सर्वेश्वर श्रीश्यामाश्याम से अलंकृत उस व्रज स्वरूप कुञ्ज की पावन भूमि की जय हो ।

(२)

वृषभानुनन्दिनी श्रीप्रियाजी के चरण कमलों के स्पर्श जनित आनन्द से जो रोमाञ्चित है, व्रजवल्लभ श्रीलालजी की मंजुल केलि से जो सतत उनके अधीन है, गिरिराज श्रीगोवर्द्धन लता, तरु व कुञ्जों से * विस्तृत, सर्वेश्वर श्रीप्रियाप्रियतम से शोभित, उस व्रज कुञ्ज की पवित्र वसुन्धरा की जय हो ।

(३)

ब्रह्मा, शिव तथा इन्द्र से संसेव्य, विद्वान्, साधु व मुनीश्वरों द्वारा गेय (गाई जाने योग्य) अपनी छवि पुञ्ज से भक्तजनों का मन हरने वाली, ईश (श्रीसर्वेश्वर प्रभु) द्वारा धारण की गई, कुञ्जमयी उस व्रज वसुन्धरा की जय हो ।

(४)

रसिक, रस के विशेषज्ञ श्रेष्ठ भक्तों द्वारा नमस्कृत, रस (चिन्मय, आनन्दघन, दिव्य युगल स्वरूप) का मोद (परम आनन्द) करने वाली, रसमय धाम स्वरूप यह वसुन्धरा है । सुख व शान्ति रूप सुधा से सरस, मधुर, श्रीसर्वेश्वर से धृत इस व्रज कुञ्ज धरा की जय हो ।

---

* विसृतं विस्तृतं ततमि--इत्यमरः ।

(५)

विविधाऽमितपादपपुष्पवृता
नवकोकिलकूजितहर्षयुता ।
कमनीयमयूररवोल्लसिता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(६)

शुकशुद्धमनोज्ञगिरोच्चरिता
भ्रमरावलिगुञ्जनरम्यधरा ।
व्रजभक्तजनैर्नितरामुषिता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(७)

व्रजगोव्रजगोपकदम्बलसा
व्रजगोपसखीमधुगीतरसा ।
व्रजवासिभिरुत्तमनृत्ययुता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(८)

यमुनारमणीयसुतीरवरा
तपसाऽपि न लभ्यतमा सरसा ।
कृपया सुलभा खलु पूर्णतमा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(९)

व्रजभक्तिप्रदं दिव्यं श्रीव्रजभावनाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(५)

विविध प्रकार के असंख्य वृक्षों के पुष्पों से आवृत, नव कोकिल के कूजित (मधुर स्वर) से हर्ष युक्त, सुन्दर मयूर की केका (आवाज) से उल्लास भरी, श्रीसर्वेश्वर से धृत इस कुञ्जमय व्रज-वसुन्धरा की जय हो ।

(६)

शुक (मुनि व तोता) की शुद्ध व मनोहर वाणी से वर्णित भ्रमरावली के मधुर गुञ्जन से सुरम्य यह धरा है, जिसमें पर्याप्त व्रज भक्तजन निवास करते हैं, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से सुशोभित उस व्रज--कुञ्ज धरा की जय हो ।

(७)

व्रज के गो--गोप समुदाय से जो शोभित है, व्रज-गोप व सखियों के सुमधुर गीतों से जो सरस है, जो व्रजवासियों के उत्तम नृत्यों से युक्त है, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से विलसत उस व्रज-कुञ्ज की जय हो ।

(८)

श्रीयमुनाजी के सुरम्य तट पर विलसित रसमय, तपस्या से भी सुलभ न हो सकने वाली, एकमात्र कृपा से ही सुलभ, पूर्णतम, श्रीसर्वेश विधृत , व्रज--कुञ्ज धरा की जय हो ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह परम दिव्य श्रीव्रजभावनाष्टक नाम का स्तव व्रज भक्ति देने वाला है ।

श्रीव्रजभावनाष्टकम्

(१)

श्रुतिमन्त्र पुराण पदोच्चरिता
रसिकैः सततं रसगीतिवृता ।
युगलांघ्रिसरोजसुगन्धवरा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(२)

वृषभानुसुतापदकञ्जधुता
व्रजवल्लभमञ्जुकेलिभृता ।
गिरिराजलताद्रुमकुञ्जतता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(३)

विधि-शम्भु-पुरन्दरसेव्यतमा
बुधसाधु-मुनीश्वर-गेयतमा ।
निजभानिकरैर्जन-चित्तहरा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(४)

रसिकैः रसविज्ञवरैः प्रणुता
रसधामधरा रसमोदकरा ।
सुखशान्तिसुधासरसा मधुरा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

श्रीव्रज भावनाष्टक

नित्य निकुञ्ज विहारी प्रिया-प्रियतम श्रीश्यामाश्याम के चरण-कमलों में अन्तःस्थल से भावनामय स्तवरत्नों की अञ्जलि समर्पित करते हुये श्रद्धेय श्री आचार्य चरण जगदभिन्न निमित्तोपादान कारण, स्वाभाविक द्वैताद्वैत बोधक श्रुतियों के आश्रय, स्वभावतः अपास्त समस्त दोष, अशेष कल्याण गुणैक राशि, व्यूहाङ्गी, वरेण्य, परब्रह्म, श्रीसर्वेश्वर प्रभु के ही अनेक रूपों में सर्वप्रथम श्रुति रूप, परम प्रिय, गो गोप गोपी परिकर के साथ सम्पन्न लाड़िलीलाल की अनुपम लीलाओं की परम पावन स्थली श्रीव्रज-भूमि की भावात्मक स्तुति करते हैं ।

(१)

वेद मन्त्रों व पुराणों में जिसका वर्णन है, जो निरन्तर रसिक भक्तों द्वारा गाई गई रसमय गीतियों की ध्वनि से व्याप्त है, दिव्य युगल के चरण-कमल की शोभन गन्ध से जो श्रेष्ठ है, सर्वेश्वर श्रीश्यामाश्याम से अलंकृत उस व्रज स्वरूप कुञ्ज की पावन भूमि की जय हो ।

(२)

वृषभानुनन्दिनी श्रीप्रियाजी के चरण कमलों के स्पर्श जनित आनन्द से जो रोमाञ्चित है, व्रजवल्लभ श्रीलालजी की मंजुल केलि से जो सतत उनके अधीन है, गिरिराज श्रीगोवर्द्धन लता, तरु व कुञ्जों से * विस्तृत, सर्वेश्वर श्रीप्रियाप्रियतम से शोभित, उस व्रज कुञ्ज की पवित्र वसुन्धरा की जय हो ।

(३)

ब्रह्मा, शिव तथा इन्द्र से संसेव्य, विद्वान्, साधु व मुनीश्वरों द्वारा गेय (गाई जाने योग्य) अपनी छवि पुञ्ज से भक्तजनों का मन हरने वाली, ईश (श्रीसर्वेश्वर प्रभु) द्वारा धारण की गई, कुञ्जमयी उस व्रज वसुन्धरा की जय हो ।

(४)

रसिक, रस के विशेषज्ञ श्रेष्ठ भक्तों द्वारा नमस्कृत, रस (चिन्मय, आनन्दघन, दिव्य युगल स्वरूप) का मोद (परम आनन्द) करने वाली, रसमय धाम स्वरूप यह वसुन्धरा है । सुख व शान्ति रूप सुधा से सरस, मधुर, श्रीसर्वेश्वर से धृत इस व्रज कुञ्ज धरा की जय हो ।

---

* विसृतं विस्तृतं ततमि--इत्यमरः ।

(५)

विविधाऽमितपादपपुष्पवृता
नवकोकिलकूजितहर्षयुता ।
कमनीयमयूररवोल्लसिता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(६)

शुकशुद्धमनोज्ञगिरोच्चरिता
भ्रमरावलिगुञ्जनरम्यधरा ।
व्रजभक्तजनैर्नितरामुषिता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(७)

व्रजगोव्रजगोपकदम्बलसा
व्रजगोपसखीमधुगीतरसा ।
व्रजवासिभिरुत्तमनृत्ययुता
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(८)

यमुनारमणीयसुतीरवरा
तपसाऽपि न लभ्यतमा सरसा ।
कृपया सुलभा खलु पूर्णतमा
जयतीशधृता व्रजकुञ्जधरा ॥

(९)

व्रजभक्तिप्रदं दिव्यं श्रीव्रजभावनाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(५)

विविध प्रकार के असंख्य वृक्षों के पुष्पों से आवृत, नव कोकिल के कूजित (मधुर स्वर) से हर्ष युक्त, सुन्दर मयूर की केका (आवाज) से उल्लास भरी, श्रीसर्वेश्वर से धृत इस कुञ्जमय व्रज-वसुन्धरा की जय हो ।

(६)

शुक (मुनि व तोता) की शुद्ध व मनोहर वाणी से वर्णित भ्रमरावली के मधुर गुञ्जन से सुरम्य यह धरा है, जिसमें पर्याप्त व्रज भक्तजन निवास करते हैं, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से सुशोभित उस व्रज--कुञ्ज धरा की जय हो ।

(७)

व्रज के गो--गोप समुदाय से जो शोभित है, व्रज-गोप व सखियों के सुमधुर गीतों से जो सरस है, जो व्रजवासियों के उत्तम नृत्यों से युक्त है, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की कृपा से विलसत उस व्रज-कुञ्ज की जय हो ।

(८)

श्रीयमुनाजी के सुरम्य तट पर विलसित रसमय, तपस्या से भी सुलभ न हो सकने वाली, एकमात्र कृपा से ही सुलभ, पूर्णतम, श्रीसर्वेश विधृत , व्रज--कुञ्ज धरा की जय हो ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी राधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह परम दिव्य श्रीव्रजभावनाष्टक नाम का स्तव व्रज भक्ति देने वाला है ।

श्रीयमुनाष्टकम्

(१)

व्रजधामधरां परितो द्रवितां
मुनिवृन्दनुतां मधुरां मुदिताम् ।
शरणागतशान्तिकरीं सरसां
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम् ॥

(२)

युगलांगविनिस्सृतपुण्यपरां
सकलाभयदानपरां प्रवराम् ।
रससारभरां रसभक्तिधरां
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम् ॥

(३)

अरविन्द-कदम्ब-लतालसितां
सुपतत्त्रिनिनाद-सुरम्यवराम् ।
अभितः स्वतटं सुसखीसुभगां
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम् ॥

(४)

नवनीरगभीरतरंगवृतां
युगलांघ्रिसखीनवरूपयुतां ।
विपिनाऽधिपदम्पतिभक्तिरताम्
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम् ॥

श्रीयमुनाष्टक

(१)

जो श्रीयमुनाजी परम-दिव्य-चिन्मय धरा व्रजधाम की पुनीत सरस भूमि पर प्रसन्न होकर मधुर-मधुर प्रमोदभरी कंकणाकार से प्रवाहित हैं, जिन्हें मुनिजन नित्य स्तवन नमन करते रहते हैं, जो शरणागत जीवों को अमित सरस--शान्ति सदा प्रदान करती रहती है, ऐसी कृपामयी कलिन्दनन्दिनी श्रीयमुना महारानी को हम प्रणाम करते हैं ।

(२)

जिन श्रीयमुनाजी का आनन्दकन्द-रसविग्रह-नन्दनन्दन मुकुन्द माधव श्रीकृष्णचन्द्र पूर्ण पुरुषोत्तम प्रभु के दिव्य मङ्गल विग्रह से प्रादुर्भाव है । अतएव नित्य पावन श्रीविग्रह को धारण करने वाली समस्त प्राणियों को यम त्रास से अभय दान देने में जो प्रमुख हैं, जिनके रोम-रोम में रस-विग्रह श्रीश्यामाश्याम का सतत निवास है, जो अपने हृदय में सदा सरस युगल की भक्ति धारण किये रहती है, ऐसी तपन-तनया श्रीयमुनाजी को हम प्रणाम करते हैं ।

(३)

जिन श्रीयमुना महारानी के चारों ओर के पुनीत-पुलिन कमल-कुञ्ज, कदम्ब-कुञ्ज माधवी, माधुरी, वृन्दा आदि-आदि कुञ्जों से सुशोभित है और जिन निभृत निकुञ्जों में शुक-पिक-सारिका आदि-आदि नित्य सिद्ध अधिकृत पावन पक्षियों के मधुर-मधुर युगल गुण गान की मीठी-मीठी स्वर लहरी से श्रीकलिन्दजा तट की शोभा बढ रही है, जहाँ स्नानार्थ आई श्रीललिता, विशाखा, चित्रलेखा, चम्पकलता, तुङ्गविद्या, रङ्गदेवी आदि नित्य सहचरी वृन्दों से जिनका पवित्र रमणीय तट सुसज्जित है । ऐसी भानुनन्दिनी श्रीयमुनाजी को हम प्रणाम करते हैं ।

(४)

जो श्रीयमुनाजी अगाध-स्वच्छ-श्यामल जल में प्रियतम की नित्य सुखानुभूति से सदा आनन्द की तरङ्गायित मन्द-मन्द लहरें धारण किये हैं, और श्रीयुगल लाल-प्रिया के चरणों में नित्य सेवार्थ दिव्य नव किशोरी (सहचरी) स्वरूप को धारण करने वाली विपिनराज श्रीवृन्दावन के राज राजेश्वर श्रीश्यामा-श्याम की नित्य नव नवायमान निरन्तर भक्ति में अभिरत रहती है, ऐसी रवि तनया श्रीयमुनाजी को हम प्रणाम करते हैं ।

(५)

गहनोच्छलितोदकदिव्यतरां
मणि-मौक्तिकतीर-सुचित्तहराम् ।
रसिकोत्तमचारुगिरोच्चरितां
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम् ॥

(६)

नवकुञ्जकिशोरविहारपरां
नवकुञ्जसखीजलकेलिधराम् ।
नवकुञ्जशुकोक्तिसुमोदभरां
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम् ॥

(७)

सह राधिकया परिवीक्ष्य हरिं
रसकृष्णमतीववरं मधुरम् ।
अमितोच्छलितां ललितां मधुरां
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम् ॥

(८)

युगलांघ्रिसरोजपरागरसं
निज चेतसि चारु निधाय शुभम् ।
सततं खलु तस्य सुदानपरां
प्रणमामि कलिन्दसुतां यमुनाम् ॥

(९)

श्रीयमुनाष्टकं दिव्यं युगलांऽघ्रिरतिप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(५)

जिन श्रीयमुनाजी की अनेक-गहन-उछलती हुई लहरों से दिव्यातिदिव्यतम शोभा बढ रही है । जिनके परम सुन्दरतम मणिमय दिव्य घाट मोतियों से जड़े हुए हैं, और जिस रसमय पुनीत पुलिन पर विराजमान रसिकजन आपका गुण गान करते ही रहते हैं, ऐसी भानुसुता श्रीयमुनाजी को हम प्रणाम करते हैं ।

(६)

जिन श्रीयमुनाजी में हृदय रमण ठाकुर नित्य-नव युगल किशोर श्रीश्यामाश्याम विहार करते रहते हैं, जहाँ नव कुञ्ज केलि परायण सखी-सहचरी-मञ्जरी वृन्द सतत जल विहार करती रहती हैं । वही श्रीकलिन्दजा अपने तट पर निभृत निकुञ्जों के द्वार-द्वार पर पिक-शुक-सारिका, श्रीराधा कृष्ण कहो श्रीराधाकृष्ण कहो ऐसी प्रमोद भरी मनोहर वाणी से प्रसन्न मन (अथवा नव निकुञ्ज के लीला शुक) अर्थात् श्रीशुक मुनि की अमृतमयी वाणी से प्रसन्न होने वाली तरणि तनया श्रीयमुनाजी को हम प्रणाम करते हैं ।

(७)

जो श्रीयमुना परमाह्लादिनी-रासेश्वरी-नित्य नव किशोरी-कृपामयी-स्वामिनी श्रीराधारानी के साथ रस विग्रह आनन्दकन्द-रसनिधि-सर्वेश्वर श्रीकृष्णचन्द्र का नयनों से दर्शन कर बड़ी प्रसन्न होती हैं, जो अपनी ललित चित्र विचित्र दर्शनीय मधुर-मधुर उत्ताल तरङ्गों से नित्य सुसज्जित रहती हैं और कहती हैं कि यही परम-मधुर-मनोहर रस कृष्ण अत्यन्त सुन्दर है । ऐसी विपिन विहारिणी श्रीयमुनाजी को हम प्रणाम करते हैं ।

(८)

जो श्रीयमुनाजी युगलवर श्रीप्रियालाल के सुकोमल चरण कमलों के पराग-रस को अपने हृदय मन्दिर में नित्य धारण कर, उसे अधिकारी भावुक रसिकजनों को निरन्तर बड़ी ही उदारता से मोदभरी बाँटती रहती हैं । ऐसी करुणामयी-कलिन्दनन्दिनी श्रीयमुना महारानी को हम प्रणाम करते हैं ।

(९)

परम पूज्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह दिव्य श्रीयमुनाष्टक है । इसके पठन से श्रीयमुना महारानी प्रसन्न होकर युगल किशोर श्रीश्यामा-श्याम के श्रीचरणों में नित्य शुद्ध प्रीति प्रदान कराती हैं ।

श्रीवृन्दावनाष्टकम्

(१)

राधापदाब्जमकरन्दसुधाऽवतृप्तं
गोविन्द-रास-लसितं परमं सुरम्यम् ।
युग्माङ्घ्रिसेवनरतै रसिकैरुपास्यं
वृन्दावनं रसघनं हृदि भावयामि ॥

(२)

ब्रह्मेन्द्ररुद्रसनकादि-समर्च्यमान-
मानन्दसारसरसं महनीयरूपम् ।
कालिन्दिकूल-ललितं युगकेलियुक्तं
वृन्दावनं रसघनं हृदि भावयामि ॥

(३)

नित्यं मनोहररवैः शुकसारिकाद्यै-
र्जेगीयमानमनिशं विवुधानुसेव्यम् ।
नाना-द्रुमस्थ-मधुपैरभिगुञ्ज्यमानं
वृन्दावनं रसघनं हृदि भावयामि ॥

(४)

जम्बू-कदम्ब-नवकुञ्ज-निकुञ्ज-रम्यं
रासस्थलं रसमयं रससिन्धुराशिम् ।
अप्राकृतं मणिमयं हरिदिव्यभूमिं
वृन्दावनं रसघनं हृदि भावयामि ॥

(५)

कोटीन्दुकान्तिसुभगं ललितादिगेयं
सर्वार्तितापशमनं निगमाभिवन्द्यम् ।
कुञ्जोपकुञ्जगहनं प्रतिगुल्मसेव्यं
वृन्दावनं रसघनं हृदि भावयामि ॥

श्रीवृन्दावनाष्टक

(१)

परमाह्लादिनी शक्ति प्रेमस्वरूपा रसरूपा रासेश्वरी श्रीराधिकाजी के अति कमनीय चरणारविन्द पराग मकरन्द से सुवासित तथा श्रीगोविन्द की परम दिव्य रासलीला से समुल्लसित एवं युगलकिशोर श्रीश्यामाश्याम के चरण--कमलों की सेवा में सतत अभिरत रसिक महानुभावों के सर्वोत्कृष्ट उपासनीय तत्त्व परम रमणीय रसघन असमोद्र्ध्व धाम श्रीवृन्दावन का मैं भावना पूर्वक स्मरण करता हूँ ।

(२)

ब्रह्मा, इन्द्र, शिव सनकादि द्वारा वैदिक मन्त्रों से जिनकी नित्य स्तुति की जाती है, तथा अनिर्वचनीय आनन्दातिरेक से जो अति सरस एवं असमोद्र्ध्व महान् रूप सम्पन्न एवं श्रीयमुनाजी के परम मनोहर कूल (तट) पर अति सुशोभित तथा युगल सरकार श्रीप्रिया--प्रियतम की नित्य लीला विलास का प्रमुख अधिष्ठान है, उस परम ललित रसघन श्रीवृन्दावन धाम का भावनापूर्वक स्मरण करता हूँ ।

(३)

शुक, सारिका, हंस, सारस, चक्रवाक, पारावत आदि विविध पक्षी समूह के सुन्दर सङ्गीतमय मधुर कलरव गान से निरन्तर शब्दायमान एवं विविध वृक्षों पर अवस्थित भ्रमरों की आह्लाददायिनी मनमोहक गुञ्जन से अभिगुञ्जित तथा देववृन्दों द्वारा अनवरत अनुसेवनीय कृपामय रसघन नित्यधाम श्रीवृन्दावन का भावनापूर्वक स्मरण करता हूँ ।

(४)

जहाँ की कदम्ब जम्बू (जामून तमाल कदली चमेली आदि) लता गुल्मों (वृक्षों) की नित्य नव-नव कुञ्ज एवं निकुञ्ज से अनुपम अतुलनीय रमणीयता है, जो युगलकिशोर श्रीश्यामाश्याम के रास--विलास का प्रमुख स्थल है, जो परम रसमय सिन्धु निकेतन एवं मणि-मुक्ता जटित अप्राकृत श्रीहरि राधामाधव की दिव्य क्रीड़ा भूमि रसघन है, उसी श्रीवृन्दावन धाम का भावना पूर्वक स्मरण करता हूँ ।

(५)

कोटि-कोटि चन्द्रमाओं की कान्ति से भी अतिशय कमनीय ललिता विशाखा हरिप्रियादि सखी समूह के परम प्रिय तथा अपने सहज अनुग्रह से संसार संतप्त प्राणियों के संन्ताप राशि को सर्वथा शान्त करने वाले, वेदादि शास्त्रों से अभिवन्दित एवं कुञ्ज उपकुञ्जों की सघनता से जिनकी रमणीयता और भी चित्ताकर्षक है, प्रति गुल्म सेव्यम् अर्थात् गुल्म (वृक्ष) रूप ऋषि मुनि अथच साधन--सिद्धा नित्य सिद्धा सहचरी परिकर द्वारा सेवित रसघन श्रीवृन्दावन का भावना पूर्वक स्मरण करता हूँ ।

(६)

गोलोकधामतिलकं भुविराजमानं
सद्वृन्दसेवितरजःकणशोभमानम् ।
श्रीरङ्गहर्म्यकिरणैरतिमोहनीयं
वृन्दावनं रसघनं हृदि भावयामि ॥

(७)

गोपाङ्गनाभिरनुरागसुरागगेयं
वंशीनिनादरसवारिधिवाणितृप्तम् ।
उन्मत्तबर्हिपिककाकलिकामनोज्ञं
वृन्दावनं रसघनं हृदि भावयामि ॥

(८)

राधासुधारसवृतं मृदुमोहनाङ्गं
गोविन्दधामनवनित्यनिकुञ्जरूपम् ।
प्रेमाब्धिविग्रहमयं परमातिदिव्यं
वृन्दावनं रसघनं हृदि भावयामि ॥

(९)

वृन्दावनाष्टकं स्तोत्रं वृन्दावनरतिप्रदम् ।
राधासर्वेश्वरप्रीत्यै तच्छरणेन निर्मितम् ॥

*

(६)

गोलोकधाम से भी परमोत्कृष्ट सर्वोपरि और निज कृपा द्वारा इस अवनितल पर अवस्थित एवं अति श्रेष्ठ रसिक महानुभावों द्वारा संसेवित दिव्यातिदिव्य परम प्रकाशमान परम दुर्लभ परमपावन रज--कणिका से अति सुशोभित तथा श्रीलाड़िलीलाल की नव नित्य रङ्गमहल की प्रकाशमयी रश्मियों से निखिलान्तःकरण मोहनीय परम रसघन श्रीधाम वृन्दावन का भावना पूर्वक स्मरण करता हूँ ।

(७)

श्रीधाम की सुरम्य शोभा के अवलोकन से उन्मत्त अर्थात् आनन्द--विभोर मयूर कोयल आदि खग वृन्दों की पञ्चम स्वर निर्गता हृदयोल्लासकारिणी रसभरी वाणी के कमनीय कूजन से परम मनोहारी एवं गोविन्द श्रीश्यामसुन्दर की मुरलिध्वनि से जहाँ के प्राणियों को नवजीवन अर्थात् पल-पल में नवोल्लास प्राप्त हो रहा है, तथा जहाँ व्रजाङ्गनाओं द्वारा अनुरागपूर्वक कल--कण्ठ से विविध राग संवलित श्रीश्यामा-श्याम के स्वरूप का वर्णनानुरूप सुन्दर सङ्गीत हो रहा है, उस परम रसमय रसघन श्रीवृन्दावन धाम का भावना पूर्वक स्मरण करता हूँ ।

(८)

जो श्रीश्यामाजू के सुधारस से अभिसिञ्चित परम कोमलाङ्ग, नव नित्य निकुञ्ज-रूप एवं प्रेम-सिन्धु विग्रहरूप परम दिव्य श्रीगोविन्द का धाम है उसी श्रीवृन्दावन का भावना पूर्वक स्मरण करता हूँ ।

(९)

प्रभु की प्रसन्नता के लिए परम पूज्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह श्रीवृन्दावनाष्टक पाठ करने वालों को श्रीवृन्दावनधाम में अनुराग बढाने वाला है ।

□

श्रीराधाष्टकम्

(१)

उपासनीयं शुकनारदाद्यैः
सञ्चिन्तनीयं व्रजगोपगोभिः ।
संसेवनीयं परितः सखीभिः
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(२)

श्रीमाधवेनापि सदाऽभिवंद्यं
सुकोमलं रासरसाभिपूर्णम् ।
देदीप्यमानं सततं निकुञ्जे
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(३)

कलिन्दजातीरविहारलोलं
कृपार्णवं सर्वसुखैकराशिम् ।
निजाऽश्रितानां हृदि भासमानं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(४)

ब्रह्मादिदैवरनुमृग्यमाणं
वेदादिशास्त्रैरुपगीयमानम् ।
रासस्थलीष्वद्भुतलास्यहृद्यं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(५)

अनन्तसौन्दर्यगुणैककोषं
गौराब्जवर्णं कमनीयरूप् ।
काश्मीररागैरनुलिप्यमानं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

श्रीराधाष्टक

(१)

शुक, नारदादि ऋषि मुनि देवर्षियों से जो निरन्तर उपासना किये जाने वाले तथा व्रजमण्डल के गोपवृन्द एवं गो--यूथ से चिन्तन पूर्वक समाराधित तथा निज सहचरी परिकर समूह द्वारा सतत अभिवन्दित केलिरस संस्नाता रसस्वरूपा श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(२)

अखिल रसामृतसारसिन्धुविग्रह निखिलाधार श्यामसुन्दर श्रीमाधव भी जिनके प्रेमार्द्र हृदय से अनवरत सेवाभिरत होकर अपनी कृतार्थता का अनुभव करते हैं, एवं महारास विलास रस से जो अभिपूरित तथा श्रीनित्य--निकुञ्ज धाम में परम प्रकाशमान अत्यन्त सुकोमल श्रीरासेश्वरी रस प्रदायिनी प्रियाजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणकमलों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(३)

श्रीयुग्मरस संचालित पुण्य सलिला कल--कल कल्लोलिनी कालिन्दी (श्रीयमुनादेवी) के परम कमनीय कूल (तट) पर सुन्दर विहरणपूर्वक मधुर चञ्चल तथा सम्पूर्ण आनन्द सिन्धु के एकमात्र अधिष्ठान शरण में समाश्रित होने वाले रसिक भक्तजनों के अन्तर्हृदय में आविर्भूत होकर अपने दिव्य दर्शन प्रदान करने वाले एवं कृपा के अगाध समुद्र श्रीकिशोरीजू श्रीराधिकाजी के युगल चरण--कमलों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(४)

ब्रह्मादिक अनन्त देवों द्वारा जिनका निरन्तर अन्वेषण किया जाता है एवं श्रुति, स्मृति, पुराण, ग्रन्थों तथा जो विविध आचार्य सन्त वाणियों द्वारा महिमा एवं सौन्दर्य माधुर्य लावण्यादि अनिर्वचनीय गुण गरिमा पूर्वक गाये जाते तथा रासस्थली पर नित्य रास-विलास के समय अद्‌भुत नृत्य में परम सुन्दर श्रीलाड़िलीजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(५)

निरतिशय सौन्दर्य-माधुर्य--सौकुमार्य--लावण्य--कारुण्य मार्दवादि अपरिमेय गुणों के आगार केशर आदि परम सौगन्धिक द्रव्यों से अनुलेपित अर्थात् कलापूर्ण चर्चित अरुण कमल के सदृश अरुणिमा लालिमायुक्त अतिसुन्दर श्रीरासविहारिणीजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सदैव स्मरण करता हूँ ।

(६)

वृन्दावने नित्यनिकुञ्जभागे
कदम्बजम्बूविटपान्तराले ।
सार्द्धं मुकुन्देन विराजमानं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(७)

कोटीन्दुलावण्य-प्रकाशराशिं
श्रीखण्डपङ्काङ्कितदर्शनीयम् ।
भक्तेप्सित-स्वाश्रयदानशीलं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(८)

श्रीरङ्गदेवी-ललिता-विशाखा
हरिप्रियाद्यङ्गसखीसमूहैः ।
आराध्यमानं नवकुञ्जमध्ये
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(९)

श्रीराधिकाष्टकं स्तोत्रं पराभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वर-प्रीत्यै तच्छरणेन निर्मितम् ॥

*

(६)

नित्य--निकुञ्जधाम श्रीवृन्दावन के निभृत (एकान्त) स्थान जो कदम्ब जम्बू (जामुन), तमाल, ताल, कदली आदि की नव--निर्मित कुञ्जों के निविड़ प्रान्त मध्य में लीला रसमय प्रेम स्वरूप रसराज गोविन्द श्रीश्यामसुन्दर के संग विराजित श्यामाजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(७)

कोटि--कोटि चन्द्रमाओं के लावण्यमय प्रकाश के एकमात्र आगार, परम शीतल मधुर सुवासित श्रीखण्ड चन्दन से सुन्दर विलेपित तथा शरणागत परम रसिक भावुक भक्तजनों को अनुग्रह पूर्वक दिव्यातिदिव्य समाश्रय प्रदान शील लडैतीजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(८)

नित्य नव--निकुञ्ज में श्रीरङ्गदेवी ललिता विशाखा हरिप्रिया आदि अनन्त नित्य सहचरी सखी परिकर वृन्द द्वारा नित्य समाराधित रास रसविलासिनी वृन्दावनेश्वरी नित्य किशोरी श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(९)

प्रभु की प्रसन्नता के लिये परम पूज्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य विनिर्मित यह श्रीराधिकाष्टक--स्तोत्र पाठ करने वालों को प्रभु की पराभक्ति प्रदान करने वाला है ।

*

श्रीराधाष्टकम्

(१)

उपासनीयं शुकनारदाद्यैः
सञ्चिन्तनीयं व्रजगोपगोभिः ।
संसेवनीयं परितः सखीभिः
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(२)

श्रीमाधवेनापि सदाऽभिवंद्यं
सुकोमलं रासरसाभिपूर्णम् ।
देदीप्यमानं सततं निकुञ्जे
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(३)

कलिन्दजातीरविहारलोलं
कृपार्णवं सर्वसुखैकराशिम् ।
निजाऽश्रितानां हृदि भासमानं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(४)

ब्रह्मादिदैवरनुमृग्यमाणं
वेदादिशास्त्रैरुपगीयमानम् ।
रासस्थलीष्वद्भुतलास्यहृद्यं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(५)

अनन्तसौन्दर्यगुणैककोषं
गौराब्जवर्णं कमनीयरूप् ।
काश्मीररागैरनुलिप्यमानं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

श्रीराधाष्टक

(१)

शुक, नारदादि ऋषि मुनि देवर्षियों से जो निरन्तर उपासना किये जाने वाले तथा व्रजमण्डल के गोपवृन्द एवं गो--यूथ से चिन्तन पूर्वक समाराधित तथा निज सहचरी परिकर समूह द्वारा सतत अभिवन्दित केलिरस संस्नाता रसस्वरूपा श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(२)

अखिल रसामृतसारसिन्धुविग्रह निखिलाधार श्यामसुन्दर श्रीमाधव भी जिनके प्रेमार्द्र हृदय से अनवरत सेवाभिरत होकर अपनी कृतार्थता का अनुभव करते हैं, एवं महारास विलास रस से जो अभिपूरित तथा श्रीनित्य--निकुञ्ज धाम में परम प्रकाशमान अत्यन्त सुकोमल श्रीरासेश्वरी रस प्रदायिनी प्रियाजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणकमलों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(३)

श्रीयुग्मरस संचालित पुण्य सलिला कल--कल कल्लोलिनी कालिन्दी (श्रीयमुनादेवी) के परम कमनीय कूल (तट) पर सुन्दर विहरणपूर्वक मधुर चञ्चल तथा सम्पूर्ण आनन्द सिन्धु के एकमात्र अधिष्ठान शरण में समाश्रित होने वाले रसिक भक्तजनों के अन्तर्हृदय में आविर्भूत होकर अपने दिव्य दर्शन प्रदान करने वाले एवं कृपा के अगाध समुद्र श्रीकिशोरीजू श्रीराधिकाजी के युगल चरण--कमलों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(४)

ब्रह्मादिक अनन्त देवों द्वारा जिनका निरन्तर अन्वेषण किया जाता है एवं श्रुति, स्मृति, पुराण, ग्रन्थों तथा जो विविध आचार्य सन्त वाणियों द्वारा महिमा एवं सौन्दर्य माधुर्य लावण्यादि अनिर्वचनीय गुण गरिमा पूर्वक गाये जाते तथा रासस्थली पर नित्य रास-विलास के समय अद्भुत नृत्य में परम सुन्दर श्रीलाड़िलीजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(५)

निरतिशय सौन्दर्य-माधुर्य--सौकुमार्य--लावण्य--कारुण्य मार्दवादि अपरिमेय गुणों के आगार केशर आदि परम सौगन्धिक द्रव्यों से अनुलेपित अर्थात् कलापूर्ण चर्चित अरुण कमल के सदृश अरुणिमा लालिमायुक्त अतिसुन्दर श्रीरासविहारिणीजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सदैव स्मरण करता हूँ ।

(६)

वृन्दावने नित्यनिकुञ्जभागे
कदम्बजम्बूविटपान्तराले ।
सार्द्धं मुकुन्देन विराजमानं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(७)

कोटीन्दुलावण्य-प्रकाशराशिं
श्रीखण्डपङ्काङ्कितदर्शनीयम् ।
भक्तेप्सित-स्वाश्रयदानशीलं
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(८)

श्रीरङ्गदेवी-ललिता-विशाखा
हरिप्रियाद्यङ्गसखीसमूहैः ।
आराध्यमानं नवकुञ्जमध्ये
स्मरामि राधापदकञ्जयुग्मम् ॥

(९)

श्रीराधिकाष्टकं स्तोत्रं पराभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वर-प्रीत्यै तच्छरणेन निर्मितम् ॥

*

(६)

नित्य--निकुञ्जधाम श्रीवृन्दावन के निभृत (एकान्त) स्थान जो कदम्ब जम्बू (जामुन), तमाल, ताल, कदली आदि की नव--निर्मित कुञ्जों के निविड़ प्रान्त मध्य में लीला रसमय प्रेम स्वरूप रसराज गोविन्द श्रीश्यामसुन्दर के संग विराजित श्यामाजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(७)

कोटि--कोटि चन्द्रमाओं के लावण्यमय प्रकाश के एकमात्र आगार, परम शीतल मधुर सुवासित श्रीखण्ड चन्दन से सुन्दर विलेपित तथा शरणागत परम रसिक भावुक भक्तजनों को अनुग्रह पूर्वक दिव्यातिदिव्य समाश्रय प्रदान शील लडैतीजू श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(८)

नित्य नव--निकुञ्ज में श्रीरङ्गदेवी ललिता विशाखा हरिप्रिया आदि अनन्त नित्य सहचरी सखी परिकर वृन्द द्वारा नित्य समाराधित रास रसविलासिनी वृन्दावनेश्वरी नित्य किशोरी श्रीराधिकाजी के युगल चरणारविन्दों का सर्वदा स्मरण करता हूँ ।

(९)

प्रभु की प्रसन्नता के लिये परम पूज्य जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य विनिर्मित यह श्रीराधिकाष्टक--स्तोत्र पाठ करने वालों को प्रभु की पराभक्ति प्रदान करने वाला है ।

*

श्रीमाधवाष्टकम्

(१)

यमुनापुलिने रसधाम्नि वने
मुरलीललितं लतिकालसितम् ।
प्रभजे प्रियराधिकया प्रियया
सह माधवमञ्चितमालिजनैः ॥

(२)

पिक-कीर-मयूरमनोज्ञ-रव-
श्रवणेन सदा रसहर्षधरम् ।
प्रभजे प्रियराधिकया प्रियया
सह माधवमञ्चितमालिजनैः ॥

(३)

स्मरकोटिकलाब्धिनिरासकरं
रससारसुधारमणं मधुरम् ।
प्रभजे प्रियराधिकया प्रियया
सह माधवमञ्चितमालिजनैः ॥

(४)

वनकेलिकरं रसरासधरं
प्रतिकुञ्जगतं प्रतिपत्रततम् ।
प्रभजे प्रियराधिकया प्रियया
सह माधवमञ्चितमालिजनैः ॥

(५)

रसिकै रसमत्तबुधैः सततं
समुपासितमुत्तम-शास्त्रविदैः ।
प्रभजे प्रियराधिकया प्रियया
सह माधवमञ्चितमालिजनैः ॥

श्रीमाधवाष्टक

(१)

भगवान् श्रीमुकुन्द माधव कलिन्द नन्दिनी श्रीयमुनाजी के सुकोमल पुलिन पर रस--धाम श्रीवृन्दावन में ललित लताओं के मध्य परम सरस--ललित मुरली को अपने मृदुल कर कमलों में धारण किये हुये हैं । ऐसे नित्य सखीवृन्दों से सुशोभित श्रीराधामाधव को हम सदा स्मरण करते हैं ।

(२)

जहाँ श्रीवृन्दावन की दिव्य लताओं पर बैठे हुए पिक-शुक-सारिका मयूर आदि पक्षी समूह की मधुर-मनोहर वाणी श्रवण से जो अत्यन्त पुलकित एवं प्रमुदित है । ऐसे नित्य सहचरीवृन्द से सुशोभित युगलकिशोर श्रीराधामाधव को हम सदा स्मरण करते हैं ।

(३)

जिनकी रूप माधुरी एवं सौन्दर्य की अनोखी छवि का दर्शन कर कोटि--कोटि काम अपने सौन्दर्य दर्प को खो बैठते हैं, श्रीनिकुञ्ज--रस की लोकोत्तर सार-सुधा जिसमें सरावोर हुए अत्यन्त मनोहर मधुर स्वरूप से सतत विराजित हैं । ऐसे दिव्य सहचरियों से सुशोभित श्रीराधामाधव का हम सदा स्मरण करते हैं ।

(४)

जहाँ विपिनराज में श्रीप्रियालाल वन-विहारलीला में नित्य नव-नव रस का आस्वादन करते रहते हैं, और श्रीधाम की योगपीठ रासमण्डल पर रसमय श्रीयुगलकिशोर नित्य रस रास का आयोजन करते रहते हैं, जहाँ नित्यकुञ्ज की लतास्वरूपा सहचरिवृन्दों को सुख प्रदान करने के लिए प्रत्येक कुञ्ज में श्रीनिकुञ्ज विहारी--विहारिणी पधारते रहते हैं, तब उन कुञ्ज लताओं के प्रत्येक पत्र जिह्वा बनकर बड़े प्रेम से भाव--विभोर होकर श्रीराधाकृष्ण की जय हो, जय हो, जय हो, ऐसे उच्च स्वर से पुकारने लगते हैं प्रत्येक पत्र में आप ही व्याप्त रहते हो । ऐसे नित्य सखी वृन्दों से सुशोभित श्रीराधामाधव का हम सतत स्मरण करते हैं ।

(५)

निगमागम, श्रुति-स्मृति-तन्त्र--पुराणादि उत्तमोत्तम शास्त्रों के ज्ञाता श्रीयुगल रस में अहर्निश मस्त छके हुए प्रवीण रसिकजन श्रीयुगललाल--ललना की निरन्तर उपासना करते रहते हैं । ऐसे नित्य सखी परिकर से सुशोभित श्रीराधामाधव का हम सदा चिन्तन करते हैं ।

(६)

मणिहारधरं शिखिपिच्छवरं
विलसन्नव-हीरक-रत्नयुतम् ।
प्रभजे प्रियराधिकया प्रियया
सह माधवमञ्चितमालिजनैः ।।

(७)

रसपूर्ण महोदधिसारघनं
विपिनाऽवनि-कुञ्ज-निकुञ्ज-वनम् । ✻
प्रभजे प्रियराधिकया प्रियया
सह माधवमञ्चितमालिजनैः ।।

(८)

नवमेघनिभं नवकान्तियुतं
नवकञ्जमुखं नवनित्यनवम् ।
प्रभजे प्रियराधिकया प्रियया
सह माधवमञ्चितमालिजनैः ।।

(९)

पराभक्तिप्रदं दिव्यं मधुरं माधवाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

✻ अधिष्ठानं चक्रपुरप्रभावाध्यासनेष्वपि ।
रत्नं स्वजातिश्रेष्ठेऽपि वने सलिलकानने ।।
(अमरकोष का० ३ व० ३ श्लोक १२६)
अमरकोष वचनानुसार यहाँ वन का अर्थ अधिष्ठान परक है ।

(६)

जिन श्रीयुगलकिशोर के मधुर वक्षस्थल पर वैजयन्ती--वनमाला के साथ-साथ रत्नजटित कौस्तुभादि मणिहार विराजित हैं, जो अपने श्रीमस्तक पर मयूरपिच्छ धारण किये हैं, और नूतन हीरा, पन्ना आदि विशिष्टरत्नों के आभूषण भी सुशोभित हैं, ऐसे श्रीधाम वृन्दावन में अनन्त सखिवृन्दों से सुशोभित श्रीराधामाधव का हम सदा चिन्तन करते हैं ।

(७)

जिन श्रीलाड़िलीलाल युगलवर का महा रस-सिन्धु के सार घनीभूत--रसघन, मङ्गलमय श्रीविग्रह है, और जो विपिनराज अपनी रसीली भूमि पर अनेक सघन-दिव्य-कुञ्ज--निकुञ्जों के अधिष्ठान रूप हैं । ऐसे सहचरी वृन्दों से सुशोभित श्रीराधामाधव का हम सदा स्मरण करते हैं ।

(८)

रसिक जन सर्वस्व श्रीश्यामा-विहारी ठाकुर नव जलधर के सदृश श्याम है, और प्रतिपल नवीन-नवीन कान्ति को धारण किये रहते हैं, तथा नव विकसित कमल के समान प्रफुल्लित जिनके श्रीमुख की शोभा है, जो अपने प्रतिपल नवनवायमान स्वरूप से विराजित हैं ऐसे सहचरी समूह से सुशोभित श्रीराधामाधव का हम सतत चिन्तन करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विरचित दिव्य श्रीराधामाधवाष्टक के पठनमात्र से भगवान् श्रीराधामाधव प्रसन्न होकर अपनी पराभक्ति प्रदान करते हैं ।

□

श्रीराधामाधवाष्टकम्

(१)

विधिभवसुरवृन्दैः सर्वदाध्यानमृग्यः
कमलकुसुमकुञ्जे शोभितो युग्मरूपः ।
अतिशयकमनीयः कञ्जनेत्रो व्रजेशः
स्फुरतु मनसि राधामाधवः केलिसिन्धुः ॥

(२)

विहगनिनदरम्ये भानुजादिव्यकूले
व्रततिगहनकुञ्जे.भृङ्गगुञ्जाभिरामे ।
नवरसनिधिवृन्दारण्यधाम्नि प्रभाते
स्फुरतु मनसि राधामाधवः केलिसिन्धुः ॥

(३)

रसिकसुजनचित्ते नित्यदा भासमानः
सुरभितवनमालाऽलंकृतः पूर्णकामः ।
भवजलधितरङ्गैर्व्याकुलान्त्रायमाणः
स्फुरतु मनसि राधामाधवः केलिसिन्धुः ॥

(४)

निखिलभुवनचन्द्रो रासलीलाविहारी
सखिपरिकरमध्ये शोभितः श्रीनिकुञ्जे ।
अनुपम-मणिमुक्ताकान्तिकोटिप्रकाशे
स्फुरतु मनसि राधामाधवः केलिसिन्धुः ॥

(५)

प्रणतजनकृपालुर्भक्तिलभ्यो दयालू
रुचिरमुखसरोजोऽनन्तसर्वेश्वरो वै ।
कनकमुकुटकान्त्या कोटिकन्दर्पहारी
स्फुरतु मनसि राधामाधवः केलिसिन्धुः ॥

श्रीराधामाधवाष्टक

(१)

ब्रह्मा शिव प्रभृति समस्त देव वृन्दों द्वारा सर्वदा ध्यानगम्य कमल पुष्पों की कुञ्ज में परम शोभायमान अत्यन्त मनोहरयुगलस्वरूप व्रजपति लीलासिन्धु भगवान् श्रीराधामाधव हमारे मन में स्फुरित हों ।

(२)

विविध पक्षी-समूह के मधुर कलरव से अतिरमणीय सूर्यसुता श्रीयमुनाजी के मनोहर तट पर ललित-लताओं के गहन कुञ्ज में भ्रमरगणों की सुन्दर गुञ्जार से युक्त नव-नवायमान रसनिकेतन श्रीवृन्दावनधाम की प्रभात वेला में लीला-वारिधि भगवान् श्रीराधामाधव हमारे अन्तःकरण में प्रादुर्भूत हों ।

(३)

रसिकजनों के चित्त में नित्य प्रकाशमान सुगन्धित बनमाला से सुशोभित पूर्णकाम तथा संसार सागर की प्रबल तरंगों से व्याकुल जनों की रक्षा करने वाले लीलार्णव भगवान् श्रीराधामाधव हमारे मन में प्रकट हों ।

(४)

सम्पूर्ण भुवनकोश को परमाह्लाद करने में चन्द्र स्वरूप श्रीरासलीलाविहारी श्रीनिकुञ्ज में सखीपरिकर के मध्य सुशोभित अनुपम मणि-मुक्ताओं की कोटि छवि सम प्रकाशमान लीलासागर भगवान् श्रीराधामाधव हमारे मानस में आविर्भूत हों ।

(५)

शरणागत जनों पर कृपा करने वाले भक्ति द्वारा जिनके दर्शन सुलभ परम दयालु जिन श्रीप्रभु के मुखारविन्द की शोभा अत्यन्त मनोहर है, ऐसे अनन्त अनादि सबके ईश्वर अपने स्वर्ण मुकुट की शोभा से कोटि-कोटि कामदेवों को तिरस्कृत करने वाले लीला-समुद्र भगवान् श्रीराधामाधव हमारे हृदय में प्रकाशित हों ।

(६)

व्रजनवललनाभिर्नित्यगीतो रसेशो
धवलनलिनहस्तो भक्तभावैः सुबद्धः ।
रसिकहृदयवाणीस्तूयमानः सुखाब्धिः
स्फुरतु मनसि राधामाधवः केलिसिन्धुः ॥

(७)

श्रुतिवचनकदम्बैः सम्प्रगीतो भवाऽऽत्मा
बुधविमलमनीषाऽप्राप्तरूपोऽखिलेशः ।
स्मृति-निगम-पुराणैरुत्तमैरीड्यमानः
स्फुरतु मनसि राधामाधवः केलिसिन्धुः ॥

(८)

नवजलधरकान्तो वेणुहस्तारविन्दः
सुभगमधुरधाम श्रीहरिर्भावगम्यः ।
विकिर-निकर-गुञ्जैरञ्चितः कुञ्जपुञ्जे
स्फुरतु मनसि राधामाधवः केलिसिन्धुः ॥

(९)

पराभक्तिप्रदं स्तोत्रं श्रीराधामाधवाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

व्रज नवयुवतियों द्वारा नित्य गीयमान रसाधिप करारविन्द में श्वेत कमल पुष्प धारण किये हुए भक्तों की भावना से भली प्रकार बंधे हुये रसिकजनों के हृदय से स्फुरित वाणी द्वारा स्तुति किये जाने वाले सुख--सागर क्रीड़ासिन्धु भगवान् श्रीराधामाधव हमारे मन मन्दिर में उदित हों ।

(७)

श्रुति (वेद) वाक्य समूहों द्वारा सम्यक् (भली) प्रकार से गीयमान जगदात्मा तथा निर्मल बुद्धि वाले ज्ञानीजनों द्वारा भी दुर्ज्ञेय अखिलेश्वर एवं वेद-पुराण-स्मृति आदि उत्तमोत्तम शास्त्रों द्वारा स्तुति किये जाने वाले क्रीड़ा सागर भगवान् श्रीराधामाधव हमारे मन में प्रकाशमान हों ।

(८)

नूतन सजल मेघ के समान परम कान्तिमय हस्त कमल में वेणु धारण किये षडैश्वर्यादि श्रेष्ठ गुण सम्पन्न तथा सौन्दर्य, माधुर्य, कारुण्य, मार्दवादि मधुर गुणों के धाम भावगम्य श्रीहरि एवं शुक-पिक-खग वृन्दों द्वारा परिसेवित श्रीनिकुञ्ज के पुञ्ज (समूह) में लीला समुद्र भगवान् श्रीराधामाधव हमारे मन में उदित हों ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा निर्मित यह श्रीराधामाधवाष्टक भक्तजनों के लिये परा (प्रेमा) भक्ति प्रदान करने वाला है ।

□

श्रीवृषभानुसुताष्टकम्

(१)

वृषभानुसुता श्रुति-तन्त्रतता
रसकेलिरता रससारसिता ।
रसरासमसखीजनसंवलिता
जयतीशधृता प्रतिकुञ्जमिता ॥

(२)

शशिकोटिकरा रतिकोटिवरा
हरिवेणुहरा पिककण्ठधरा ।
रसधामसुधारसदानपरा
वृषभानुसुता हृदि संस्फुरतु ॥

(३)

नवमङ्गलधामनिकुञ्जवने
हरिवामसुशोभितनित्यनवा ।
अरविन्दकराऽमितमोदभरा
वृषभानुसुता सततं जयति ॥

(४)

अतिमञ्जुलकेलिकलाकुशला
खगवृन्दगिरा परिगीतगुणा ।
परिपूर्णतमा सुषमागरिमा
वृषभानुसुता परिपश्यतु माम् ॥

(५)

रविजारमणीय-गभीरतटे
नववेणुवटे विहसन्त्यटति ।
सुसखीनिकरैः सह धामवने
वृषभानुसुता रसकृष्णरता ॥

श्रीवृषभानुसुताष्टक

(१)

श्रुति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि समग्र शास्त्र जिनकी लोकोत्तर दिव्यातिदिव्य महिमा का विशदवर्णन करते हैं एवं अतिशय अनुपम परम रसमयी विविध लीलाओं में संलग्न रससारघनीभूत सिता अर्थात्--मिश्री ईक्षुरस से निर्मित शक्कर के द्वारा बनी हुई मिश्री जिस प्रकार रस की सार स्वरूप है, ठीक उसी प्रकार श्रीस्वामिनीजी अनिर्वचनीय मंजुल मधुर छविरूप में रसघन स्वरूप हैं रसरास परायण नित्यनव सखीजनों से परिवेष्टित और श्रीधाम (वृन्दावन) स्थित प्रति कुञ्ज में विराजित तथा सर्वेश्वर श्रीश्याम सुन्दर के नित्य हृदय स्थित, ऐसी परम लावण्यमयी श्रीवृषभानुनन्दिनी (श्रीराधिकाजी) की सदा जय हो ।

(२)

कोटि-कोटि चन्द्रकिरणों से भी अत्यधिक जिनकी सुन्दर प्रभा है तथा करोड़ों रति (काम-पत्नियों) से अधिक सौन्दर्य है जिनका एवं अपने प्रियतम श्रीवृन्दावनविहारी की ललितवंशी को रासलीला के प्रसङ्ग में चुराकर उन चतुर शिरोमणि को जिन्होंने चकित कर दिया और कोकिल (कोयल) से भी अतिशय सुन्दर जिनकी रसभरी वाणी है, रसमय श्रीधाम वृन्दावन सुधारस दान में परायण, ऐसी श्रीवृषभानुनन्दिनी (श्रीकिशोरीजी) का हमारे हृदय में आविर्भाव हों ।

(३)

नित्य नव-मङ्गलस्वरूप श्रीधाम (वृन्दावन) के निकुञ्जवनों में श्रीनिकुञ्जविहारी वामाङ्ग में दिव्य नित्य-नवरूप से सुशोभित और अपने करकमलों में कमल पुष्प धारण किये हुए असीम दिव्यानन्द-सुधा से परिपूर्ण ऐसी श्रीवृषभानु दुलारी (श्रीराधिकाजी) की नित्य निरन्तर जय हो ।

(४)

अत्यन्त रमणीय रसमयी विविध लीलाओं में परम कुशल तथा शुकपिकादि पक्षियों के मधुर-मधुर गुञ्जार द्वारा हो रहा है गुणगान जिनका एवं अपनी अत्यन्त दिव्य प्रभा से युक्त परिपूर्णतमा श्रीवृषभानु लाडिली (श्रीराधिकाजी) अपनी अहैतुकी कृपामयी दृष्टि से मेरी ओर निहारें ।

(५)

श्रीधाम-वृन्दावन में श्रीयमुनाजी के गम्भीर सुरम्य तट के समीप श्रीवंशीवट पर सखीजन-समूह के साथ प्रियतम श्रीश्यामसुन्दर परायण अलवेली श्रीवृषभानुनन्दिनी (श्रीराधिकाजी) मधुर हास्य युक्त होकर विहार कर रही हैं ।

(६)

करुणाऽमृतसिन्धुभरा मधुरा
रसिकैरुपसेवितहर्षधरा ।
प्रियमाधवचञ्चलचित्तहरा
वृषभानुसुता जयतीह मुदा ॥

(७)

सह राधिकया प्रियया हरिणा
प्रियनर्तनमाचरितं हि यया ।
अथ सा निहतस्मरसर्वशरा
वृषभानुसता विपिने व्रजति ॥

(८)

निजहस्तसरोजसदावरदा
निजकान्तिमुकुन्दमहासुखदा ।
रससारमहार्णवपूर्णभरा
जयतीह सदा वृषभानुसुता ॥

(९)

राधाभक्तिप्रदं दिव्यं वृषभानुसुताष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

करुणामृत सिन्धु-स्वरूपा अति रमणीय रसमयी रसिकेश्वरी श्रीकिशोरीजी जो अनन्य रसिकजनों द्वारा उपासना किये जाने पर अत्यन्त मुदित एवं प्रियतम श्रीमाधवमुकुन्द के चंचल चित्त को हरण करती हुई श्रीवृषभानुलड़ैती (श्रीराधिकाजी) की प्रसन्नता पूर्वक जय हो ।

(७)

अपने प्रियतम प्राणवल्लभ भगवान् श्रीश्यामसुन्दर के साथ सुन्दर नृत्य करती हुई तथा महारास के अवसर पर अभिमान पूर्वक आये हुए रति-पति कामदेव के समग्र वाणों को जिन्होंने हतप्रभ कर दिया है ऐसी श्रीवृषभानुनन्दिनी (श्रीराधिकाजी) श्रीधाम (वृन्दावन) में विहार कर रही हैं ।

(८)

जिनके हस्त-कमल की मुद्रा सदा ही भक्तजनों को अभय प्रदान करने वाली है तथा अपने कान्तिमय दिव्य स्वरूप के द्वारा प्रियतम मुकुन्द को सदा सुख देने वाली, रससार सिन्धु से परिपूर्ण ऐसी श्रीवृषभानुकिशोरी (श्रीराधिकाजी) की सदा- सर्वदा जय हो ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह परमदिव्य श्रीवृषभानुसुताष्टक नित्य पाठ करने से श्रीराधिकाजी की परा (प्रेमा) भक्ति प्रदान करने वाला है ।

*

श्रीव्रजराजसुताष्टकम्

(१)

व्रजकुञ्जनिकुञ्जसुपुञ्जतले
खगवृन्दसुगुञ्जसुरम्यवने ।
व्रजराजसुतो व्रजगोपगणैः
सह याति सदा नववेणुधरः ॥

(२)

यमुनापुलिने कमनीयवने
शुक-कोकिलकूजितचारुतमे ।
कदलीदलकुञ्जितसान्द्रसिते
व्रजतीह सदा व्रजभूपसुतः ॥

(३)

रसकेलिपरो नवनीतहरः
नवकुण्डलकान्तिमहारुचिरः ।
सखिमण्डलमञ्जुलनृत्यकरो-
व्रजभूमिवने हरिरेति वरः ॥

(४)

सह राधिकया व्रजनन्दसुतो-
नवकुञ्जवने शिखिपिच्छयुतः ।
अभिगच्छति केलिकलाकुशलः
स्मरकोटिकलारतिमानहरः ॥

(५)

मधुरातिमहामधुरां विपिने
मणिमौक्तिकभाकरमञ्जुतमे ।
मधुरं मधुरं परिपश्यति तां
वृषभानुसुतां हरिरब्जमुखः ॥

श्रीव्रजराजसुताष्टक

(१)

पक्षी समूह की सुमधुर गुञ्जार से परम रमणीय श्रीव्रजवृन्दावन की सघन कुञ्ज निकुञ्जो में सुन्दर वेणु धारण किये हुये श्रीनन्दनन्दन व्रजगोपगणों के साथ सदैव विहार करते हैं ।

(२)

श्रीयमुनाजी के पुलिन में शुक-कोकिलादि खग वृन्दों के मनोहर कलरव से युक्त परम शान्त सघन कदली कुञ्ज के सुन्दर वन में व्रजराजसुत (नन्दनन्दन) श्रीश्यामसुन्दर सदा विचरण करते हैं ।

(३)

रसमयी लीलाओं में परायण तथा कुण्डलों की सुमनोहर शोभा से युक्त अपने परम प्रिय सखा मण्डल में नृत्य करते हुये लीला पुरुषोत्तम भगवान् माखन चोर श्रीहरि व्रजवसुन्धरा के वन प्रदेश में पादार्पण कर रहे हैं ।

(४)

कोटि-कोटि कामदेवों की विविध कुशल कलाओं को एवं कामदेव पत्नी रति के अभिमान को हरने में परम प्रवीण नानाविध क्रीड़ा कलाओं में अति चतुर व्रजेन्द्र सूनु (श्रीनन्दनन्दन) मोर मुकुट धारण किये हुये नित्य नव-नवायमान निकुञ्जों में श्रीराधिकाजी के साथ पधार रहे हैं ।

(५)

मणि-मुक्तादि की प्रभा से परम मनोहर विपिनराज श्रीवृन्दावन में मधुरातिमधुर (परमाह्लादिनी शक्ति) वृषभानुनन्दिनी उन श्रीराधिकाजी को कमलमुख भगवान् श्रीहरि मीठी-मीठी चितवन पूर्वक चारों ओर से निहार रहे हैं ।

(६)

व्रजधेनुखुरोत्थितरेणुधरो-
व्रजधामधराकणसिक्तमुखः ।
व्रजकुञ्जविहारपरः सुभगो-
व्रजराजसुतो जयतीह वने ॥

(७)

रसवारिधिदिव्यसुधाचषकै-
रसिकैरतिभावभरैर्मधुरैः ।
सततं समुपास्य इनो जगतो-
व्रजरञ्जनगोपसखो जयति ॥

(८)

नवकुन्दपरागसुगन्धसुधा-
रसपानपरैर्भ्रमरैरनिशम् ।
रसिकैः समुपासितदिव्यवपु-
र्व्रजराजसुतो जयतीह सदा ॥

(९)

व्रजभक्तिप्रदं पुण्यं व्रजराजसुताष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

व्रज-धेनुओं के खुरों से उठी हुई व्रज वसुन्धरा की पवित्र धूलि से धूसरित (सुशोभित) हैं और व्रजधाम की दिव्य भूमि की पवित्र धूलि (रजः कण) जिनके मुख मण्डल पर विराजमान है अथवा यों कहें जब सखा मण्डल के साथ आप क्रीड़ा करते हुए जब मृद् भक्षण करते हैं और माता यशोदा को समग्र ब्रह्माण्ड का दर्शन कराते हैं ऐसे वे भुवनमोहन श्यामसुन्दर श्रीमुख में व्रज मृत्तिका धारण किये हुए कुञ्ज विहार परायण परम ऐश्वर्यशाली व्रजराज सुत श्रीकृष्णचन्द्र उनकी श्रीव्रज वृन्दावन में सदा ही जय हो ।

(७)

रस सिन्धु के दिव्यातिदिव्य सुधारस का पान करने वाले महा मधुर भाव भरित रसिक जनों द्वारा निरन्तर समुपासित जगत्पति व्रज को आनन्द देने वाले गोप सखा भगवान् श्रीकृष्ण की सर्वदा जय हो ।

(८)

नूतन खिले हुए कुन्द पुष्प के पराग सुगन्ध सुधारस को पीने वाले रसिक भ्रमर गणों द्वारा अथवा नित्य नवनवायमान श्रीमुकुन्द के पदमकरन्द सुधा रस लोलुप भ्रमर रूप रसिकों से निरन्तर सुसेव्यमान दिव्यदेहधारी श्रीव्रजराज सुवन की सदा ही जय हो ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह परम दिव्य श्रीव्रजराजसुताष्टक (नित्यपाठ करने वाले भक्तजनों को) व्रज भक्ति रस प्रदान करने वाला है ।

*

श्रीसर्वेश्वराष्टकम्

(१)

सनन्दनाद्यैः परिसेविताय
युग्मस्वरूपेण विराजिताय ।
चक्राङ्कितायाऽतिमनोहराय
नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥

(२)

श्रीनारदान्तर्हृदि संस्थिताय
मुनीन्द्रनिम्बार्कसुपूजिताय ।
सौन्दर्यलावण्यगुणार्णवाय
नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥

(३)

केशेन्द्रदेवैरभिवन्दिताय
गोपाङ्गनागोकुलजीवनाय ।
निजाश्रिताऽतङ्कनिवर्तकाय
नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥

(४)

राधाहृदागारनिमज्जिताय
निकुञ्जलीलारतिवर्द्धकाय ।
कालिन्दिकूले रसलासिताय
नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥

(५)

वृन्दावनश्रीक्षणहर्षिताय
कदम्बकुञ्जान्तरशोभिताय ।
सखीसहस्रैरनुरञ्जिताय
नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ॥

श्रीसर्वेश्वराष्टक

(१)

श्रीसनकादि महर्षियों के संसेव्य युग्मस्वरूप अर्थात् श्रीराधामाधव रूप से विराजित परम कमनीय दक्षिणावर्त चक्र से युक्त अति मनोहर श्यामल श्रीशालग्राम विग्रहरूप माधव श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमस्कार ।

(२)

भक्ति-रस मुकुटमणि देवर्षिवर्य श्रीनारद भगवान् के अन्तर हृदय में जिनका सतत निवास है, एवं श्रीसुदर्शन चक्रावतार आद्याचार्य-प्रवर भगवान् श्रीनिम्बार्क द्वारा जो निरन्तर प्रपूजित हैं, अर्थात् क्रमशः श्रीसनकादि भगवान् से श्रीनारद भगवान् को और इन्हीं देवर्षि द्वारा श्रीनिम्बार्क भगवान् को प्राप्त हैं, सौन्दर्य-लावण्यादि निखिल गुण समूह के अर्णव (समुद्र) अर्थात् अधिष्ठान है, ऐसे परमोपास्य भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमस्कार ।

(३)

ब्रह्मा, शिव, इन्द्रादि देवों द्वारा नित्य अभिवन्दित व्रजगोपियों एवं व्रज गो-समूह किंवा गोकुल के प्राणधन जीवन निज चरणारविन्द समाश्रित जनों के समस्त भय निवारक परमाराध्य श्रीप्रभु को नमस्कार ।

(४)

परमाह्लादिनीशक्ति वृन्दावनेश्वरी नित्य किशोरी सर्वेश्वरी श्रीराधिकाजी (प्रियाजी) के हृदय (अन्तः) स्थल से समुद्भुत रस-सिन्धु में निमज्जित अर्थात् अवगाहन पूर्वक अपने आपको विलसित करने वाले नित्य निकुञ्ज में नित्य नव लीला रति-विलास के सम्बर्द्धक पुण्य सलिला कल-कल कल्लोलिनी श्रीयमुना के परम रमणीय परम कमनीय कूल पर केलि-रासोल्लास में निमग्न रहने वाले परम ध्येय श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमस्कार ।

(५)

सकल धाम शिरोमणि श्रीवृन्दावन की दिव्यातिदिव्य अति मनोहर कोटीन्दु कान्ति विनिन्दक अनिर्वचनीय शोभा के अवलोकन से परम प्रमुदित तथा विविध कदम्ब कुञ्ज राशि के मध्यस्थल में सुशोभित अनन्त सहचरी परिकरवृन्द द्वारा नाना लीला-विलास से अनुरञ्जित परम प्राप्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमस्कार ।

(६)

नन्दात्मजायाऽखिलमोहनाय
व्रजाङ्गनाराध्यशुचिस्मिताय ।
कृष्णाय पूर्णाय सुकोमलाय
नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।

(७)

वंशीरवाऽकर्षितश्रीवनाय
हैयङ्गवीनाऽशननिर्गताय ।
श्रीरासलीलारससंप्लुताय
नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।

(८)

गोवृन्दचर्यारतमानसाय
वेदान्तवेद्याय सुलोचनाय ।
संसारदावानलमोचनाय
नमोऽस्तु सर्वेश्वर-माधवाय ।।

(९)

सर्वेश्वराष्टकं स्तोत्रं भक्ताभीष्टप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

*

(६)

निरतिशय सौन्दर्य-माधुर्य-लावण्यादि अनन्त कल्याण गुण समूह से निखिल चेतनाचेतन को विमुग्ध करने वाले व्रजाङ्गनाराध्य परम मनोहर मन्दस्मित एवं पूर्ण पुरुषोत्तम अति सुकोमल विग्रह आनन्दकन्द नन्दनन्दन श्रीकृष्ण भगवान् सर्वेश्वर प्रभु को नमस्कार ।

(७)

अपनी परम प्रिय बंशी की अति विमुग्धकारी मधुर ध्वनि से समस्त श्रीवृन्दावन एवं श्रीवृन्दावन के सम्पूर्ण निज परिकर को अपनी ओर आकर्षित कर स्तम्भित करने वाले व्रजाङ्गनाओं द्वारा प्रेमोल्लास पूर्वक सद्यः मथा हुआ अति सुस्वादु अति चिक्कन अति मनोहर नवनीत (सद-लोनी माखन) के आस्वादन के लिये नन्द-गृह प्राङ्गण से गोपाङ्गनागृह के लिये मङ्गल गमन करने वाले तथा अपनी परम दिव्य, परम ललित, परम मोदकारी अनिर्वचनीय रसमयी रासलीला के असमोर्ध्व रससिन्धु में अवगाहन करने वाले सर्वाराध्य सर्व सुखसागर श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमस्कार ।

(८)

पद्मगन्धा आदि अनेकानेक धेनु यूथ (गायों के समूह) को अपनी चारु चातुरी द्वारा श्रीवृन्दावन के निकट यमुनाकूल देशवर्ती परम रम्य वनोपवनों में नाना गोपगणों के साथ सतत उन्हें विचरण कराने एवं उनकी विविध प्रकार से तृण कवलादि प्रदान पूर्वक परिचर्या संलग्न तथा वेद आदि शास्त्रों के अनुशीलन द्वारा जिनके दिव्य स्वरूप राशि का अवबोध हो, एवं अपने कृपा-कटाक्ष निक्षेप से संसार दावानल की भीषण व्याधिग्रस्त प्राणियों को समुद्धृत करने वाले अकारण करुणावरुणालय श्रीसर्वेश्वर प्रभु को नमस्कार ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह श्रीसर्वेश्वराष्टक स्तोत्र भक्तों को अभीष्ट प्रदान करने वाला है ।

*

श्रीसर्वेश्वर प्रातः स्तोत्रम्

(१)

ब्रह्मेन्द्रवृन्दारकवन्दिताय
वृन्दाटवीधामविराजिताय ।
सर्वेश्वराय श्रुतिगोचराय
प्रातर्नमस्ते प्रणतप्रियाय ॥

(२)

सनत्कुमारादिकसेविताय
देवर्षि-निम्बार्कसमर्चिताय ।
सर्वेश्वराय श्रुतिगोचराय
प्रातर्नमस्ते प्रणतप्रियाय ॥

(३)

श्रीराधिकावल्लभ माधवाय
रङ्गाऽऽदिसख्यावलिरञ्जिताय ।
सर्वेश्वराय श्रुतिगोचराय
प्रातर्नमस्ते प्रणतप्रियाय ॥

(४)

अनन्तचिन्मङ्गलविग्रहाय
सर्वार्थविद्यावरसम्प्रदाय ।
सर्वेश्वराय श्रुतिगोचराय
प्रातर्नमस्ते प्रणतप्रियाय ॥

(५)

प्रातः स्तोत्रं सुधापूर्णं सर्वेश्वर-प्रभोरिदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

श्रीसर्वेश्वर-प्रातः स्तोत्र

(१)

ब्रह्मा, इन्द्र, आदि देवताओं से वन्दित, श्रीधाम वृन्दावन में विराजमान, वेद के विषय, प्रणत (शरणागत) जनों के प्रिय, हे सर्वेश्वर प्रभो ! आपको मैं प्रभात में नमन (प्रणाम) करता हूँ ।

(२)

ब्रह्मा के मानस पुत्र, नित्यमुक्त, सम्प्रदाय प्रवर्तक श्रीसनक, सनन्दन, सनातन, सनत्कुमार से संसेवित, मुग्धा सखीरूप देवर्षि श्रीनारदजी एवं श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् द्वारा पूजित ! वेदों में वर्णित, शरणागतजनों के प्रिय ! हे श्रीसर्वेश्वर प्रभो ! आपको मैं प्रभात काल में प्रणाम करता हूँ ।

(३)

श्रीराधामाधव युगलस्वरूप, श्रीरङ्गदेवीजी आदि अङ्गजा नित्य सहचरियों से सुशोभित, श्रुतियों के विषय, शरणागत-जनप्रिय, हे श्रीसर्वेश्वर प्रभो ! आपको मैं प्रभातकाल में प्रणाम करता हूँ ।

(४)

अनन्तचिन्मय व मङ्गलमय श्रीविग्रहवाले, सभी प्रकार के अर्थ (मनोरथ) तथा विद्या का वर देने वाले श्रुतिगोचर, प्रणतप्रिय, हे श्रीसर्वेश्वर प्रभो ! आपको मैं प्रभातकाल में प्रणाम करता हूँ ।

(५)

रसरूप सर्वेश्वर प्रभु के प्रातः स्मरण स्तोत्र की आचार्यश्री द्वारा जो रचना हुई वह नित्य-पठनीय है ।

□

श्रीसर्वेश्वर-प्रातः स्तवः

(१)

कारुण्यसिन्धुं सनकादिसेव्यं
देवर्षिवर्येण सदाऽभिवन्द्यम् ।
आचार्यनिम्बार्क-समर्चनीयं
सर्वेश्वरं नौमि नवप्रभाते ॥

(२)

श्रीरङ्गदेवी-ललिता-विशाखा
हरिप्रियाऽऽदिस्वसखीसमाजैः ।
प्रवोध्यमानं स्तवपाठघोषैः
सर्वेश्वरं नौमि नवप्रभाते ॥

(३)

राधासुधासिञ्चितदिव्यकान्तिं
लीलाविलासेन विकीर्णकेशम् ।
आल्यावलीनित्यसुदर्शनीयं
सर्वेश्वरं नौमि नवप्रभाते ॥

(४)

नेत्राऽञ्जनस्खालनशोभमान-
कपोलकोषं रसिकैरुपास्यम् ।
युग्मस्वरूपं मधुरं मनोज्ञं
सर्वेश्वरं नौमि नवप्रभाते ॥

श्रीसर्वेश्वर प्रातः स्तव

(१)

अकारण करुणा के सागर, सनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार के परमसेव्य, देवर्षिवर्य श्रीनारदजी द्वारा निरन्तर अभिवन्दित, श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के सर्वाराध्य परमइष्ट श्रीसर्वेश्वर प्रभु की इस नवप्रभात की मङ्गलमयी दिव्यवेला में अभिवन्दना करता हूँ ।

(२)

श्रीरङ्गदेवी-ललिता-विशाखा-हरिप्रियादिक अपनी नित्यनिकुञ्ज सहचरी जिनके वीणा-मृदङ्गादि विविध-मधुर वाद्यवृन्द के निनाद, माङ्गलिक स्तवगान एवं सरस पदावली की परममनोहारी ध्वनि से जगाये गये, शयनकुञ्ज में विराजित श्रीसर्वेश्वर प्रभु के युगलपादपद्मों में दिव्य नवप्रभात के समय अभिनमन (प्रणाम) करता हूँ ।

(३)

अपनी आह्लादिनी प्रियतमा रासेश्वरी श्रीराधिकाजी के दिव्यप्रेमाऽमृत से अभिसिञ्चित होने से जिनकी शोभा और भी परमलावण्यमयी बन गयी है, रासरसविलास से इतस्ततः बिखरी हुई है अलकावली (केशराशि) जिनकी ऐसे उन अगणित सखियों से अतिशय शोभासम्पन्न अतुल सौन्दर्यमहार्णव भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु के इस सतत नवनवायमान प्रातःकाल के स्वर्णिम अवसर पर अपनी कोटि-कोटि प्रणति समर्पित करता हूँ ।

(४)

युगलनयनकमलों के स्खलित (ढलके हुए) श्याम कज्जल से अद्‌भुत शोभायमान है कपोल-मण्डल जिनके ऐसे रसिकजनों के परमोपास्य अर्थात् श्रीप्रभु के इस अतिविलक्षण मुखचन्द्ररूपमाधुरी का जो अनवरत पान करते हैं । एतादृश महाकमनीय मधुरातिमधुर युगलस्वरूप श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु को मैं नवप्रभात की इस पावन वेला में पुनः पुनः प्रणमाञ्जलि समर्पित करता हूँ ।

(५)

केशेन्द्रकीर्त्यं श्रुतिमृग्यमाणं
कीराङ्गना-कोकिलशब्दगीतम् ।
वृन्दावने दिव्यनिकुञ्जहर्म्ये
सर्वेश्वरं नौमि नवप्रभाते ॥

(६)

सर्वेश्वरस्तवः पुण्यः सर्वेश्वररतिप्रदः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ॥

(५)

ब्रह्मा, शिव, इन्द्रादि देववृन्द जिनके यशोगान में सदा निरत रहते हैं, वेद भी जिनका निरन्तर अन्वेषण (खोज) करने में संलग्न हैं, शुक, सारिका, कोकिल, मयूर (तोता, मैना, कोयल, मोर) प्रभृति नाना पक्षीसमूह के अति आह्लाददायक मनोरम कलगीत द्वारा जिनका गुणगान होता है, श्रीवृन्दावन के नित्यनिकुञ्जमहल में विराजमान उन सर्वाराध्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु को इस परम नव पुण्य प्रभातवेला में अभिनमन करता हूँ ।

(६)

जिसके पठन मनन से युगल सरकार श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के चरणारविन्दों में दिव्य अनुराग होता है, ऐसे इस परमपुण्य श्रीसर्वेश्वर प्रातः-स्तव का प्रणयन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज ने किया ।

श्रीयुगलगीतिका

(१)

जयति माधवी कृष्णवल्लभा
रससुधाऽर्णवा केलिकोविदा ।
अमितवैभवा कोटिचन्द्रभा
नवनिकुञ्जगा राधिकाप्रिया ॥

(२)

जयति राधिकावल्लभोहरिः
स्मरविमोहनः श्रीवनाधिपः ।
नवलकिङ्करीयूथसेवितो
नलिनलोचनः कृष्णलालनः ॥

(३)

कलकलायिते दिव्यपावने
तरणिजाजले नीरनिर्मले ।
विधिशिवार्चिते दुष्कृतापहे
विहरति प्रिया सार्धमालिभिः ॥

(४)

व्रजवने सदा दिव्यचिन्मये
स्फटिकमौक्तिके वेदवर्णिते
खगनिनादिते वल्लरीवृते
व्रजति सुन्दरं श्यामसुन्दरः ॥

श्रीयुगलगीतिका

(१)

समस्त रसराशिसुधा की महासागर, दिव्यातिदिव्य नवलीलाविलास में परमचतुर शिरोमणि अपाररसैश्वर्य स्वामिनी एवं कोटि-कोटि चन्द्रमाओं से भी अतिशय लावण्यमाधुर्यमयी, नित्य नवनिकुञ्ज प्राङ्गण में अपनी अनिर्वचनीय मन्द-मन्द गति (हंसीगति) से विहरण करने में अतिशय शोभायमान, निरतिशय-सौन्दर्यनिकेतन, निकुञ्जबिहारी श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण की परमप्रियतमा माधवी श्रीराधिकाजी की जय हो ।

(२)

कोटि-कोटि कामदेवों को अपने अपरिमेय रूप-लावण्य-माधुर्य-सौकुमार्य-मार्दवादि अनन्तगुणसमूह से एवं अप्राकृत असमोद्ध्र्व दिव्यप्रकाशपुञ्ज से विमोहन अर्थात् विलज्जित करने वाले, अपनी रसमूर्तिमती नित्यनवयौवनसम्पन्ना युग्मकेलिरसविलासदर्शनोत्कण्ठिता निकुञ्जसखियों के अगणित परिकर द्वारा सतत संसेवित एवं विकसित नवीन रक्त (लाल) कमल के समान ललित नेत्रों वाले राधिकावल्लभ श्रीकृष्ण की जय हो ।

(३)

ब्रह्मा शिव इन्द्रादि देवों से निरन्तर परिपूजित, आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक, इन त्रिविधतापों का क्षय करने वाला, कल-कल मधुर ध्वनि से चतुर्दिक् शब्दायमान, परम-कल्याणकारी अतिपावन नीलवर्णयुक्त स्फटिकमणि के समान अतिशय निर्मल अर्थात् महाकमनीय समुज्ज्वल चिन्मय कलिन्दतनया श्रीयमुना की अगाध जलराशि में नित्यनिकुञ्जेश्वरी नवकिशोरी श्रीप्रियाजी अपनी अन्तरङ्गभूता श्रीरङ्गदेवी-हितु-हरिप्रियादि सखीसमूह के साथ नानोपकरणों से केलिविहार कर रही हैं ।

(४)

श्रुति-स्मृति-पुराणादि नाना ग्रन्थों में जिसकी असीम महिमा का अनुपम वर्णन है, स्फटिक मुक्ता-मणियों एवं विवध वैदूर्यरत्नजटित, परमदिव्य चिन्मय भगवत्स्वरूप, शुक-पिक-सारिका-मयूर-चक्रावाकादि नानाविध पक्षिसमूह के मनोहर कलरव से अभिगुञ्जित तथा कदम्ब-कदली-तमाल-वट-वकुल-आम्र-जम्बू-पाटली-सेवती-केतकी-चम्पादि द्रुमलताओं से परिवेष्टित, सम्पूर्ण व्रज की सर्वस्वनिधि श्रीवृन्दावनधाम जिसकी मञ्जुल अवनि पर रसिक शिरोमणि रसराज श्रीश्यामसुन्दर अपनी त्रिभङ्गललितगति से विहरण कर अनिर्वचनीय छटा उपस्थित कर रहे हैं ।

(५)

अयि हरिप्रिये ! राधिकापदौ
सुरगणैर्नुतौ माधवेड़ितौ ।
रसिकसौख्यदौ धामराजितौ
खलु कदा मया लोचनाऽञ्चितौ ॥

(६)

रहसि माधवो राधया समं
तरुलतातले प्रेमविह्वलः ।
मुरलिकाधरः श्यामकुन्तलो
लसति लीलया लोललोचनः ॥

(७)

कुरु कृपामहो राधिके ! सदा
मयि पदाम्बुजन्यस्तजीवने ।
वरदपाणिना सर्वशालिना
विपिनदायिना श्रीकृपालुना ॥

(८)

वनविहारिणं कुञ्जगामिनं
प्रणतपोषकं श्रीप्रियाप्रियम् ।
रसिकयूथपैर्नित्यसंस्तुतं
भुवनमोहनं नौमि सर्वदा ॥

(९)

अहह राधिके ! सद्गुणाधिके !
शरणसाधिके ! क्लेशवाधिके !
सपदि मां नय स्वीयमण्डले
कुटिलनिष्ठुरं कल्मषोषितम् ॥

(५)

हे हरिप्रिये ! (यहाँ हरिप्रिये सम्बोधन से महावाणीग्रन्थकार श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज जो श्रीनिकुञ्ज-परिकर में श्रीहरिप्रिया सखी स्वरूप से विराजित हैं, उन्हें लक्ष्य करके कहा गया है) मेरा ऐसा सौभाग्य कब उदित होगा जब मैं अपने नेत्र युगल से रसस्वरूपा कृष्णवल्लभा नित्यनवकिशोरी श्रीराधिकाजी के उन श्रीचरणकमलों का दर्शन करूँगा जो देववृन्दों से अभिवन्दित एवं निखिलब्रह्माण्डाधिपति सर्वेश्वर रसपरब्रह्म श्रीनिकुञ्जविहारी माधव से आराधित, युगलरसामृतसिन्धुनिमज्जित अनन्य रसिकजनों को दिव्यानन्द प्रदान करने वाले एवं श्रीधामवृन्दावन में परम शोभायुत विराजित हैं ।

(६)

मनोऽभिराम श्याम अलकावली से परम शोभायमान, चञ्चलनेत्र, मुरलीधर बनवारी श्रीश्यामसुन्दर विविध द्रुमलताओं से आच्छादित निभृतनिकुञ्जों के मध्य असमोर्द्ध्व दिव्यप्रेमातिरेक से आपूरित होकर अपनी आह्लादिनी शक्ति रासविलासिनी श्रीराधिका स्वामिनी के साथ अनिर्वचनीय लीलारसविलास करते हुए अतिशय दिव्य शोभा को धारण करते हैं ।

(७)

हे श्रीराधे ! सदा सर्वदा के लिए आपके सुकोमल पदपल्लवों में सर्वतोभावेन समर्पित जीवन मुझ अज्ञ शरणापन्न पर आप अपने परम कृपामय सर्वसमर्थ श्रीवृन्दावन सान्निध्य प्राप्त कराने वाले वरद हस्तकमल से अहैतुकी कृपा प्रदान कर पूर्ण कृतार्थ कीजिये । जिससे इस भवाटवी से छुटकारा पाकर आपकी महामहिमामयी मनोहर छवि का सतत रूप से दर्शन कर आनन्दसिन्धु में अवगाहन करता रहूँ ।

(८)

कुञ्जोपकुञ्जों में अपनी रसविलासमयी मधुर मन्द-मन्द गति से अभिगमन करने वाले श्रद्धावनत शरणागत भावुक भक्तजनों के सर्वरूप से परिपालक अपनी अभिन्नरूपा परमाह्लादिनी लाड़िली श्रीप्रियाजी के परम प्रियतम एवं अनन्य रसिकजन समुदाय जिनकी अनवरत नानाविधियों से स्तुति करते हैं । ऐसे त्रिभुवनविमोहन श्रीवृन्दावनविहारी की सर्वदा वन्दना करता हूँ ।

(९)

कारुण्यादि निखिलकल्याणगुणसागर, शरणागतजनों पर अपने कृपाकटाक्षनिक्षेप से सदा आनन्दित करने वाली त्रिविधतापनिवारिणी हे श्रीराधे ! विविधपापपुञ्जसंतप्त मुझ महाकुटिल अति निष्ठुर क्रूरजन को शीघ्र ही निज परिकर में सम्मिलित कर सदा सर्वदा के लिए समाश्रय प्रदान कीजिये ।

(१०)

सुशिखिचन्द्रिकामौलिधारिणं
कनककुण्डलं चन्दनाऽङ्कितम् ।
कुसुममालया मञ्जुविग्रहं
रसविहारिणं भावयेऽनिशम् ॥

(११)

हितु-हरिप्रिया-चम्पिकाऽऽदिभि-
र्निजसखीजनैरुत्पलाननैः ।
मधुरसेवयामुग्धमानसा-
मसमसौभगां स्तौमि राधिकाम् ॥

(१२)

सहचरीगणैश्चारुनिर्मिते
परममञ्जुले रासमण्डले ।
प्रियतमायुतः श्रीरसेश्वरः
सुरमते मुदा दिव्यविग्रहः ॥

(१३)

सततमश्रुभिर्युक्तलोचने
निखिलसंसृते रूपमोहिते ।
ननु भविष्यतस्त्वत्परे कदा
रसिकराधिकाकृष्णदर्शने ॥

(१४)

निगममृग्ययोर्युग्मपादयोः
शिवविरञ्चिभिः सेव्यमानयोः ।
यदमलं मनो योऽर्पयत्यहो
भवति निश्चितं कुञ्जकिङ्करी ॥

(१०)

जिनके श्रीमस्तक पर मोर मुकुट है, कानों में मकराकृति रत्नजटित स्वर्णकुण्डल हैं, चन्दन-चर्चित जिनका श्रीविग्रह है, गले में सुखद सुगन्धित वनमाला विराजित है, क्या ही सुन्दर आह्लाददायक श्रीहरि का यह अनिर्वचनीय दिव्य वपु है, ऐसे प्रेमस्वरूप लीलारसमय रासरसविहारी श्रीकृष्ण का मैं सदा स्मरण करता हूँ ।

(११)

विकसित कमल के समान अतिशय सुन्दर नयनों वाली श्रीहितु-हरिप्रिया-चम्पिका-चित्रा-इन्दुलेखा-ललिता-विशाखा प्रभृति अगणित अपनी अन्तरङ्ग सहचरियों के द्वारा नानारूप से सम्पादित मधुरातिमधुर सर्वोत्कृष्ट दिव्यसेवा-सौंज से अतिपुलकितमनस्का अपूर्वसौन्दर्यशालिनी महाभावस्वरूपा वृन्दावनाधिश्वरी श्रीप्रियाजी का अनुदिन स्तवन करता हूँ ।

(१२)

निकुञ्ज सखियों के असंख्य यूथों द्वारा नव नव नानाकलाकृति से जिसकी विलक्षण रचना है, श्रीवृन्दावनधाम के मध्यप्रान्त में अपनी अलौकिक छटा विकीर्ण कर रहा है, ऐसा परम देदीप्यमान अतिमनोहर आनन्दसुधारसकेन्द्र दिव्य रासमण्डल जिस पर रसिक प्राणाधार रसेश्वर श्रीवृन्दावनविहारी अपनी अनन्त सौन्दर्यनिधि रासेश्वरी प्रियतमा श्रीकिशोरीजी सहित प्रेमातिरेक पूर्वक अनिर्वचनीय परम रसमय लीलाविलास कर रहे हैं ।

(१३)

हे युगलकिशोर ! श्रीश्यामाश्याम ! इस विविध-विचित्र संस्थान सम्पन्न प्राकृत जगत् के लुभायमान क्षणिक पदार्थों की क्लेशमयी रूपराशि को देखकर उस ओर समाकृष्ट होने वाले ये मेरे प्राकृत नेत्र आपके परम कमनीय दिव्य दर्शनों के लिए उत्कण्ठित हो प्रेमभरित अजस्र अश्रुधारा पूरित होकर अनवरत रूप से रुदन करने का कब सौभाग्य प्राप्त करेंगे ।

(१४)

नेति-नेति कहकर वेद की ऋचायें जिनके अन्वेषण में अपनी असमर्थता व्यक्त करती हैं, शिव-ब्रह्मा प्रभृति जिनकी अर्चना वन्दना में सदा तत्पर रहते हैं, ऐसे नवकिशोर दम्पति श्रीराधामाधव के मङ्गलमय सुकोमल पदपल्लव-युगलध्यान में जो रसिक भक्त अपने निर्मल मन को लगा देता है वह निश्चय ही बड़ी सुलभता से इस भवबाधा से छुटकारा पाकर नित्यधाम में अपने उन सर्वाराध्य श्रीप्रभु का अक्षुण्ण सान्निध्य लाभ कर निकुञ्जसहचरीभाव के महासौभाग्य प्राप्त करने का अधिकारी हो जाता है ।

(१५)

पतसि रे मनः ! पापपङ्किले
त्वमसि घातकं चञ्चलं मुधा ।
परिसर प्रभोर्नित्यधामनि
तदनुसेवने सम्मुखं भव ॥

(१६)

न खलु साधनं नैव धीवलं
न रतिरस्ति नो शास्त्रचिन्तनम् ।
अथ दयानिधे ! त्वत्पदाऽऽश्रया-
ज्जगति केवलं याति जीवनम् ॥

(१७)

इति मुहुर्महुः प्रार्थ्यते मया
सहचरीश्वरी राधिका प्रिया ।
मम कदा भवत्पादपद्मयो-
रविचला रतिस्सन्ततं भवेत् ॥

(१८)

युगलगीतिकां युग्मभक्तिदां
पठति यः सदा श्रद्धयान्वितः ।
रसिकराधिकामाधवौ द्रुतं
विपिनगामिनौ विन्दते ध्रुवम् ॥

(१९)

श्यामाश्याम-प्रिययुगलयोर्गीतिका गीतरूपा
भक्तैर्गेया परमसरला युग्मलीलानिवद्धा ।
राधासर्वेश्वरशरणदेवेननिम्बार्कपीठाऽऽ-
चार्येण श्रीहरिरसिकनुर्मोदनार्थं प्रणीता ॥

*

(१५)

रे दुष्टमन ! तू बड़ा ही मूर्ख चञ्चल और महाघातक है, व्यर्थ ही इस विनाशकारी पापरूपी कीचड़ में पड़ रहा है । क्यों नहीं तू श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के नित्यधाम श्रीवृन्दावन की ओर चलता, जिसके निवास के लिए ब्रह्मादि देवता और अनेकानेक ऋषि-मुनि-तपस्वी जन भी ललचाते रहते हैं । जिन अप्राकृत धाम की महिमा-गरिमा का वर्णन वाणी द्वारा निरूपण नहीं किया जा सकता, ऐसे उस श्रीवन की मञ्जुल रम्य अवनि पर निवास करके अपने अमूल्य जीवन को कृतार्थ कर ।

(१६)

हे करुणार्णव ! श्रीसर्वेश्वर प्रभो ! इस सर्वथा असमर्थ अकिञ्चन जन के पास न तो बुद्धिबल और न श्रुति-स्मृति-पुराणादि शास्त्रों का चिन्तन, मनन ही, और न किसी भी प्रकार का आपके श्रीपादपद्मों में अनुराग, तथा नहीं है अन्य प्रकार की कोई साधन सम्पन्नता ही, हे दयासागर ! यदि कुछ है तो वह केवल एकमात्र आपके चरणारविन्दों का दृढ आश्रय, बस इसी से हे राधामाधव ! मेरे इस विसृङ्खलित जीवन का निर्वाह चल रहा है ।

(१७)

अनन्त सखीसमूह की परमाराध्या स्वामिनी अतिकृपामयी सर्वेश्वरी प्रियाजी श्रीराधिका महारानी से बारम्बार यही प्रार्थना है कि ऐसा मेरा भाग्योदय कब होगा जब आपके श्रीपदारविन्दों में सदा सर्वदा के लिए मेरी अविचल रति भक्ति हो ।

(१८)

जो रसिक भक्त श्रद्धापूर्वक सदा युगलविहारी श्रीश्यामाश्याम की केलिरसविलास द्योतिका श्रीयुगलगीतिका का पाठ करता है वह अतिशीघ्र ही श्रीधामविराजित रसिकसर्वस्व श्रीलाड़िलीलाल के परम सौख्यप्रदायक महामङ्गलमय दिव्यदर्शनों का सौभाग्य प्राप्त करता है ।

(१९)

यह युगलगीतिका जिसमें युगलकिशोर श्रीश्यामाश्याम के लीलाविलास का बड़ा ही मनमोहक ललित वर्णन है । यह गेय रूप गीतिका जो बड़ी ही सरस सरल है, भक्तों को इसका सदा मनन स्मरण करना चाहिए । इस श्रीयुगलगीतिका का श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज ने श्रीहरिपदरसरसिक भावुक भक्तजनों को दिव्यानन्द सिन्धु में अवगाहन के लिए ही प्रणयन किया है ।

*

श्रीहंससनत्कुमारादिनारदाष्टकम्

(१)

ब्रह्मेशानेन्द्रादिकै र्वन्द्यमानं
दिव्यं देवं शान्तिदं चक्रपाणिम् ।
श्रीकृष्णं सर्वेश्वरं सौख्यसिन्धुं
वन्दे नित्यं माधवं हंसरूपम् ॥

(२)

विश्वाधारं सुन्दरं शुभ्रवर्णं
योगीन्द्रैर्ध्येयं सदा ब्रह्मपुत्रैः ।
सर्वार्थार्थं सर्वदं सर्ववन्द्यं
वन्दे नित्यं माधवं हंसरूपम् ॥

(३)

येन श्रेष्ठः श्रौतगोपालमन्त्रः
सृष्ट्यादौ संश्रावितो मन्त्रराजः ।
लोकाचार्येभ्यो विधेः सत्सुतेभ्यो-
वन्दे तं श्रीमाधवं हंसरूपम् ॥

(४)

येनादौ सर्वेश्वरः स्वीयरूपं
शालग्रामश्चक्रवान्सम्प्रदत्तः ॥
पुत्रेभ्यो श्रीमद्विधेः सूक्ष्मदिव्यो-
वन्दे तं श्रीमाधवं हंसरूपम् ॥

(५)

श्रीराधाकृष्णाश्रयध्यानमग्ना-
न्दिव्यान्देवैर्वन्दितान्नित्यमुक्तान् ।
श्रीयुक्तान् श्रीभक्तिदान् श्रीकुमारान्
लोकाचार्यान्नौमि तान्ब्रह्मबालान् ॥

श्रीहंससनत्कुमारादिनारदाष्टक

श्रीनिम्बार्क-सम्प्रदाय की युगल उपासना के अन्तर्गत मन्त्रराज की परम्परा का निर्देश करते हुये सर्वप्रथम श्रीमद्भागवतमहापुराणोक्त हंसावतार (हंसरूप श्रीराधामाधव), श्रीसनकादि भगवान् एवं देवर्षि श्रीनारदजी की क्रमशः स्तुति करते हैं--

(१)

ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि देवताओं से जिनकी वन्दना की जाती है, जो अपने कर-कमलों में श्रीसुदर्शनचक्र को धारण किये हुये हैं, जीवमात्र को शान्ति देने वाले, परम दिव्य देवता हैं, सुख के सागर, श्री (प्रियाजी) से युक्त, सबके स्वामी उन हंसरूप श्रीराधामाधव की नित्य वन्दना करते हैं।

(२)

जो विश्व के आधार हैं, सुन्दर व श्वेतवर्ण के हैं, सदा योगीन्द्र, ब्रह्मपुत्रों (सनकादिकों) द्वारा ध्येय हैं, सर्वार्थ के लिये सब कुछ देने वाले, सभी के वन्दनीय उन हंसरूप श्रीमाधव की नित्य वन्दना करते हैं ।

(३)

जिन्होंने सृष्टि के आरम्भ में ब्रह्मा के सुपुत्र लोकाचार्य श्रीसनकादिकों को वेदोक्त, परम श्रेष्ठ, मन्त्रराज, श्रीगोपालमन्त्र का उपदेश किया है, उन हंसरूप श्रीमाधव की नित्य वन्दना करते हैं ।

(४)

जिन्होंने ब्रह्मपुत्र श्रीसनकादिकों के लिए सूक्ष्म, दिव्य, निजरूप, श्रीसर्वेश्वर, दक्षिणावर्त-चक्रयुतशालग्राम के रूप में प्रदान किया, उन हंसरूप श्रीमाधव की नित्य वन्दना करते हैं ।

(५)

श्रीराधाकृष्ण युगल के आश्रय में ध्यानमग्न, नित्यमुक्त, देव-ऋषि आदि द्वारा वन्दित, दिव्य, शोभायुक्त, श्री (प्रियाजी) की भक्ति देने वाले, नित्य कुमार स्वरूप, लोकाचार्य, जो ब्रह्मा के मानस-पुत्र हैं उन सनकादिकों को प्रणाम करते हैं ।

(६)

सान्द्रानन्दाब्धौ रतान्चारुचित्तान्
सर्वाराध्यान्हंसशिष्यान्रसज्ञान् ।
श्रीलश्रीसर्वेश्वरध्यानलीनान्
लोकाचार्यान्नौमि तान्ब्रह्मबालान् ।।

(७)

संसेव्यं वीणाधरं वेदवेद्यं
राधागोविन्दे रतं तालहस्तम् ।
निम्बार्काचार्यप्रभोः सद्गुरुं तं
देवर्षिं श्रीनारदं नौमि नित्यम्

(८)

श्रीकुञ्जे वृन्दावने युग्मकेलौ
मुग्धालीरूपस्थितं शोभमानम् ।
भक्तेराचार्यं हरेश्चारुचेतो-
देवर्षिं श्रीनारदं नौमि नित्यम् ।।

(९)

हंससनत्कुमारादिनारदाष्टकमद्भुतम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

*

(६)

घने गहरे आनन्द सागर में निमग्न, उदार मनवाले सबके आराध्य, श्रीहंस भगवान् के साक्षात् शिष्य, रस के मर्मज्ञ, अत्यन्तशोभित श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के ध्यान में लगे हुये, लोकाचार्य, ब्रह्मा के पुत्र सनकादिकों को हम प्रणाम करते हैं ।

(७)

भक्तों व शिष्यों द्वारा संसेव्य, वेदों से वेद्य (जानने योग्य), वीणा धारण किये करताल हाथ में लिये हुये, श्रीराधागोविन्द की आराधना व कीर्तन में संलग्न, श्रीनिम्बार्काचार्य प्रभु के साक्षात् गुरु उन देवर्षि श्रीनारदजी को नित्य प्रणाम करते हैं ।

(८)

नित्य वृन्दावनधाम, श्रीनिकुञ्ज में श्रीप्रियाप्रियतम की युगलकेलि के प्रसंग में, मुग्धा सहचरी के रूप में विराजमान, अत्यन्त शोभमान, श्रीहरि (लाड़िलीलाल) के सुन्दर चित्तस्वरूप निश्च्छल प्रेमलक्षणा भक्ति के आचार्य, देवर्षि श्रीनारदजी को नित्य प्रणाम करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु निम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित परम अद्भुत यह हंससनत्कुमारादि नारदाष्टक नाम का स्तोत्र नित्य पाठ करने वालों को भक्ति प्रदान करता है ।

*

श्रीनिम्बार्काष्टकम्

(१)

अनन्तकोटिद्युमणिप्रभाय
श्रीकृष्णहस्ताङ्गुलिरञ्जिताय ।
चक्रावताराय सुदर्शनाय
नमोऽस्तु निम्बार्कमुनीश्वराय ॥

(२)

सनन्दनादेर्मतपोषकाय
पाखण्डवादाम्बुधिशोषकाय ।
गिरीन्द्रगोवर्द्धनसंस्थिताय
नमोऽस्तु निम्बार्कमुनीश्वराय ॥

(३)

हरिप्रियोपाधिविभूषिताय
सर्वेश्वराराधनसाधनाय ।
त्रैलोक्यसंबर्द्धित गौरवाय
नमोऽस्तु निम्बार्कमुनीश्वराय ॥

(४)

भाष्यप्रणेत्रेऽरुणनन्दनाय
तापत्रयोन्मूलननैपुणाय ।
युग्माङ्घ्रिसेवाधिकतत्पराय
नमोऽस्तु निम्बार्कमुनीश्वराय ॥

(५)

सकृत्प्रपन्नार्तिविमोचनाय
प्रफुल्लितेन्दीवरलोचनाय ।
श्रीकृष्णपादाब्जमधुव्रताय
नमोऽस्तु निम्बार्कमुनीश्वराय ॥

।। श्री राधासर्वेश्वरो जयति।।

श्रीसुदर्शनचक्रावतार आद्याचार्य जगद्गुरु

श्रीभगवन्निम्बार्काचार्य
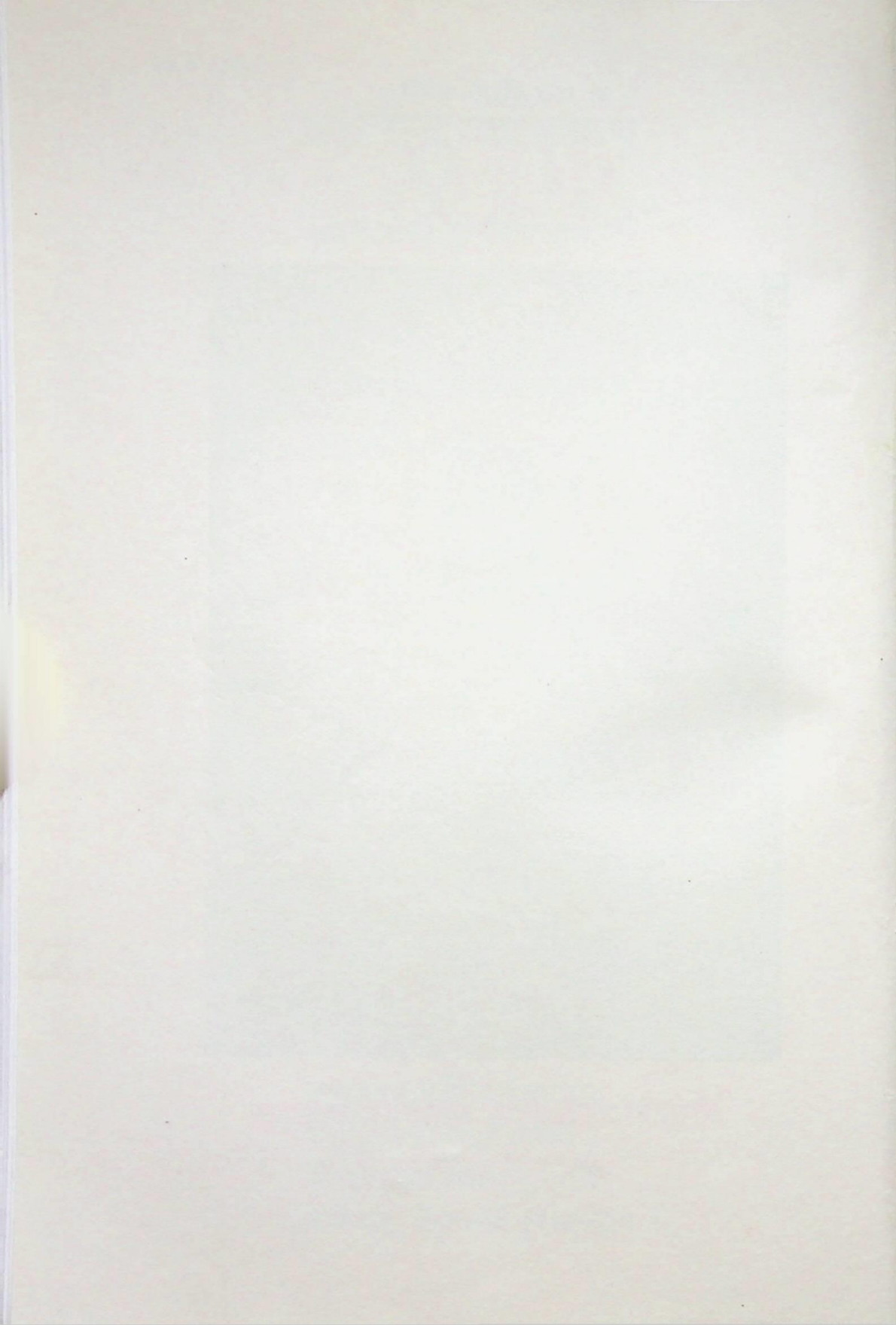
श्रीनिम्बार्काष्टक

(१)

अगणित कोटि-कोटि सूर्य की अप्रतिम कान्ति से भी अतिशय तेजपुञ्ज शुभ्र, श्रीश्यामसुन्दर के परम सुकोमल हस्त-कमल की कमनीय दिव्य अंगुलि पर विराजित, दिव्यायुध श्रीसुदर्शन चक्रराज के साक्षात् अवतार श्रीनिम्बार्क भगवान् को प्रणाम ।

(२)

श्रीसनकादिक भगवान् के वेदान्त सिद्धान्त एवं उपासना तत्त्व के पोषक अर्थात् उसी सिद्धान्त के प्रतिपादक, तथा फैले हुए पाखण्डवाद के विषाक्त समुद्र के शोषण में परम समर्थ, और वृहद् वृन्दावन के विशाल वन प्राङ्गण में अवस्थित निखिल गिरि शिरोमणि पर्वतराज श्रीगोवर्द्धन की उपत्यका में सुशोभित श्रीनिम्बग्राम में विराजमान आचार्यपाद भगवान् श्रीनिम्बार्क को नमस्कार ।

(३)

जिनका अपर नाम श्रीहरिप्रियाचार्य है, श्रीसर्वेश्वर प्रभु की निरन्तर आराधना ही जिनकी सर्वोपरि साधना है एवं जिनकी त्रि भुवन में अपार गुण-गरिमा का प्रसार है, उन आचार्यचरण श्रीनिम्बार्क भगवान् को नमस्कार ।

(४)

भगवान् वेदव्यास प्रणीत ब्रह्म-सूत्रों पर जिन्होंने संक्षिप्त रूप में सुन्दर सरस गम्भीराशय वेदान्त पारिजात सौरभ नामक वृत्यात्मक भाष्य का प्रणयन किया, आध्यात्मिक, आधिदैविक, आधिभौतिक त्रिविध सन्तापों के शमन में परम प्रवीण, युगल सरकार श्रीप्रिया-प्रियतम श्रीराधामाधव की विविध परिचर्याओं में, श्रीसुदर्शन, श्रीरङ्गदेवी, स्तोक आदि विविध रूप से सतत सन्नद्ध रहने वाले महामुनि अरुण के वात्सल्य वारिधि-संसिक्त उनके कुमार श्रीनिम्बार्क भगवान् को प्रणाम ।

(५)

अनन्य शरणापन्न प्राणी की भवाटवी सम्बन्धी नाना व्याधियों को सर्वथा शान्त करने वाले एवं विकसित कमल पुष्प के सदृश सुन्दर युगल नयनवाले प्रिया-प्रियतम युगलकिशोर के चरण-कमलों के रसिक चञ्चरीक परम दयामय श्रीनिम्बार्क प्रभु को नमस्कार ।

(६)

सर्वेश्वरस्य प्रमुखप्रियाय
दिव्यस्वरूपाय शुचिस्मिताय ।
वन्दारुवन्दैरभिवन्दिताय
नमोऽस्तु निम्बार्कमुनीश्वराय ॥

(७)

निम्बद्रुमे भानुविकाशकाय
भूभारविध्वंसनसक्षमाय ।
आनन्दरूपाय मनोहराय
नमोऽस्तु निम्बार्कमुनीश्वराय ॥

(८)

श्रीनारदर्षेश्चरणाश्रिताय
वेदान्तसिद्धान्तप्रवर्तकाय ।
सर्वाभिलाषा-परिपूरकाय
नमोऽस्तु निम्बार्कमुनीश्वराय ॥

(९)

श्रीनिम्बार्काष्टकं स्तोत्रं हरेर्भक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

श्रीसनकादि संसेव्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु के परम प्रिय विविध देवसमूह द्वारा अनवरत अभिवन्दित अत्यन्त दिव्यस्वरूप मन्द-मन्द हासयुक्त परम कारुणिक आचार्यचरण भगवान् श्रीनिम्बार्क को नमस्कार ।

(७)

श्रीव्रज-भूमि में अवस्थित गिरिराज गोवर्द्धन की उपत्यका में विद्यमान श्रीनिम्बग्राम (निम्बार्क आश्रम) स्थ श्रीसुदर्शनकुण्ड पर यति रूप (छद्म वेष) में आये हुए, श्रीब्रह्माजी को सूर्यास्त पर रात्रि आगमन में निम्ब वृक्ष पर सूर्य का दर्शन कराने वाले अवनितल पर अत्याचारियों के पाप भार को अपने दिव्य तेज से तथा सुन्दर उपदेशामृत से प्रशमन एवं शान्त करने में महान् सामर्थ्यवान् आनन्दस्वरूप परम मनोहर आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् को नमस्कार ।

(८)

भक्तिरस रसिकाचार्य वीणापाणि देवर्षिवर्य श्रीनारदजी से पञ्चपदी विद्या (श्रीगोपाल मन्त्रराज) को प्राप्त करने वाले प्रस्थान त्रयी के माध्यम से परम्परागत स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक शरणापन्न सभी प्राणियों की अभिलाषा को पूर्ण करने वाले एवं अनुग्रह रूप दिव्य वपुधारी श्रीनिम्बार्काचार्यपाद को नमस्कार ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वर-शरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह श्रीनिम्बार्काष्टक स्तोत्र पाठ करने वालों को भगवद्भक्ति प्रदान करता है ।

*

श्रीनिम्बार्कमहिमाष्टकम्

(१)

राधामुकुन्दाङ्घ्रिसरोजभृङ्गं
भक्तेष्टवाञ्छातरुमाप्तसेव्यम् ।
पयोधरश्यामलबन्धुराङ्गं
निम्बार्कमाचार्यमनुस्मरामि ॥

(२)

आचार्यवर्यं हरिचक्रराजं
भवाब्धिसेतुं भयमुक्तिहेतुम् ।
गिरीन्द्रगोवर्द्धनराजमानं
निम्बार्कदेवं हृदि भावयामि ॥

(३)

सुमन्दमेधारतिदानशीलं
निकुञ्जकुञ्जान्तरनित्यवासम् ।
श्रीकृष्णलीलारसपानमत्तं
निम्बार्कदेवं मनसा स्मरामि ॥

(४)

पाखण्डकण्डूशमनप्रवीणं
श्रुत्यर्थसम्यक्पथबोधधीरम् ।
गोविन्दभक्त्यारसवृष्टिकारं
आचार्यनिम्बार्कमिह स्मरामि ॥

(५)

अनन्तकारुण्यगुणैकधाम
प्रशान्तचित्तं प्रचुरप्रभावम् ।
प्रेमातिसान्द्रं परिपूर्णकामं
निम्बार्कमीडे रससन्निधानम् ॥

श्रीनिम्बार्कमहिमाष्टक

(१)

श्रीराधामुकुन्द के चरणारविन्दों का भक्ति सुधारस पान करने में भ्रमर तुल्य, भक्तजनों की इच्छा पूर्ण करने में कल्पवृक्ष के समान, आप्त (श्रेष्ठ) पुरुषों द्वारा संसेवित, जलधर (मेघ) के समान श्याम वर्ण सुन्दर श्रीविग्रह स्वरूप, ऐसे आचार्यप्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् का मैं स्मरण करता हूँ ।

(२)

श्रीहरिप्रियायुध चक्रसुदर्शन के अवतार, भवसागर पार करने में सेतु (पुल) के समान, भय निवृत्ति कारणरूप, गिरिराज श्रीगोवर्द्धन की तलहटी में जिनका नित्य निवास हैं, उन आचार्य प्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् की मैं हृदय से भावना करता हूँ ।

(३)

घोर अज्ञानान्ध ग्रस्त जीवों को श्रीभगवद्भक्ति प्रदान करने वाले, तथा श्रीनिकुञ्जों में जिनका नित्य निवास है, श्रीकृष्ण लीला रस पान में तल्लीन, ऐसे श्रीनिम्बार्क देव का मैं मन से स्मरण करता हूँ ।

(४)

पाखण्ड वाद रूप कण्डू (खुजाल) को शमन (विनष्ट) करने में परम प्रवीण, वेद मन्त्रों का यथार्थ रूप में भली प्रकार मार्ग-दर्शन कराने में परम समर्थ तथा श्रीगोविन्द भक्ति-रस की वृष्टि (वर्षा) करने वाले, आचार्य प्रवर श्रीनिम्बार्क देव का मैं स्मरण करता हूँ ।

(५)

सौन्दर्य, माधुर्य, लावण्य, कारुण्य, वात्सल्य, दया आदि अनन्त गुणों के एकमात्र स्थान अर्थात् कृपा के भण्डार, शान्त स्वभाव, अति प्रभावशाली, प्रेम पयोधि, परिपूर्ण काम, रस निकेतन श्रीनिम्बार्क भगवान् की मैं स्तुति करता हूँ ।

(६)

वेदान्त-गीताकृतदिव्यभाष्यं
स्वाभाविकं भिन्नमभिन्नरूपम् ।
संस्थापितं वै निजवादमाद्यं
तं निम्बभानुं शिरसा नमामि ॥

(७)

सर्वेश्वराराधनदत्तचेता
देवर्षिवर्येण च लब्धदीक्षः ।
श्रीधामवृन्दावनकुञ्जसेवी
निम्बार्कवर्यः खलु मे गतिः स्यात् ॥

(८)

यतिस्वरूपाय पितामहाय
व्यालोकितो निम्बतरौ दिनेशः ।
तं भानुकोटिप्रभमाशुरेव
निम्बार्कमन्तः सततं स्मरामि ॥

(९)

स्तोत्रं पुण्यकरं चारु निम्बार्कमहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

वेदान्त-(उपनिषद्) और श्रीव्यासकृत ब्रह्मसूत्र, तथा श्रीमद्भगवद् गीता इस प्रस्थान त्रयी भाष्य की रचना कर स्वाभाविक भिन्नाभिन्न (द्वैताद्वैत) अर्थात् ब्रह्म से जीव और जगत् का भेद और अभेद स्वाभाविक है, तत्त्वत्रय पर इस अपने यथार्थ सिद्धान्त की स्थापना करने वाले, उन आद्याचार्य भगवान् श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्र को मैं शिर से नमस्कार करता हूँ ।

(७)

अपने उपास्य देव भगवान् श्रीसर्वेश्वर प्रभु की आराधना (सेवा) में सदा तल्लीन, देवर्षिवर्य श्रीनारदजी से दीक्षा संप्राप्त करने वाले, श्रीवृन्दावन की कुञ्जों में जो नित्य निवास करते हैं वे ही श्रीनिम्बार्क भगवान् निश्चयात्मक रूप में मेरी गति (आश्रय-सहारा) हैं ।

(८)

दिवा भोजी सन्यासी का रूप धारण कर आने वाले पितामह श्रीब्रह्माजी के लिये निम्बवृक्ष पर श्रीसूर्यनारायण के दर्शन जिन्होंने कराया है उन करोड़ों सूर्यों के समान देदीप्यमान आचार्य प्रवर श्रीनिम्बार्क भगवान् का मैं अन्तःकरण से निरन्तर स्मरण करता हूँ ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा निर्मित यह सुन्दर स्तोत्र श्रीनिम्बार्कमहिमाष्टक पाठकजनों के लिये पुण्य प्रदान करने वाला है ।

*

श्रीनिम्बार्क--पञ्चश्लोकी

(१)

करुणार्णव-निम्ब-भास्करं
भवसंताप-विनाशन-व्रतम् ।
निखिलागम-तत्त्व-दर्शकं
प्रणुमः शान्त-मुनीन्द्र-विग्रहम् ।

(२)

युगलाङ्घ्रि-सरोज-सेविनं
गिरि-गोवर्द्धन-गह्वर-स्थितम् ।
शरणागत--भी--निवर्तकं
प्रणुमो निम्बविभावसुं मुनिम् ॥

(३)

नवमेघ-घनावलि-द्युतिं
नवरक्ताब्ज-विशाल-लोचनम् ।
नवकुञ्ज-रसावलोकनं
प्रणुमो निम्बरविं महामुनिम् ॥

(४)

विवुधैरुपसेवितं सदा
हरि-हस्ताङ्गुलि-राजितं मुदा ।
कमनीय-सुदर्शनं हृदा
प्रणुमो निम्बदिवाकरं विदा ॥

(५)

अवलोकन-शान्ति-दायकं
सुजनार्थं धृत-मानवाकृतिम् ।
परमाद्भुत-दिव्य-विग्रहं
प्रणुमो निम्ब-दिनेश-देशिकम् ॥

(६)

निम्बार्क-पञ्चक-श्लोकी भक्तामोद-प्रदायिनी ।
राधासर्वेश्वर---प्रीत्यै तच्छरणेन निर्मिता ॥

श्रीनिम्बार्क--पञ्चश्लोकी

(१)

वेदान्त कामधेनु रूपी दशश्लोकी आदि के द्वारा सम्पूर्ण वेद, उपनिषद् आदि शास्त्रों का सारतत्त्व, स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त प्रवर्तक, सांसारिक सन्तापों को शमन करने में विशिष्ट व्रतधारी, करुणा एवं कृपा के परम सागर परम शान्त स्वरूप मुनीन्द्र-विग्रह भक्तवत्सल श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम सब प्रणाम करते हैं ।

(२)

युगल किशोर श्रीप्रिया-प्रियतम के चरणारविन्दों की सेवा में निरत, गिरिराज श्रीगोवर्धन की गुफा एवं उपत्यका में निवास करने वाले, शरणागत भावुक भक्तों के सम्पूर्ण भय-निवारण में समर्थ श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम सब प्रणाम करते हैं ।

(३)

नवीन मेघमालाओं के सदृश परम मनोहर कमनीय कान्ति संवलित एवं नवीन लाल कमल के समान प्रफुल्लित सुन्दर नेत्र युगल तथा श्रीश्यामाश्याम की नव-निकुञ्ज केलि के रसास्वादन से नव-नव दिव्य आनन्दानुभव करने वाले श्रीराधा-सर्वेश्वर के ही अभिनव वपु आचार्यवर्य महामुनीन्द्र श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम सब प्रणाम करते हैं ।

(४)

किन्नर, गन्धर्व, महेन्द्रादि देवों द्वारा सदा परिसेवित, श्रीश्यामसुन्दर की कर कमलांगुलि पर परम आनन्दानुभूति-पूर्वक चक्रराज श्रीसुदर्शन रूप से विराजमान, परम कमनीय एवं परम दर्शनीय श्रीनिम्बार्क भगवान् को हम सब हार्दिक प्रणाम करते हैं ।

(५)

जिन्होंने अपने परम प्रिय भावुक भक्तों के लिये ही मानव वपु स्वरूप अवतार धारण किया, जिनके केवल दर्शन मात्र से ही परम शान्ति का अनिर्वचनीय अनुभव हो, उन परम अद्‌भुत तेजोमय दिव्य विग्रह अशरण शरण श्रीनिम्बार्काचार्य को हम सब प्रणाम करते हैं ।

(६)

जगद्‌गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा निर्मित यह श्रीनिम्बार्क-पञ्चश्लोकी भक्तजनों का आमोद बढाने वाली है ।

श्रीनिम्बार्क--चतुश्श्लोकी

(१)

परमाचार्यनिम्बार्कं सम्प्रदायप्रवर्तकम् ।
सुदर्शनमहाचक्रावतारं भावयेऽनिशम् ॥

(२)

नवाऽभ्ररुचिरं दिव्यं सर्वेश्वरसमाकृतिम् ।
नमामि निखिलै र्देवैरुपास्यं करुणार्णवम् ॥

(३)

समस्ताऽऽगम-सिद्धान्त-द्वैताद्वैतप्रचारकम् ।
वन्देऽहं श्रद्धया नित्यं निम्बाश्रम विराजितम् ॥

(४)

अष्टरूपधरं रुच्यं रङ्गदेव्यादिकं सदा ।
आचार्यप्रवरं प्रीत्या प्रणमामि पुनः पुनः ॥

(५)

श्रीनिम्बार्कचतुश्श्लोकी रसिकाऽऽमोददायिनी ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥

*

श्रीनिम्बार्क चतुश्श्लोकी

(१)

सम्प्रदाय के प्रवर्तक, श्रीसुदर्शन महाचक्र के अवतार परम आचार्य, श्रीनिम्बार्क महामुनीन्द्र की हम सदा हृदय से भावना करते हैं ।

(२)

नवीन मेघ के समान सुन्दर श्रीसर्वेश्वर प्रभु के समान दिव्यस्वरूप समस्त देवों के उपासनीय, करुणा के सागर श्रीनिम्बार्क भगवान् को प्रणाम करते हैं ।

(३)

समस्त शास्त्रों के सारभूत द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचार करने वाले, निम्बाश्रम (निम्बग्राम) में विराजमान आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् की श्रद्धापूर्वक नित्य वन्दना करते हैं ।

(४)

श्रीरङ्गदेवी आदि मनोहर, अष्टरूप धारण करने वाले, आचार्य प्रवर श्रीनिम्बार्काचार्यश्री को भक्ति और श्रद्धा पूर्वक पुनः पुनः प्रणाम करते हैं ।

(५)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित श्रीनिम्बार्क-चतुश्श्लोकी रसिकभक्तों को आनन्द देने वाली है।

*

श्रीनिम्बार्क--स्तवराजः

(१)

अनन्तश्रीयुतं श्रीमज्जगद्गुरुवरं परम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ।।

(२)

श्रीहंससनकादीनां भक्तिमार्गप्रवर्तकम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ।।

(३)

देवर्षिनारदात्प्राप्त-गोपालमन्त्रशेखरम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ।।

(४)

हरेः सुदर्शनाऽऽख्यात-,चक्रावतारसुन्दरम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ।।

(५)

श्रौतं स्वाभाविकद्वैता-,द्वैतमतप्रवर्तकम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ।।

(६)

अष्टरूपे स्थितं नित्यं, राधाङ्गकान्तिरूपिणम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ।।

श्रीनिम्बार्क--स्तवराजः

(१)

अनन्त श्रीविभूषित दिव्य शोभायुक्त, जगद्गुरु, परमाराध्य, सुदर्शन, श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२)

श्रीहंस सनकादि द्वारा उपदिष्ट श्रीश्यामा-श्याम युगल के सुमधुर भक्तिमार्ग के प्रवर्तक परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(३)

जिन्होंने अपने गुरुवर्य्य देवर्षि श्रीनारदजी से श्रीगोपाल मन्त्रराज की दीक्षा प्राप्त की है, उन परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(४)

जो श्रीहरि (कृष्ण भगवान्) के सुदर्शन नाम से विख्यात आयुध श्रीचक्रराज के सुन्दर अवतार है, उन परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(५)

ऐतदात्म्यमिदं सर्वम्, सर्वं खल्विदं ब्रह्म, यतो वा इमानि मूतानि जायन्ते, इत्यादि श्रुतियों के अनुसार अखिल विश्व के अन्तरात्मा परब्रह्म श्रीवासुदेव उपादान एवं स्वतन्त्र सत्तावान्, नियामक होने से तथा जगत् ब्रह्म का आत्मीय, उपादेय, परतन्त्र, सत्तावान्, नियम्य होने से दोनों भिन्न हैं । जगत् की ब्रह्मात्मकता के कारण अभिन्न भी हैं । यह भेद (द्वैत) व अभेद (अद्वैत) वेद मूलक व स्वाभाविक है । इस प्रकार वेदोक्त स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त के प्रवर्तक परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(६)

आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् के आठ रूप हैं, जिनमें से श्रीराधा (श्रीप्रियाजी) के अङ्ग में कान्तिस्वरूप से नित्य विराजमान परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(७)

रङ्गदेवी-सखीरूपं, स्तोकगोप-स्वरूपकम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(८)

वंशीस्वरूपमानन्द-,मन्दिरं यष्टिकात्मकम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(९)

गोषु धूसरगोरूप-,मायुधं श्रीसुदर्शनम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(१०)

निम्बार्काचार्यरूपेण, भूमौ प्रकटितं कलौ ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(११)

तैलङ्गे भारत देशे, जातं वैदुर्यपत्तने ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(१२)

गोदावरीतटे रम्ये, शोभितं ह्यरुणाश्रमे ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(१३)

जयन्तीनन्दनं भव्यं, नियमानन्दसुन्दरम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(१४)

व्रजे गोवर्द्धने रम्ये, निम्बग्रामे विराजितम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(१५)

निशायां वेधसे निम्ब-,पादपेऽर्कप्रदर्शकम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(७)

श्रीरङ्गदेवी सखीरूप तथा सखाओं में स्तोक नामक गोपस्वरूप से विराजमान परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(८)

आनन्द के मन्दिर श्रीलालजी की वंशी के एवं यष्टिका के स्वरूप से विराजमान परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(९)

गउओं में धूसर धेनु रूप तथा परम प्रिय आयुध श्रीसुदर्शन चक्रराज स्वरूप से विराजमान परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(१०)

कलियुग में इस भूमण्डल पर श्रीनिम्बार्काचार्य रूप से प्रकट हुये परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(११)

इस पवित्र भारतभूमि (दक्षिण भारत) में वैदुर्य नगर (मूंगी-पैठन) में तैलङ्ग-विप्रकुल में प्रकट हुये परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(१२)

सुरम्य गोदावरी नदी के तट पर सुशोभित अरुणाश्रम में प्रकट हुये परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(१३)

जयन्ती के नन्दन, भव्य, नियमानन्द नाम से सुन्दर परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(१४)

व्रज में श्रीगोवर्द्धन की उपत्यका (तलहटी) में सुरम्य निम्बग्राम में विराजमान परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(१५)

यति (सन्यासी) रूप से श्रीनिम्बार्काश्रम में आये हुये श्रीब्रह्माजी को सूर्यास्त पश्चात् रात्रि आगमन पर निम्बवृक्ष के शाखाओं के मध्य सूर्य के दर्शन कराने वाले परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(१६)

वेदान्तदेशिकं देवं, मुनीन्द्रमरुणात्मजम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(१७)

वेदान्तकामधेनोश्च, प्रणेतारं हरिप्रियम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(१८)

श्रुतीनां ब्रह्मसूत्राणां, भाष्यकारं मनोरमम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(१९)

गीतावाक्यार्थकारञ्च, सर्वाचार्यपुरातनम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(२०)

श्रौतधर्मविरुद्धानां, कृते प्रचण्डमायुधम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(२१)

कुतर्कखण्डने दक्ष-,मसंख्यभास्करप्रभम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(२२)

कपालवेधदेष्टारं, शास्त्रीयव्रतहेतवे ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(२३)

गोपालमन्त्रराजस्य, समाराधनतत्परम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(२४)

सर्वेश्वरार्चने व्यस्तं, करुणावरुणालयम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(१६)

वेदान्त (आध्यात्मिक ज्ञान) के उपदेशक, अरुण ऋषि के पुत्र, मुनीन्द्र, देव, परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(१७)

वेदान्तकामधेनु के रचयिता, हरिप्रियाचार्य, परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(१८)

श्रुतियों (उपनिषदों) व ब्रह्मसूत्रों के भाष्यकार, मन को आनन्द देने वाले परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(१९)

गीता का वाक्यार्थ करने वाले, सभी आचार्यों में पुरातन (आद्य) परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२०)

वैदिक धर्म के विरुद्ध मतवालों के लिये प्रचण्ड आयुध स्वरूप परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२१)

कुतर्कों के खण्डन में चतुर एवं असंख्य सूर्यों के समान तेजस्वी, परमाराध्य सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२२)

शास्त्रीय एकादशी आदि व्रतो के लिए कपालवेध (अर्द्धरात्र ४५ घटी के वेध) का उपदेश करने वाले परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२३)

श्रीगोपाल मन्त्रराज की आराधना में तत्पर परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२४)

श्रीसर्वेश्वर प्रभु के अर्चन में व्यस्त एवं करुणा के सागर परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२५)

धाम्नि वृन्दावने कुञ्जे, युग्मलीलाकलाविदम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(२६)

राधाकृष्णाङ्घ्रिपद्मान्त-,र्लीनमानसमुज्ज्वलम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(२७)

पूज्यं हरिप्रियाचार्यं, हरिभक्तिप्रदायकम् ।
निम्बार्काचार्यमाराध्यं, वन्दे नित्यं सुदर्शनम् ॥

(२८)

निम्बार्कस्तवराजोऽयं, राधाकृष्णाङ्घ्रिभक्तिदः ।
राधासर्वेश्वराद्येन, शरणान्तेन निर्मितः ॥

*

(२५)

श्रीवृन्दावनधाम श्रीनिकुञ्ज में प्रिया-प्रियतम युगल की लीला-कलाओं के कोविद (ज्ञाता) परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२६)

श्रीराधाकृष्ण के चरणकमलों में लीन-मानसवाले, उज्ज्वल परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं[१]।

(२७)

हरि की भक्ति देने वाले पूज्य हरिप्रियाचार्य परमाराध्य, सुदर्शन श्रीनिम्बार्काचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२८)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह श्रीनिम्बार्क-स्तवराज श्रीराधाकृष्ण के चरणकमलों की भक्ति देने वाला है ।

*

---

१. आपके अनेक नामों में श्रीहरिप्रियाचार्य भी एक नाम है ।

श्रीमन्निवासाचार्याष्टकम्

(१)

श्रीकृष्ण-शंखस्य शुभावतारो
निम्बार्क-शिष्यः प्रमुखो वरिष्ठः ।
आचार्य-वर्य्यो[1] बुध-वन्दनीयः
श्रीमन्निवासो हृदि भावनीयः ॥

(२)

निम्बार्क-भाष्यार्थविशिष्टरूप-
भाष्य-प्रणेता समुदारचित्तः ।
श्रुत्यर्थ-सार-प्रतिपादकश्च
श्रीमन्निवासो हृदि भावनीयः ॥

(३)

सौम्यः सदा शास्त्र-विचार-मग्नो
गाम्भीर्य्य-सौन्दर्य्य-सुधा-समुद्रः ।
सर्वेश्वराराधन-भावलीनः
श्रीमन्निवासो हृदि भावनीयः ॥

(४)

राधा-मुकुन्दाङ्घ्रि-सरोजभृङ्गः
तद्धामलीला-रस-पानमत्तः ।
वृन्दाटवी-कुञ्ज-सखीस्वरूपः
श्रीमन्निवासो हृदि भावनीयः ॥

(५)

शास्त्रार्थ-शीलः श्रुतिभाव-विज्ञः
श्रोता च राधाहरिसत्कथायाः ।
नित्यं प्रदाता प्रभुपादभक्तेः
श्रीमन्निवासो हृदि भावनीयः ॥

---

१. आचार्येषु मन्त्रव्याख्याकृत्सु वर्यः पूज्यतमः । मन्त्रव्याख्याकृदाचार्यः इत्यमरः ।

श्रीमन्निवासाचार्याष्टक

(१)

जो श्रीकृष्ण के पाञ्चजन्य शङ्ख के मङ्गलमय अवतार हैं, आद्य श्रीनिम्बार्काचार्यजी के साक्षात् शिष्य हैं, अन्य सभी शिष्यों में प्रमुख (प्रधान उत्तराधिकारी) एवं श्रेष्ठ है, मन्त्रों (वेदउपनिषद आदि) के व्याख्याकारों में पूज्यतम, विद्वानों द्वारा वन्दना करने योग्य उन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की हृदय में भावना करनी चाहिये ।

(२)

स्वगुरु श्रीनिम्बार्काचार्य द्वारा प्रणीत वेदान्त पारिजात सौरभ नामक भाष्य के अर्थ का विशेषरूप से भावार्थ-बोधक वेदान्त कौस्तुभ नामक भाष्य के रचयिता, वेदार्थ के रहस्य का प्रतिपादन करने वाले, उदार चित्त, अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की हृदय में भावना करनी चाहिये ।

(३)

सौम्यस्वरूप, सदा शास्त्रों के अनुशीलन में निमग्न, गम्भीरता और सुन्दरतारूपी अमृत के समुद्र, श्रीसर्वेश्वर प्रभु के आराधन में भावपूर्वक संलग्न, अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की हृदय में भावना करनी चाहिये ।

(४)

श्रीराधामुकुन्द (श्रीराधासर्वेश्वर) प्रभु के चरण कमल के भृङ्ग (भौंरा) इन्हीं दिव्य युगल के धाम व लीला-रस का पान करने मैं प्रसन्न, श्रीनित्यवृन्दावनधाम की कुञ्ज में श्रीनल्पवासा सखी स्वरूप अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की हृदय में भावना करनी चाहिये ।

(५)

शास्त्रों का अर्थ करना जिनका स्वभाव है, श्रुतियों (वेदों) के आशय के जो विशेषज्ञ हैं, श्रीराधासर्वेश्वर युगल की उत्तम कथा के श्रोता हैं, जो नित्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु के चरणों की भक्ति प्रदान करते हैं, उन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की हृदय में भावना करनी चाहिये ।

(६)

निम्बार्क-वीथी-पथिको मनस्वी
निम्बार्क-वेदान्त-वनाधिराजः ।
निम्बार्क-राद्धान्त-धन-प्रदो यः
श्रीमन्निवासो हृदि भावनीयः ॥

(७)

कुतर्क-कण्डू-शमने समर्थो
वितर्क-वादाचल-वज्ररूपः ।
अध्यात्म-विद्या-श्रुति-पारदृश्वा
श्रीमन्निवासो हृदि भावनीयः ॥

(८)

जगद्गुरुश्चाऽमरवन्दनीयः
समर्चनीयो हरि-भक्त-वृन्दैः ।
आराधनीयो रसिकै रसज्ञैः
श्रीमन्निवासो हृदि भावनीयः ॥

(९)

निवासाचार्यवर्य्याणां भक्तिदं महिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

जो श्रीनिम्बार्काचार्य द्वारा उपदिष्ट मार्ग के अनुयायी मनस्वी, निम्बार्क वेदान्त के कण्ठीरव (सिंह), निम्बार्क-सिद्धान्त स्वरूप धन के प्रदाता हैं, उन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की हृदय में भावना करनी चाहिये ।

(७)

जो कुतर्करूप कण्डू (खुजली) को शान्त करने में समर्थ हैं, वितर्कवाद रूप पर्वतों का खण्डन करने के लिये वज्र स्वरूप हैं, अध्यात्म विद्या एवं श्रुतियों का जिनको गहन ज्ञान है, उन अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की हृदय में भावना करनी चाहिये ।

(८)

जगत् के गुरु, देवताओं द्वारा वन्दनीय, श्रीहरिभक्त समूह द्वारा पूजनीय, रसविज्ञ रसिक भक्तों द्वारा आराधनीय अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिवासाचार्यजी महाराज की हृदय में भावना करनी चाहिये ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह श्रीनिवासाचार्यवर्य्य की महिमा द्योतक अष्टक (अष्टश्लोकात्मक स्तोत्र) नित्य पाठ करने वालों के लिये भक्ति प्रदान करता है ।

*

श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य-पञ्चश्श्लोकी

(१)

कृपाकोषसर्वेश्वरे दत्तचित्तं
व्रजे दिव्यकुञ्जे सदा शोभमानम् ।
श्रुतिज्ञान-विज्ञानविज्ञं रसज्ञं
भजे केशवाचार्यकाश्मीरिभट्टम् ॥

(२)

प्रियं गाङ्गलाचार्य भट्टेशशिष्यं
प्रियाचार्यनिम्बार्कपीठाधिरूढम् ।
बुधैः शास्त्रविज्ञै र्हृदा सेव्यमानं
भजे केशवाचार्यकाश्मीरिभट्टम् ॥

(३)

बुधं तन्त्रविद्याप्रवीणं प्रसन्नं
सुराराध्यराधामुकुन्दाङ्घ्रिमग्नम् ।
महाभाष्यरूपप्रभावृत्तिकारं
भजे केशवाचार्यकाश्मीरिभट्टम् ॥

(४)

व्रजे भानुजायाश्च विश्रामकूले
महाम्लेच्छतन्त्रस्य संहारकारम् ।
असीमप्रभावं तमानन्दरूपं
भजे केशवाचार्यकाश्मीरिभट्टम् ॥

श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्य-पञ्चश्लोकी

(१)

पूर्वाचार्यों द्वारा अविच्छिन्न रूप से समाराधित अनन्त अहैतुकी कृपा के निधिरूप सच्चिदानन्दघनस्वरूप परमाराध्य भगवान् श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु की आराधना में जिनका चित्त निरन्तर संलग्न है, जो व्रजधाम वृन्दावन के नित्य निकुञ्ज में नित्य सहचरी रूप में शोभायमान और आचार्यरूप में आविर्भूत होकर श्रुति-स्मृत्यादि शास्त्र-सम्मत निखिलज्ञान-विज्ञान के मर्म को यथार्थतः जानने वाले हैं जो श्रीप्रभु की दिव्य रसमयी लीलाओं के रसास्वादन में निपुण हैं उन आचार्यवर्य श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी महाराज का सदा हम भजन एवं चिन्तन करते हैं ।

(२)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्रीमद्गाङ्गल-भट्टाचार्यजी महाराज के परमप्रिय एवं प्रमुख शिष्य श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति पवित्र हृदय से विविध शास्त्रज्ञ विद्वज्जनों के द्वारा निरन्तर सेव्यमान आचार्यवर्य श्रीकेशव-काश्मीरिभट्टाचार्यजी महाराज का सदा हम भजन एवं चिन्तन करते हैं ।

(३)

नारदपञ्चरात्र--आदि तन्त्रविद्या के रहस्य को जानने में अग्रगण्य क्रम-दीपिकादि तन्त्र-ग्रन्थों का प्रणयन करके भगवदाराधन-पद्धति को जिन्होंने सुगम बना दिया ऐसे परम विद्वान् एवं सदा प्रसन्नहृदय ब्रह्मरुद्रेन्द्रादि निखिलदेववृन्दों के भी आराध्य श्रीराधामुकुन्द युगलकिशोर श्यामा-श्याम के दिव्य चरणारविन्दों में संलीन, शारीरिक मीमांसा सूत्र (ब्रह्मसूत्र) के कौस्तुभ-प्रभावृति नामक भाष्य के रचयिता, प्रस्थानत्रयी (गीता, ब्रह्मसूत्र, उपनिषद्) के अतिरिक्त श्रीमद्भागवतादि अनेकों शास्त्रों के व्याख्याकार, आचार्यवर्य श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी महाराज का सदा हम भजन एवं चिन्तन करते हैं ।

(४)

एक बार मथुरापुरी (व्रज) में श्रीयमुनाजी के परमपावन तट के पास प्रमुख राजमार्ग में मुगलसम्राट् ने हिन्दुओं को सन्तप्त करने के लिये एक सिद्ध यवनकाजी द्वारा ऐसा विचित्र यन्त्र लगवाया था जिसके नीचे से होकर किसी भी हिन्दू के निकलने पर वह मुसलमान बन जाय । म्लेच्छों द्वारा हिन्दुओं पर हो रहे ऐसे अत्याचार को सुनकर व्रजवासीजनों की प्रार्थना पर आपश्री अपनी काश्मीर-यात्रा से तत्काल व्रज में पधारे और वहाँ आकर आपने अपने दिव्य मन्त्र-शक्ति के प्रभाव से उन महाम्लेच्छों के यन्त्र-तन्त्र को नष्ट कर उसका संहार किया । ऐसे असीमप्रभाव शक्ति-सम्पन्न, आनन्दस्वरूप, आचार्यवर्य श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी महाराज का सदा हम भजन एवं चिन्तन करते हैं ।

(५)

पुराणार्थवेदान्त शास्त्रार्थदक्षं
वरं विश्वजेतारमाचार्यवर्यम् ।
स्वराष्ट्राऽऽर्तकल्याणसम्बद्धकक्षं
भजे केशवाचार्यकाश्मीरिभट्टम् ॥

(६)

काश्मीरिकेशवस्तोत्रं सिद्धिदं भक्तिदं वरम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

श्री श्रीभट्टदेवाचार्यमहिमाष्टकम्

(१)

हंस-स्वरूप-सनकादिक-नारदर्षि-
निम्बार्क-देशिक-सुशोभित-दिव्य-पीठे ।
आचार्यवर्यमभि राजितमालिरूपं
श्रीभट्टदेवमनिशं मनसा स्मरामि ॥

(२)

भट्टान्तकेशव-गुरोरुपलब्ध-दीक्षं
वृन्दावने रसमये रविजा-प्रतीरे ।
राधा-मुकुन्द-समुपासन-तुष्ट-चित्तं
श्रीभट्टदेवमनिशं मनसा स्मरामि ॥

(५)

सनातनधर्म एवं शास्त्र के विरुद्ध नाना प्रकार के तर्क, वितर्क, कुतर्क उपस्थित करने वालों को शास्त्रार्थ में पराजित कर उपनिषद् अर्थात् वेदान्त, पुराण, इतिहास आदि शास्त्र-सम्मत धर्म की रक्षा करने में परम दक्ष, देश के कौने-कौने तक स्वयं परिभ्रमण कर तीन बार पर्यन्त सबको शास्त्रार्थ में पराजित करने के कारण जिनका नाम जगद्विजयी विख्यात हुआ । दुष्टों द्वारा किये गये अत्याचारों से दुःखित अपने राष्ट्र के तथा दुःखीजनों के संकट को दूर कर सबका कल्याण करना ही जिनका सुदृढ नियम है ऐसे आचार्यप्रवर श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी[१] महाराज का सदा हम भक्ति-भाव के साथ भजन एवं चिन्तन करते हैं ।

(६)

सभी प्रकार की सिद्धियों को प्रदान करने वाले तथा श्रीसर्वेश्वर-राधामाधव प्रभु की दिव्य पराभक्ति प्रदायक अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य-पीठाधिपति जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी महाराज के इस पावन स्तोत्र की रचना आपके ही पुनीत पीठ पर समारूढ अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्का-चार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज ने की, जो सभी के लिए परम हितावह है ।

श्री श्रीभट्टदेवाचार्य महिमाष्टक

(१)

श्रीहंस भगवान्, श्रीसनकादि भगवान्, देवर्षि श्रीनारदजी, आद्याचार्य श्रीनिम्बार्क भगवान् तथा परवर्त्ती देशिक (श्रीनिवासाचार्य प्रभृति आचार्यवर्य्य) द्वारा सुशोभित, दिव्य आचार्यपीठ पर विराजमान, श्रीहितू सहचरी स्वरूप, आचार्यवर्य्य श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का हम सदा मन से स्मरण करते हैं ।

(२)

श्री श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी से दीक्षित, सूर्यात्मजा श्रीयमुनाजी के पावन तट पर रसमय श्रीवृन्दावनधाम में प्रिया-प्रियतम श्रीराधामुकुन्द युगल की उपासना से सन्तुष्ट चित्त, श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का हम सदा मन से स्मरण करते हैं ।

---

१. अधिकांश समय काश्मीर में रहने के कारण आपके नाम के आगे काश्मीरि शब्द सम्बद्ध हुआ है ।

(३)

श्रीधाम-सिन्धु-रससार-सुपान-शीलं
श्रीकुञ्ज युग्म-नवकेलि-विलास-लीनम् ।
नित्यं युगाङ्घ्रि-तुलसी-दल-गन्ध-मत्तं
श्रीभट्टदेवमनिशं मनसा स्मरामि ॥

(४)

राधाप्रिया-निजसखी-हितरूप-रुच्यं
तत्कुञ्ज-केलि-सुकला-रचना-प्रवीणम् ।
स्वाराध्यरूप-परिचिन्तन-दत्त-चित्तं
श्रीभट्टदेवमनिशं मनसा स्मरामि ॥

(५)

श्रुत्यर्थ-सार-निचयं निदधौ स्वशास्त्रे
श्रीयुग्म-पूर्ण-शतके रस-पुञ्ज-पूर्णे ।
तच्छ्रीयुतं रसिक-शेखर-शेखरेशं
श्रीभट्टदेवमनिशं मनसा स्मरामि ॥

(६)

यद्भावितेन युगलेन कदम्ब-कुञ्जे
रूपं निजं प्रकटितं घनवृष्टिसिक्तम् ।
एवञ्च तं युगल-चिन्तन-दत्त-चित्तं
श्रीभट्टदेवमनिशं मनसा स्मरामि ॥

(७)

वंशीवटे रस-घटे[१] रविजा-तटे यो
नित्यं विलोकयति माधव-रास-लीलाम् ।
प्रेमाम्बु-पूर्ण-नयनं किल तं प्रसिद्धं
श्रीभट्टदेवमनिशं मनसा स्मरामि ॥

---

१. घट चेष्टायाम् । रसः घटति चेष्टते (अभिव्यक्तो भवति) यत्र स रसघटस्तत्र रसाभिव्यक्तिस्थले इति यावत् ।

(३)

आनन्द सिन्धु श्रीधाम (नित्य वृन्दावन) के मधुर रससार का पान करने वाले श्रीनिकुञ्ज के युगल नव-केलि विलास में लीन, नित्य युगलचरण में समर्पित तुलसीदल के गन्ध से मत्त अर्थात् अतिशय आनन्दित, श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का हम सदा मन से स्मरण करते हैं ।

(४)

श्रीराधिकाजी की प्रिया निजाङ्गजा श्रीहितू सहचरी स्वरूप से मनोज्ञ, उनकी कुञ्ज केलि की सुन्दर कलाओं की विविध रचना में प्रवीण, अपने आराध्य श्रीप्रिया-प्रियतम युगल के स्वरूप चिन्तन में दत्त चित्त, श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का हम सदा मन से स्मरण करते हैं ।

(५)

स्वरचित सरस श्रीयुगलशतक रूप निज शास्त्र में जिन्होंने वेदार्थ के सार को निहित किया है, उन शोभाशाली, श्रेष्ठ रसिक शेखरों के मुकुटमणि श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का हम सदा मन से स्मरण करते हैं ।

(६)

जिनके भीजत कब देखौं इन नैना आदि सरस पद गान से भावित श्रीश्यामा-श्याम युगल ने कदम्बकुञ्ज में घनवृष्टि से अभिषिक्त होते हुए अपने स्वरूप को प्रकट किया, इसी प्रकार के सुमधुर पदों द्वारा अहर्निश युगल-चिन्तन में दत्त चित्त उन श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का हम सदा मन से स्मरण करते हैं ।

(७)

सूर्यात्मजा श्रीयमुनाजी के तट पर रसाभिव्यक्ति स्थल श्रीवंशीवट में श्रीराधामाधव की रासलीला का जो नित्य विलोकन करते हैं, जिनके नेत्र प्रेमाश्रुओं से परिपूर्ण है, उन प्रसिद्ध श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का हम सदा मन से स्मरण करते हैं ।

(८)

आप्लावितं युगल-केलि-विलास-सिन्धौ
लालायितं युगल-युग्म-पदारविन्दे ।
तद्दान-शीलममलं ललितं दयालुं
श्रीभट्टदेवमनिशं मनसा स्मरामि ।।

(९)

युग्माङ्घ्रि-भक्तिदं दिव्यं श्रीभट्ट-महिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

*

(८)

युगल सरकार श्रीलाड़िलीलाल के नित्यलीला-विलास सागर में आप्लावित (निमग्न), युगल चरण कमलों में लालायित, भक्तिरसदानशील, अमलात्मा, सुन्दर, दयालु, श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज का हम सदा मन से स्मरण करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह श्री श्रीभट्टदेवाचार्य महिमाष्टक श्रीयुगल सरकार के चरण कमलों की भक्ति देने वाला दिव्य स्तोत्र है ।

*

श्रीहरिव्यास षोड़शी

(१)

वेदादिशास्त्रसर्वज्ञ--,माप्तमूर्द्धन्यशेखरम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(२)

निम्बार्काचार्यराद्धान्त-,द्वैताद्वैतप्रचारकम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(३)

राधाकृष्णार्चने मग्नं, तल्लीलाभावभावितम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(४)

व्रजे वृन्दावने कुञ्जे, निकुञ्जे धाम्नि संस्थितम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(५)

हरिप्रियाख्यदिव्याऽलि-,रूपं सौम्यं मनोरमम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(६)

महावाणी--प्रणेतारं, देव्यै दीक्षाप्रदायकम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(७)

सनन्दनादि संसेव्य-,सर्वेश्वर-समर्चकम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(८)

शिष्यं श्रीभट्टदेवानां, देवाचार्यं-दयामयम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

श्रीहरिव्यास षोडशी

(१)

वेद आदि समस्त शास्त्रों के मर्म को जानने वाले, सत्यवादियों में मूर्द्धन्यों के भी शेखर (श्रेष्ठतम), जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(२)

आद्य निम्बार्काचार्य के स्वाभाविक द्वैताद्वैत सिद्धान्त का प्रचार करने वाले जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(३)

श्रीराधाकृष्ण युगल की सेवा में मग्न तथा इनकी निकुञ्ज लीलाओं के भाव से भावित जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(४)

व्रज, वृन्दावन, कुञ्ज व निकुञ्जधाम में विराजमान जगद्गुरु श्रीहरि-व्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(५)

श्रीहरिप्रिया नामक दिव्य सहचरीरूप, सौम्य व सुन्दर जगद्गुरु श्रीहरि-व्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(६)

श्रीमहावाणी के प्रणेता, मूर्तिमती देवी को भी दीक्षा प्रदान करने वाले जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(७)

श्रीसनकसनन्दानादि के नित्य संसेव्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु की सेवा करने वाले जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(८)

श्री श्रीभट्टदेवाचार्यजी महाराज के शिष्य, दयामय, देवाचार्य, जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(९)

अनन्त-श्रीयुतं देवं, निम्बार्काचार्य-पीठपम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(१०)

श्यामाश्यामपदाम्भोज-,मकरन्दसुधाप्लुतम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(११)

राधापदांकसंचार, राधा-चिन्तनतत्परम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(१२)

रासलीलार्णवे लीनं, युग्मकेलिकलाकरम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(१३)

असंख्यसाधुभिः सेव्यं, मथुरायां विराजितम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(१४)

वैष्णवधर्मरक्षार्थं, बंभ्रम्यमाणमुद्यतम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(१५)

वेदान्तकामधेनोश्च, भाष्यकारं तपः परम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(१६)

अखण्डमण्डलाचार्यं, कुतर्क-खण्डने पटुम् ।
श्रीहरिव्यासमाचार्यं, वन्दे श्रीमज्जगद्गुरुम् ॥

(१७)

हरि-भक्तिप्रदा दिव्या, श्रीहरिव्यास षोड़शी ।
राधासर्वेश्वराद्येन, शरणान्तेन निर्मितम् ॥ *

(९)

अनन्त श्रीविभूषित, श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति, जगद्गुरु श्रीहरिव्यास-देवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(१०)

श्रीश्यामाश्याम के चरण कमल मकरन्द की सुधा से अभिषिक्त जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(११)

श्रीप्रियाजी के श्रीचरणारविन्दों का अपने अंक (गोद) में अर्थात् सेवा में तन्मनस्क रहने और श्रीराधा चिन्तन में तत्पर जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(१२)

रासलीला के रससागर में निमग्न, युग्म केलि की कलाओं के आकर (खजाना) जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(१३)

असंख्य साधुओं से सेवित, मथुरा में विराजमान, जगद्गुरु श्रीहरिव्यास-देवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(१४)

वैष्णव धर्म की रक्षा के लिये कटिबद्ध एवं भ्रमणशील जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(१५)

वेदान्त कामधेनु के सिद्धान्त-रत्नाञ्जलि नामक भाष्यकर्त्ता तपोनिष्ठ जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(१६)

कुतर्कों के खण्डन करने में चतुर निखिल महीमण्डलाचार्य, जगद्गुरु श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज की वन्दना करते हैं ।

(१७)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह दिव्य श्रीहरिव्यास षोडशी हरिभक्ति प्रदान करने वाली है।

*

श्रीपरशुरामदेवाचार्य--चतुश्श्लोकी

(१)

श्रुति-पुराण-तन्त्रज्ञं, राधासर्वेश्वराश्रितम् ।
परशुराममाचार्यं, वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ॥

(२)

निम्बार्काचार्यपीठेशं, श्रीमन्निम्बार्करूपिणम् ।
परशुराममाचार्यं, वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ॥

(३)

श्रीहरिव्यासदेवानां, शिष्यं सर्वप्रपूजितम् ।
परशुराममाचार्यं, वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ॥

(४)

प्रत्यक्षं सिद्धिदं दिव्यं, देवाचार्यं दयाकरम् ।
परशुराममाचार्यं, वन्दे नित्यं जगद्गुरुम् ॥

(५)

(श्री) परशुरामदेवाङ्घ्रि-,चतुश्श्लोकी वरप्रदा ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मिता ॥

*

श्रीपरशुरामदेवाचार्य चतुश्श्लोकी

(१)

वेद, पुराण और तन्त्रों के ज्ञाता, श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के चरणाश्रित जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(२)

श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति, श्रीमन्निम्बार्क स्वरूप जगद्गुरु श्रीपरशुराम-देवाचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(३)

श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी महाराज के शिष्य एवं समस्त भक्तजनों के द्वारा पूजित जगद्गुरु श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(४)

प्रत्यक्ष, सिद्धिदाता, दिव्य, देवाचार्य, दयालु जगद्गुरु श्रीपरशुराम-देवाचार्यजी महाराज की नित्य वन्दना करते हैं ।

(५)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित श्रीपरशुरामदेवाचार्यचरणों की स्तुति रूप यह चतुश्श्लोकी पाठ करने वाले साधकों को अभीष्ट-वर प्रदान करने वाली है ।

*

श्रीमद्गुरुस्तवः

(१)

निम्बार्कदेशिकपथाग्रसरं प्रसिद्धं
निम्बार्कपीठपतिमाप्तमुदारचितम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुध-वृन्दसेव्यं
श्रीबालकृष्णशरणं गुरुवर्यमीडे ॥

(२)

वेदान्तसूत्र-सकलागम-तन्त्रविज्ञं
गीतापुराणपठने कथने प्रवीणम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुध-वृन्दसेव्यं
श्रीबालकृष्णशरणं गुरुवर्यमीडे ॥

(३)

सर्वेश्वरार्चनपरं हरिभक्तिलीनं
गोपालमन्त्रजप-तत्परमिष्टनिष्ठम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुध-वृन्दसेव्यं
श्रीबालकृष्णशरणं गुरुवर्यमीडे ॥

(४)

वृन्दावने रसघने कृतदीर्घवासं
राधामुकुन्दरसरासरहस्यविज्ञम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुध-वृन्दसेव्यं
श्रीबालकृष्णशरणं गुरुवर्यमीडे ॥

(५)

आदित्यबिम्ब-परिदर्शनदत्तदृष्टिं
पद्मासनेन सततं भजने प्ररूढम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुध-वृन्दसेव्यं
श्रीबालकृष्णशरणं गुरुवर्यमीडे ॥

श्रीमद्गुरुस्तव

(१)

श्रीनिम्बार्काचार्यजी द्वारा उपदिष्ट उपासना मार्ग में अग्रसर, यथार्थवादी, उदार मनवाले, प्रसिद्ध श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ के अधिपति, बुधवृन्द (विद्वत्समूह) द्वारा सेव्य (सेवा करने योग्य) गुरुवर्य्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज की नित्य स्तुति करते हैं ।

(२)

वेदान्तसूत्र, समस्त शास्त्र एवं तन्त्र के विशेषज्ञ, गीता व पुराणों का पाठ व प्रवचन करने में चतुर, बुधवृन्दसेव्य गुरुवर्य्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज की नित्य स्तुति करते हैं ।

(३)

श्रीसर्वेश्वर भगवान् की सेवा में तत्पर, हरि (श्रीराधामाधव भगवान्) की भक्ति में लीन, श्रीगोपाल मन्त्रराज के जप करने में तत्पर, अपने इष्ट (श्रीयुगल सरकार) में निष्ठा रखने वाले, बुधवृन्दसेव्य गुरुवर्य्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज की नित्य स्तुति करते हैं ।

(४)

सरस श्रीवृन्दावनधाम में अधिक काल तक निवास करने करने वाले, श्रीराधामुकुन्द की रसमय रासलीला के रहस्य के ज्ञाता, बुधवृन्दसेव्य गुरुवर्य्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज की नित्य स्तुति करते हैं ।

(५)

श्रीसूर्य भगवान् के दर्शन में निर्निमेष दत्तदृष्टि, पद्मासन से विराजमान होकर निरन्तर भजन करने में संलग्न, बुधवृन्दसेव्य गुरुवर्य्य श्रीबालकृष्णशरण-देवाचार्यजी महाराज की नित्य स्तुति करते हैं ।

(६)

सर्वार्थ-सिद्धिवरदं सरलं शरण्यं
सर्वप्रियं सरस शान्तिमयं मनोज्ञम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुध-वृन्दसेव्यं
श्रीबालकृष्णशरणं गुरुवर्यमीडे ॥

(७)

श्रीयुग्मकुञ्जरसकेलिविलाससिन्धौ
संप्लावितं रसिकभक्तसुचित्तवित्तम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुध-वृन्दसेव्यं
श्रीबालकृष्णशरणं गुरुवर्यमीडे ॥

(८)

श्रीमन्त्रराजहवनाप्तसुमंजुसिद्धिं
श्रीमज्जगद्गुरुवरं करुणापयोधिम् ।
आचार्यदेवमनिशं बुध-वृन्दसेव्यं
श्रीबालकृष्णशरणं गुरुवर्यमीडे ॥

(९)

श्रीमद्गुरुस्तवो दिव्यो गुरुभक्तिप्रदायकः ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ॥

इति पूर्वार्द्धम् *

(६)

सभी प्रकार के अर्थों की सिद्धि का वर देने वाले, सरल स्वभाव वाले, शरणागत भक्तजनों की रक्षा करने वाले, सबके प्रिय, सरस एवं शान्तिमय, सुरम्य, बुधवृन्दसेव्य गुरुवर्य्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज की नित्य स्तुति करते हैं ।

(७)

श्रीयुगलसरकार की निकुञ्ज में सरस लीलाओं के विलास-सागर में निमग्न, रसिक भक्तजनों के हृदय सर्वस्व, बुधवृन्दसेव्य गुरुवर्य्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज की नित्य स्तुति करते हैं ।

(८)

श्रीमन्त्रराज के हवन से जिनको सुन्दर सिद्धि प्राप्त हो गई है, जो गौरवशाली जगद्गुरु पद पर विराजमान एवं करुणा के सागर, उन बुधवृन्दसेव्य गुरुवर्य्य श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज की नित्य स्तुति करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित अपने साक्षात् दीक्षागुरु श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज की स्तुति-परक यह दिव्य श्रीमद्गुरुस्तव गुरुभक्ति प्रदायक है ।

॥ पूर्वार्द्ध समाप्त ॥

---

१. आप प्रतिदिन दो या अढाई घन्टे तक श्रीसूर्य भगवान् को बिना पलक झपाये टकटकी लगाकर देखते हुये मन्त्रराज का जप करते रहते थे-इस विशिष्ट दिनचर्या की ओर प्रस्तुत विशेषण (आदित्यबिम्बपरिदर्शनदत्तदृष्टिम्) द्वारा संकेत किया गया है ।

अवलोकय सखि ! वृन्दाविपिनम् ।
युगल-ललित-नवकेलिरसाऽमृत-सीकर-वर्षण-हर्षित--वदनम् ।।
कोकिल-केका-शुक-कुलकलरव-गुञ्जितनिखिलवनान्तरदेशम् ।
परममनोरमविविधद्रुमावलि------विकसितकुसुमसुगन्धसुरम्यम् ।।
रवितनया जल-जलज-जलकणिका-मौक्तिकमालामण्डितमधुरम् ।
श्रीराधासर्वेश्वरशरणः प्रणमति नित्यं नित्यनवीनम् ।।

श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः

श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः

उत्तरार्द्ध

श्रीस्तवरत्नाञ्लि के पूर्वार्द्ध में चतुर्विंशति २४ स्तव (स्तोत्र) हैं, इनमें प्रारम्भ में द्वादश १२ स्तवों से प्रथम सर्वोपरिधाम व्रजवृन्दावन धाम, कलिन्दनन्दिनी श्रीयमुनाजी तथा अनन्तकोटिब्रह्माण्डनायक, क्षराक्षरातीत, निखिलजगद-भिन्ननिमित्तोपादानकरण, जगज्जन्मादिहेतु, सर्वनियन्ता, सर्वान्तरात्मा, सर्वाधार, सर्वज्ञ, निरतिशय सौन्दर्य-माधुर्य-लावण्याद्यनन्तकल्याण-गुणार्णव, कोटिकन्दर्पदर्पदलनपटीयान्, अखिलरसामृतसारसिन्धुघनविग्रह, नित्यनिकुञ्जविहारी, सर्वेश्वर, युगलकिशोर, श्यामाश्याम श्रीराधामाधव का स्तवन आराधन हुआ है । ये गोलोक विहारी युगलवर श्रीराधाकृष्ण नित्यदिव्यसच्चिदानन्दघनरूप श्रीमद्‌वृन्दावन में अनन्त-अनन्त सखीसमूह से नित्यनवसुशोभित ललितनवकेलिरसविलास का दिव्यातिदिव्य रसास्वादन विलसते हैं । श्रीनिकुञ्जधाम में अनवरत समुच्छलित इस रसामृतसिन्धु का समास्वादन नित्यनिकुञ्जसखीपरिकर द्वारा प्रतिपल हुआ करता है ।

यह निकुञ्जरस मधुरातिमधुर दिव्यातिदिव्य महामञ्जुल असीम अलौकिक एवं अप्राकृत है । श्रुति, पुराण, सूत्र, तन्त्रादि ग्रन्थों में यह रस सूत्रात्मक रूप से परिवर्णित हुआ है । **रसो वै सः, रसं ह्येवायं लब्ध्वाऽऽनन्दीभवति, सोऽश्नुते सर्वान् कामान् सह ब्रह्मणा विपश्चिता, स आत्मरति आत्मक्रीड आत्ममिथुनः, स तत्र पर्य्येति जक्षन् क्रीडन् रममाणः, आनन्दं ब्रह्म, सैषा आनन्दस्य मीमांसा भवति, आनन्दमयोऽभ्यासात्**, इत्यादि बहुविध वचन हैं । इसी महारास का साङ्गोपाङ्ग विशद् वर्णन श्रीमहावाणी आदि रसमय ग्रन्थों में हुआ है जिसका आस्वादन रसमर्मज्ञ रसिक महानुभाव श्रीवृन्दारण्य की निभृत-निकुञ्जों में अनवरत करते हैं । इसी परम दिव्य रस की सुन्दर मधुर अभिव्यक्ति श्रीस्तवरत्नाञ्जलि के पूर्वार्द्ध में द्वादाश स्तवों में विद्यमान है । त्रयोदश १३ स्तव से सम्प्रदाय की आचार्य परम्परानुसार सर्वप्रथम श्रीहंसभगवान् का स्तवन किया गया है । तदनन्तर क्रमशः श्रीसनकादि महर्षि, देवर्षि नारद, तथा सम्प्रदाय प्रवर्तक आद्याचार्य सुदर्शनचक्रावतार श्रीमन्निम्बार्काचार्य भगवान् और भाष्यकार श्रीनिवासाचार्यजी महाराज, जगद्विजयी श्रीकेशवकाश्मीरिभट्टाचार्यजी, श्रीश्रीभट्टाचार्यजी, श्रीहरिव्यासदेवाचार्यजी, श्रीपरशुरामदेवाचार्यजी एवं तत्पीठाधीश्वर अनन्त श्रीविभूषित

जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्य श्री श्रीजी श्रीबालकृष्णशरणदेवाचार्यजी महाराज का भी मधुरातिमधुर स्तवन हुआ है ।

उत्तरार्द्ध में पञ्चदश १५ स्तव हैं । इन स्तवों में सर्व प्रथम श्रीगणेशाष्टक स्तव हैं जिसमें श्रीगणपति की महिमा का वर्णन एवं उनकी अभिवन्दना की गई है । किसी भी माङ्गलिक कार्य में उनका स्मरण आवश्यक है । वे विघ्नेश्वरदेव सभी विघ्नों का हरण कर लेते हैं, सदा प्रसन्नमुख एवं परम उदार है । निरन्तर स्वयं ये श्रीप्रभु आराधना में स्थित रहते हैं । इनकी महिमा का वर्णन शास्त्रों में पर्याप्त है । द्वितीय-स्तव में श्रीहरिवाहन नित्यपार्षद श्रीगरुड की वन्दना है । ये देव सेवा-विधान के महान् प्रतीक है । भगवान् श्रीकृष्ण श्रीविष्णु के नित्यदिव्य पार्षद है । श्रीभगवदीय आज्ञा के पालन में प्रतिपल सन्नद्ध रहने वाले ये देव बड़े ही सात्विक और सरस हैं । इनका स्तवन परम कल्याणकारी होता है ।

तृतीय-स्तव में श्रीहरि की ऐश्वर्याधिष्ठातृ देवी श्रीलक्ष्मीजी की वन्दना है । ये देवी द्वारका में रुक्मिणी रूप से परात्पर परब्रह्म भगवान् श्रीकृष्ण के वामाङ्ग में नित्य विराजमान हैं तथा वैकुण्ठधाम में लक्ष्मीस्वरूप से भगवान् श्रीविष्णु के वामाङ्ग में नित्य सुशोभित रहती हैं । इनके कृपाकण से ही सकलसृष्टि का ऐश्वर्य अवस्थित है । इनकी वन्दना परमैश्वर्य को प्रदान करने वाली होती है । चतुर्थ-स्तव से साक्षात् श्रीमन्नारायण भगवान् विष्णु का स्तवन हुआ है । निखिलसृष्टिपालक पूर्ण परब्रह्म भगवान् विष्णु जगज्जन्मादि हेतु हैं । इन शेषशायी प्रभु की अनन्त असीम महिमा है । वेदस्मृति, पुराणादि समग्र शास्त्रों में इनके दिव्यस्वरूप का अनन्त-गुणार्णवता का अद्भुत वर्णन है । इनकी आराधना श्रीभगवद्धाम प्राप्ति कारक एवं महामङ्गलरूप है, अनन्ताचिन्त्य है अनिर्वचनीय लोकोत्तर है ।

पञ्चम-स्तव से भक्त शिरोमणि वैष्णवाग्रगण्य पवनतनय अञ्जनीकुमार श्रीहनुमान्जी की अप्रतिम महिमा का वर्णन हुआ है । वस्तुतः श्रीहनुमान्जी दास्य-भक्ति के अद्वितीय अनुपम उदाहरण है । षष्ठ तथा सप्तम स्तव से अखिल ब्रह्माण्डनायक हृदयाभिराम मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीसीतारामजी का मधुर स्तवन-वन्दन हुआ है । इन राजीवलोचन कोटिकन्दर्पलावण्य, निखिलभुवनमोहन परब्रह्म भगवान् श्रीसीतारामजी के लोकपावन मङ्गल-चरित्र से हमारे सभी शास्त्र प्रपूरित हैं ।

अष्टम स्तव से श्रीवैष्णवी देवी तथा नवम स्तव से आशुतोष गोपीश्वर भगवान् श्रीशिव का वन्दन किया गया है । दशम-स्तव से वाणी की अधिष्ठातृदेवी श्रीसरस्वतीजी का एवं एकादश स्तव से पुण्यतोया भगवती सुरसरी श्रीगंगाजी का अभिवन्दन हुआ है । द्वादश-स्तव से गो-माता की अनन्त महिमा का वर्णन है ।

त्रयोदश-स्तव से तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज की दिव्य महिमा का दिग्दर्शन है । श्रीपुष्कर कोटि-कोटि तीर्थों के एकमात्र सर्वोपरि गुरु स्थान पर अधिष्ठित हैं । समग्र भूमण्डल पर एक ही यह पावन तीर्थ हैं जहाँ जगत्स्रष्टा पितामह श्रीब्रह्मा का अधिष्ठान है । जहाँ नाग पर्वत का भव्य दर्शन अनिर्वचनीय है । वैदिककाल के प्राचीनतम महर्षि वामदेव, अगस्त्य मुनि, विश्वामित्र, प्रभृति ऋषिमुनियों की पावनस्थली रही है । श्रीहरि के २४ अवतारों में श्रीहंसावतार का भी पुण्यस्थान श्रीपुष्कर ही है । चतुर्दश स्तव से श्रीनिम्बार्कतीर्थ की महिमा का प्रख्यापन हुआ है । यह तीर्थ श्रीपुष्करारण्य क्षेत्र के अन्तर्गत है, जो परम द्रष्टव्य है । इस तीर्थ की भी विलक्षण महिमा है । यहाँ महाविष्णु भगवान् प्रकट होकर कोलाहल दैत्य का बध किया एवं भगवान् सूर्यदेव ने निम्बवृक्ष पर सूक्ष्म रूप से निवास किया और उनके प्रखर किरणों से जिस सरोवर का उद्भव हुआ उसी का नाम निम्बार्कतीर्थ विख्यात हुआ । इसी तीर्थ स्थल पर अ० भा० श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ विद्यमान है ।

पञ्चदश-स्तव से युगल प्रियालाल श्रीराधामाधव की उपासना परक भावना व्यक्त की गई है । साथ ही ब्रज-वृन्दावन के अनुसेवन का भी हृदयग्राही वर्णन है । जो रसिक सन्त सर्वात्मसमर्पण करके स्वाराध्य का अभिचिन्तन करते हुये श्रीवृन्दावन धाम का मङ्गलमय वास करते हैं, उनके भाग्य की सराहना सूचक भाव भी वर्णित हुआ है । इसके अतिरिक्त साधकों को अपने यथार्थ कर्तव्य परिपालन परक प्रेरणादायी भाव भी अतिकमनीयतापूर्वक प्रतिपादित हुआ है ।

स्तवों द्वारा की गई आराधना कभी विफल नहीं होती । स्तवों से स्वाराध्य का चिन्तन निष्ठापूर्वक यदि किया जाय तो उनकी निर्हैतुकी कृपा कादम्बिनी का अभिवर्षण अवश्य ही संभाव्य है । रामायण महाभारत पुराण-तन्त्रादि शास्त्रों में नाना स्थलों पर स्तवों द्वारा श्रीहरि का स्तवन हुआ है । और उस स्तवन से अनुग्रहविग्रह श्रीसर्वेश्वर प्रत्यक्ष होकर प्रपन्न आर्त भक्तों को परम कृपामयी दृष्टि से उन्हें कृतार्थ किया है । इस प्रस्तुत ग्रन्थ में भी सरस स्तवों द्वारा स्तुति-गान हुआ है । इन स्तवों का यदि दृढ विश्वास एवं पूर्णनिष्ठा युक्त होकर सुन्दर गान किया जाय तो वे सर्वान्तर्यामी श्रीप्रभु अवश्य ही प्रमुदित होकर किसी भी रूप में कृपाभिवर्षण कर ही देंगे । कितने ही तोटक भृजङ्गप्रयात आदि छन्दों में निबद्ध ऐसे स्तव हैं जिन्हें किसी भी शास्त्रीय राग-विशेष में लय बद्ध अपने कमनीय कल-कण्ठ से भावनापूर्वक गीति रूप में गा सकते हैं जिससे स्वतः ही स्वकीय मानस में एक अनुपम रस की धारा प्रवाहित होगी । श्लोक रचना में सरसता, मधुरता, सरलता विद्यमान है । अनेक स्थलों पर अनुप्रास, यमक, आदिशब्दालंकार, उपमा, रूपकादि, अर्थालङ्कार रस एवं भावों की अभिव्यञ्जना सहज बन पड़ी है जिसे भावुक हृदय वरवश पुनः पुनः पठन की उत्कण्ठा करता है । स्तव-रचना में भावगाम्भीर्य माधुर्य्य के साथ-साथ शास्त्रीय मर्यादा

का भी विशेष ध्यान रखा गया है । स्तवों में सरसता हो, भक्ति हो, भाव हो, साथ ही वेदादि शास्त्रानुकूल्य हो तभी वे स्तव आप्ताभिप्रेत परमोत्तम होते हैं । श्रीस्तवरत्नाञ्जलि ग्रन्थ में अभिवर्णित गेय स्तवों में यह सभी कुछ विद्यमान है ।

उक्त ग्रन्थ दो भागों में विभक्त है--पूर्वार्द्ध और उत्तरार्द्ध । इसके पूर्वार्द्ध में श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय के आराध्यदेव वृन्दावन नवनिकुञ्जविहारी युगलकिशोर श्यामाश्याम भगवान् श्रीराधाकृष्ण का तथा सम्प्रदाय के पूर्वाचार्यवर्यों का मङ्गलमय स्तवन हुआ है । उत्तरार्द्ध में श्रीगणेश, श्रीगरुड़, श्रीलक्ष्मी, श्रीनारायण, श्रीहनुमान्, भगवान् श्रीसीताराम, श्रीवैष्णवीदेवी, श्रीशिव, श्रीसरस्वती, श्रीगंगा, श्रीगोमाता, श्रीपुष्करतीर्थ, श्रीनिम्बार्कतीर्थ आदि का भी सर्वहितावह स्तवन हुआ है ।

ग्रन्थ के प्रारम्भ से अन्त तक सभी स्तव नाना छन्दों में विबद्ध हैं जो बड़े ही मधुर हैं । तोटक, वसन्ततिलका, इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, उपजाति, मालिनी, शालिनी, वियोगिनी, इन्दिरा, भुजङ्गप्रयात, अनुष्टुप् आदि विविध छन्द प्रमुखरूप से हैं । इनमें तोटक, इन्दिरा और भुजङ्गप्रयात प्रभृति ऐसे छन्द हैं जो लयबद्धपूर्वक अनेक राग-रागनियों में गाये जा सकते हैं । भावुकजन जब इन्हें तन्मय होकर गायेंगे तब स्वतः ही उनका मन-मयूर स्वाभाविकरूप से नरीनृत्यमान हो उठेगा ।

प्रस्तुत श्रीस्तवरत्नाञ्जलि ग्रन्थ में जिन स्तवों की रचना हुई वह श्रीनिम्बार्क सम्प्रदाय की प्राचीन परम्परानुरूप एवं वैष्णवसम्प्रदायानुकूल ही सम्पन्न हुई है । जिन्हें किसी भी प्रकार की कोई विचिकित्सा, विप्रतिपत्ति (सन्देह) की आशंका हो वे अपने पूर्वाचार्यों के संस्कृत भाषा-ग्रन्थों का गम्भीरतम अनुशीलन करें, स्वतः सभी आशंकाओं का सम्यक् समाधान प्राप्त हो जावेगा ।

वस्तुतः जिनको शास्त्रों का विधिवत् अध्ययन-अनुशीलन नहीं है अथवा शास्त्रज्ञ मेधावी महापुरुषों का सान्निध्य प्राप्त नहीं है उन्हें पद-पद पर विभिन्न आशंकाओं एवं भ्रम का होना स्वाभाविक है । उन्हें पूर्वाचार्यों के ग्रन्थों का बड़े ही स्वस्थ-शान्त चित्त से मनन करना चाहिये जिससे सभी विपरीत धारणाओं का अपने आप निराकरण (शमन) हो सके । यह श्रीस्तवरत्नाञ्जलि ग्रन्थ अपने पूर्वाचार्यों के सिद्धान्तों एवं समन्वयात्मक विचारों का ही प्रख्यापन करती है । इसमें किसी प्रकार का सन्देह प्रकट करना ही सर्वथा भ्रामकता पूर्ण अज्ञता है ।

*

श्रीगणेशाष्टकम्

(१)

गणेशं सदा विघ्नबाधाकदम्ब-
प्रणाशे पटुं नित्यशान्तं गभीरम् ।
प्रसन्नं सुपीनं हरेर्ध्यानमग्नं
महामोदकारं सुदेवं नमामि ॥

(२)

विशालं शुभं वक्रतुण्डं मनोज्ञं
प्रवीणञ्च विज्ञानविद्याकलासु ।
असीमप्रभावं गुणज्ञानकोषं
प्रपूज्यं सदा सर्वदेवेषु वन्दे ॥

(३)

दयासागरं दिव्यधी--दानकक्षं
सदा साधकेभ्यो मुदा मुक्तहस्तम् ।
शुभारम्भवन्द्यं प्रियं कान्तिमन्तं
गणेशं वरेशं सुरेशं नमामि ॥

(४)

दधानं करे मोदकं गौरवर्णं
मणीनां महामालया शोभमानम् ।
उपास्यं जनै-र्भावुकै-र्भव्यरूपं
धिया सेव्यमानं गणेशं नमामि ॥

(५)

गणाधीश्वरं सद्गुणाढ्यं गणेशं
वरिष्ठं महाविघ्नहर्तारमीड्यम् ।
विचित्राम्बरं भालचन्द्रं गजास्यं
सदा चेतसा चिन्तनीयञ्च वन्दे ॥

श्रीगणेशाष्टक

इस उत्तरार्द्ध में सर्वप्रथम वन्दनीय श्रीगणेशजी की स्तुति रूप श्रीगणेशाष्टक नामक स्तोत्र प्रारम्भ होता है ।

(१)

सदा विघ्न बाधाओं के समूह का नाश करने में चतुर नित्य शान्त, गम्भीर, प्रसन्न, स्थूल, श्रीहरि भगवान् के ध्यान में मग्न, महान् मोद (आनन्द) करने वाले, सुदेव श्रीगणेशजी को नमस्कार करते हैं ।

(२)

आकृति में विशाल, शुभकर, सुन्दर, विज्ञान विद्या व कलाओं में प्रवीण, असीम प्रभाववाले, गुण और ज्ञान के निधि, सदा समस्त देवों में पूज्य, वक्रतुण्ड श्रीगणेशजी की वन्दना करते हैं ।

(३)

दया के सागर, दिव्य बुद्धि का दान करने में चतुर, साधकों (उपासकों) के लिये सदा प्रसन्नता के साथ मुक्तहस्त (वर देने वाले), सभी शुभ कार्यों के प्रारम्भ में वन्दनीय, प्रिय, कान्तिमान्, श्रेष्ठ स्वामी, देवों के ईश श्रीगणेशजी को नमस्कार करते हैं ।

(४)

हस्त कमल में मोदक धारण किये हुये, गौरवर्ण, मणियों की विशाल माला से शोभित, भावुक भक्तजनों के उपास्य, बुद्धि से सेव्यमान, भव्यरूप, श्रीगणेशजी को नमस्कार करते हैं ।

(५)

गणों के स्वामी, दया दाक्षिण्य आदि सद्गुणों से युक्त, श्रेष्ठ, महान् विघ्नहर्त्ता, स्तुति के योग्य, विचित्र वस्त्रों से शोभित, चन्द्रमा से अलंकृत भालवाले, गज के मुख जैसा मुखवाले, सदा मन से चिन्तनीय श्रीगणेशजी की वन्दना करते हैं ।

(६)

सुलेम्बोदरं मूसकस्थं मतीशं
प्रसिद्धं सतामृद्धिसिद्धिप्रसेव्यम् ।
नरीनृत्यमानं हरेः कीर्तने च
प्रसन्नाऽननं श्रीगणेशं प्रणौमि ॥

(७)

सुदूर्वाङ्कुरै रक्तपुष्पैः प्रसन्नं
श्रुतीनां सुमन्त्रैः सदा सेव्यमानम् ।
समाराध्यमाप्तै र्गुणागाररूपं
गणेशं नुतं भूतयूथै र्नमामि ॥

(८)

अहो सुन्दरं शास्त्रसिद्धं स्वरूपं
महादेवदेवं शरण्यं वरेण्यम् ।
अचिन्त्यं सुधीवृन्दसेव्यं सुधापं
सदानन्दपूर्णं गणेशं प्रणौमि ॥

(९)

श्रीगणेशाष्टकं स्तोत्रमृद्धिसिद्धिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

सुन्दर लम्बोदर, मूषक पर विराजमान, बुद्धि के ईश, सज्जनों में प्रसिद्ध, ऋषि व सिद्धि द्वारा सेवनीय, श्रीहरि भगवान् के कीर्तन में पुनः पुनः नृत्य करते हुये, प्रसन्न मुख श्रीगणेशजी की स्तुति करते हैं ।

(७)

सुन्दर दूर्वाङ्कुरों व लाल पुष्पों से प्रसन्न होने वाले, सदा वेदमन्त्रों से सेव्यमान, आप्त (यथार्थवादी) जनों से समाराधनीय, गुणों के निधि स्वरूप, भूतगणों द्वारा नमस्कृत श्रीगणेशजी को नमस्कार करते हैं ।

(८)

अहो ! शास्त्र प्रतिपादित गणेशजी का कितना सुन्दर स्वरूप है ? महान् देवों के भी देव, शरणागत की रक्षा करने वाले, भक्तजनों द्वारा वरणीय, अचिन्त्य, बुधवृन्द द्वारा सेवनीय, सुधापान करने वाले, सदा आनन्द से परिपूर्ण, श्रीगणेशजी की स्तुति करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह श्रीगणेशाष्टक स्तोत्र नित्य पाठ करने वालों के लिये ऋद्धि और सिद्धि को देने वाला है ।

श्रीगरुडाष्टकम्

(१)

श्रीकृष्ण-सत्पार्षद-नित्यभक्तं
महाबलं तीव्रसमीरवेगम् ।
मनोजवं मञ्जुलरूप--धाम
श्रीवैनतेयं गरुडं स्मरामः ॥

(२)

असीमसामर्थ्य--महानिधानं
भयापहं भागवतं वरेण्यम् ।
गोलोकधाममोत्तमनित्यवासं
श्रीवैनतेयं गरुडं स्मरामः ॥

(३)

यच्चारुभक्त्या भगवान्मुकुन्दः
प्रसीददति श्रीरिव सुप्रसन्नः ।
तं विष्णुभक्तं हरिवाहनञ्च
श्रीवैनतेयं गरुडं स्मरामः ॥

(४)

यत्तीव्रवेगेन समे पिशाचा
भयावहा हीनबला द्रवन्ति ।
खगेश्वरं तं सुरसेव्यमानं
श्रीवैनतेयं गरुडं स्मरामः ॥

(५)

हरेश्च नामानि सुमङ्गलानि
दिव्यानि नित्यं रसनिर्झराणि ।
स्वान्ते स्मरन्तं तमनन्यभक्तं
श्रीवैनतेयं गरुडं स्मरामः ॥

श्रीगरुडाष्टक

(१)

श्रीकृष्ण भगवान् के श्रेष्ठ पार्षद, नित्य भक्त, महान् पराक्रमी, तीव्र वायु के वेग के समान गतिशील, मन के सदृश वेग वाले, सुन्दर स्वरूप-धाम विनिता के पुत्र श्रीगरुडजी का हम स्मरण करते हैं ।

(२)

अपार शक्ति सम्पन्न भय का नाश करने वाले, परम वैष्णव, वरणीय, उत्तम गोलोकधाम में नित्य निवास करने वाले, विनिता के पुत्र श्रीगरुडजी का हम स्मरण करते हैं ।

(३)

जिनकी अर्चारूप भक्ति से भगवान् मुकुन्द श्रीलक्ष्मीजी की शक्ति के समान अत्यन्त प्रसन्न रहते हैं, उन श्रीविष्णु भगवान् के भक्त, हरिवाहन, विनिता--सुत श्रीगरुडजी का हम स्मरण करते हैं ।

(४)

जिनके तीव्र वेग से भयङ्कर पिशाच (राक्षस), हीन बल होकर भाग जाते हैं, देवताओं के द्वारा नित्य सेवित पक्षिराज, विनिता--सुत श्रीगरुडजी का हम स्मरण करते हैं ।

(५)

श्रीहरि के मङ्गलमय, नित्य रस (आनन्द) के मूल स्रोत, दिव्य नामों का जो अपने अन्तःकरण में स्मरण करते रहते हैं, उन श्रीहरि के अनन्य भक्त, विनिता-सुत श्रीगरुडजी का हम स्मरण करते हैं ।

(६)

गोविन्दभक्तार्तिनिवारणाय
विहाय सर्वं परिधावमानम् ।
कारुण्यपूर्णं हरिभक्तिमत्तं
श्रीवैनतेयं गरुडं स्मरामः ॥

(७)

आनन्दसिन्धौ पुलकायमानं
स्वोपास्यपार्श्वे परिबद्धपाणिम् ।
नितान्तशान्तं श्रुतिकान्तिमन्तं
श्रीवैनतेयं गरुडं स्मरामः ॥

(८)

गोविन्दगाथारसपानशीलं
शुभ्रस्वरूपं शुभदं शरण्यम् ।
नागान्तकं विष्णु रथं सुपर्णं
श्रीवैनतेयं गरुडं स्मरामः ॥

(९)

श्रीकृष्णभक्तिदं नित्यं मधुरं गरुडाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

श्रीभगवद् भक्तों के कष्ट निवारण करने के लिये अन्य सभी कार्य छोड़कर तुरन्त दौड़ने वाले, करुणा-भाव से परिपूर्ण, श्रीहरि की भक्ति में सदा मत्त (मस्त) रहने वाले, विनिता--सुत श्रीगरुडजी का हम स्मरण करते हैं ।

(७)

श्रीभगवद् रसानन्द सिन्धु में आप्लावित होने से परम पुलकित (प्रसन्न), अपने उपास्य श्रीविष्णु भगवान् के पास हाथ जोड़े हुये, अत्यन्त शान्त, वेदादि शास्त्रों के मर्मज्ञ, दिव्य कान्ति वाले, विनिता--सुत श्रीगरुडजी का हम स्मरण करते हैं ।

(८)

श्रीगोविन्द के कथामृत का निरन्तर पान करने में संलग्न शुभ्र (श्वेत) स्वरूप भक्तों के लिये शुभ (मङ्गल) देने वाले, शरणागतों की रक्षा करने में तत्पर, नागों (सर्पों) के अन्तक, श्रीविष्णु भगवान् के वाहन, सुन्दर पंखों से सुशोभित, विनिता--सुत श्रीगरुडजी का हम स्मरण करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित, नित्य मधुर यह श्रीगरुडाष्टक नित्य पाठ करने वालों के लिये श्रीकृष्ण भगवान् की भक्ति प्रदान करता है ।

*

श्रीलक्ष्मीमहिमाष्टकम्

(१)

विष्णोः सदा श्रीचरणारविन्द-
संवाहनव्यस्तकरां प्रसन्नाम् ।
दिव्याम्बरां कोटिसुधांशुरूपां
पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम् ॥

(२)

इन्द्रादिदेवैरभिवन्द्यमानां
गन्धर्वगीतैरुपगीयमानाम् ।
सद्भिः प्रसेव्यां विविधैः सुभक्तैः
पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम् ॥

(३)

अनन्तलावण्य वरेण्यरूपां
करीन्द्रवृन्दार्पितपुष्पमालाम् ।
किरीटकेयूरविशोभमानां
पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम् ॥

(४)

सत्पात्रगेहं निजपादपद्मै-
र्नित्य पवित्री प्रकरोति या वै ।
सद्धर्मशीलैरिह सेवनीयां
पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम् ॥

(५)

जहाति दुश्शीलजनानशेषान्-
गृह्णाति या धर्मविदो विशुद्धान् ।
ददाति सर्वं हरितत्परेभ्यः
पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम् ॥

श्रीलक्ष्मीमहिमाष्टक

(१)

सदा श्रीविष्णु भगवान् के चरण-कमल के संवाहन अर्थात् श्रीचरणकमलों की सेवा में जिनके युगल हस्तारविन्द अतिशय व्यस्त हैं ऐसी परम प्रसन्न दिव्य वस्त्र एवं करोड़ों चन्द्रों के समान आह्लादक रूपवाली, पद्मनिवासिनी उन लक्ष्मीजी को प्रणाम करते हैं ।

(२)

जो इन्द्रादि देवताओं द्वारा अभिवन्दित (नमस्कृत) है, गन्धर्वों के गीतों द्वारा जिनकी स्तुति की जा रही है, सज्जन व विविध भक्तजन जिनकी सेवा करते हैं, पद्मनिवासिनी उन लक्ष्मीजी को प्रणाम करते हैं ।

(३)

जो अनन्त लावण्य से श्रेष्ठ स्वरूपवाली हैं, हस्ति समूह जिनके लिये पुष्पमाला समर्पित करता है, किरीट, केयूर प्रभृति विविध दिव्य आभूषणों से जो शोभित हैं, पद्मनिवासिनी उन लक्ष्मीजी को प्रणाम करते हैं ।

(४)

परम श्रेष्ठ भक्तजनों के निवास स्थान को जो नित्य अपने चरणकमलों द्वारा पवित्र करती हैं, उत्तम धार्मिक पुरुषों द्वारा जो इस लोक में सदा आराधनीय हैं, पद्मनिवासिनी उन लक्ष्मीजी को प्रणाम करते हैं ।

(५)

दुष्ट स्वभाववाले सभी जनों का जो परित्याग कर देती हैं, धर्म के ज्ञाता व सदाचार से विशुद्ध भक्तों पर जो अनुग्रह (कृपा) करती हैं, श्रीहरि की सेवा में तत्पर वैष्णवजनों को जो सब कुछ अभीष्ट वस्तु देती हैं, पद्मनिवासिनी उन लक्ष्मीजी को प्रणाम करते हैं ।

(६)

ऐश्वर्यशक्तिं व्रजवल्लभस्य
प्रधानशक्तिं श्रियमर्चनीयम् ।
अनन्तशक्तिं हृदि धारणीयां
पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम् ॥

(७)

प्रवालमुक्तावलिशोभमाना-
मम्भोजमालारमणीयरूपाम् ।
नानाविधाऽऽभूषणभूषिताङ्गीं
पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम् ॥

(८)

सदा हरेः श्रीचरणारविन्दे
सेवारतां नित्यनवां प्रवीणाम् ।
आनन्दकोषां वरदां विशालां
पद्मालयां तां प्रणमामि लक्ष्मीम् ॥

(९)

अर्थदं भक्तिदं दिव्यं श्रीलक्ष्मीमहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

व्रलवल्लभ भगवान् श्रीश्यामसुन्दर की ऐश्वर्यशक्ति, पूजनीया श्रीस्वरूपा प्रधानशक्ति, हृदय में धारण करने योग्य अनन्त शक्ति, पद्मनिवासिनी उन लक्ष्मीजी को प्रणाम करते हैं ।

(७)

प्रवाल, मुक्ता आदि मणियों से जो शोभमान हैं, कमल की माला से जिनका स्वरूप अत्यन्त रमणीय है, जिनका श्रीविग्रह नाना प्रकार के आभूषणों से भूषित है, पद्मनिवासिनी उन लक्ष्मीजी को प्रणाम करते हैं ।

(८)

जो सदा श्रीहरि के चरण-कमलों की सेवा में निरत (संलग्न) हैं, जो नित्यनवीन एवं अत्यन्त चतुर हैं, आनन्द की आगार, वर (मनोऽभिलषित वस्तु) को देने वाली, पद्मनिवासिनी उन लक्ष्मीजी को प्रणाम करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित दिव्य यह श्रीलक्ष्मीमहिमाष्टक नित्य पाठ करने वालों के लिये अर्थ और भक्ति को देने वाला है ।

*

श्रीमन्नारायणाष्टकम्

(१)

अशेषकल्याणगुणैककोषं
ब्रह्मेन्द्ररुद्रादिकदेववन्द्यम् ।
सर्वेश्वरं सर्वजगन्निवासं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि ॥

(२)

श्रीशं हरिं शान्तिसुखाधिवासं
विश्वम्भरं विश्वविलासभूपम् ।
परात्परं पूर्णमनन्तरूपं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि ॥

(३)

आनन्दसिन्धुं शरणार्तवन्धुं
भक्ताभिवांछाऽऽप्तमनोज्ञरूपम् ।
कल्पद्रुमं कल्पकलाऽप्रतीतं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि ॥

(४)

नवाऽभ्ररूपं नवपीतवासं
नवाम्बुजाऽक्षं नवहारहृद्यम् ।
नवीनपूर्णेन्दुनिभं वरेण्यं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि ॥

(५)

श्रीवत्सचिह्नाऽङ्कितवक्षसञ्च
गदाब्दशंखाऽरिलसत्कराब्जम् ।
किरीटकेयूरसुकान्तिमञ्जुं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि ॥

श्रीमन्नारायणमहिमाष्टक

(१)

दया, दाक्षिण्य, सौशील्य आदि समस्त गुणों के एक कोष, ब्रह्मा-इन्द्र-रुद्र आदि देवताओं द्वारा वन्दनीय, सबके स्वामी, सम्पूर्ण जगत् के आधार, भगवान् नारायण का नित्य स्मरण करते हैं ।

(२)

लक्ष्मीजी के पति, भक्तों के पापों का हरण (नाश) करने वाले, शान्ति और सुख के आश्रय, विश्व का भरण-पोषण करने वाले, विश्व-विलास के स्वामी, परात्पर, पूर्ण अवतार के प्रसङ्ग में कूर्म, वाराहादि अनन्त प्रकार के श्रीविग्रह धारण करने वाले भगवान् नारायण का नित्य स्मरण करते हैं ।

(३)

आनन्द के सिन्धु, शरणागत पीड़ितजनों के बन्धु, भक्तों की इच्छा के अनुसार सुन्दर रूप धारण करने वाले, आश्रितों के लिये कल्पवृक्ष स्वरूप, कल्प कलाओं द्वारा भी अप्रतीत, अर्थात् कालातीत भगवान् नारायण का नित्य स्मरण करते हैं ।

(४)

अभिनव मेघ के समान श्याम स्वरूप, दिव्य पीताम्बर धारण किये हुये, विकसित कमल के समान नेत्र वाले, सुन्दर हार से सुशोभित, नवोदित पूर्णचन्द्र के सदृश आह्लादक, भक्तों के द्वारा वरण करने योग्य, भगवान् नारायण का नित्य स्मरण करते हैं ।

(५)

जिनके वक्षःस्थल में श्रीवत्स का चिह्न अङ्कित है, कर-कमलों में शङ्ख, चक्र, गदा, पद्म सुशोभित हो रहे हैं, किरीट-केयूर की दिव्य कान्ति से मनोहर उन भगवान् नारायण का नित्य स्मरण करते हैं ।

(६)

विश्वस्य सृष्टि-स्थिति-नाशहेतुं
चराचराणां हृदये निवासम् (निविष्टम्) ।
अचिन्त्यरूपं कृपया सुलभ्यं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि ॥

(७)

वैकुण्ठसत्पार्षदवृन्दसेव्यं
मुनीन्द्र-योगीन्द्र-सुरेन्द्रमृग्यम् ।
गन्धर्वगीतैरनिशं सुगीतं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि ॥

(८)

लक्ष्मीपतिं विश्वपतिं परेशं
वेदान्ततन्त्रादिकशास्त्रहार्दम् ।
सनातनं सत्यपरं समर्थं
नारायणं नित्यमनुस्मरामि ॥

(९)

नारायणाष्टकं स्तोत्रं नारायणरतिप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

विश्व की सृष्टि, स्थिति और प्रलय के कारण स्वरूप, चर तथा अचर संसार के हृदय में निवास करने वाले अर्थात् अन्तर्यामी, अचिन्त्य रूप, एकमात्र कृपा से ही सुलभ हो सकने वाले, भगवान् नारायण का नित्य स्मरण करते हैं ।

(७)

श्रीवैकुण्ठ धाम के सत् पार्षदों द्वारा हृदय से सेवा करने योग्य, मुनिराज, योगिराज, देवराज द्वारा अन्वेषणीय अर्थात् (ध्यान) करने योग्य, गन्धर्व गीतों द्वारा निरन्तर जिनका यश गाया जाता है, उन भगवान् नारायण का नित्य स्मरण करते हैं ।

(८)

लक्ष्मीपति, विश्वपति, परमेश्वर, वेदान्त व तन्त्रादिक शास्त्रों द्वारा गाये गये, सनातन (नित्य), परम सत्य, सर्व समर्थ भगवान् नारायण का नित्य स्मरण करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह श्रीमन्नारायणाष्टक स्तोत्र नित्य पाठ करने वाले भक्तजनों के लिये भगवान् श्रीमन्नारायण की भक्ति प्रदान करता है ।

*

श्रीहनुमन्महिमाष्टकम्

(१)

जगदीश्वररामपदाब्जरतो
जपजीवन-जिष्णु-सहिष्णु-सुधीः ।
जडमानसतामसदूरकरो
जयतीशबलो हनुमानजितः ॥

(२)

अनुरागसुधारससिन्धुरहो
मिथिलेशसुतापदभक्तिरतः ।
सततं मनसा हरिनामधरो
जयतीशबलो हनुमानजितः ॥

(३)

अनिशं निजनाथगुणस्मरण-
श्शरणाभयदानमहानिपुणः ।
करतालसुकीर्तननृत्यकरो
जयतीशबलो हनुमानजितः ॥

(४)

पृषदश्वसुतो निजधर्मरतो
वरणीयगुणोऽनिलवेगचरः ।
प्रलयंकरभीकरभीमरवो
जयतीशबलो हनुमानजितः ॥

(५)

करशैलधरः खलु विप्रवरो
दनुजान्तक उत्तममानयुतः ।
अतिमंजुलपीतजटासुभगो
जयतीशबलो हनुमानजितः ॥

श्रीहनुमन्महिमाष्टक

(१)

जगत् के ईश्वर भगवान् राम के चरण-कमलों में निरन्तर निरत, जप ही जिनका जीवन है, जो जयशील, सहिष्णु और विद्वान् हैं, जड अर्थात् अज्ञानी-जनों के मानस के तामस (अज्ञानान्धकार) को दूर करने वाले हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, ईश (भगवान् श्रीराम) ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी की जय[1] हो, अर्थात् श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।

(२)

अहो ! जो प्रेम रूप अमृत के सागर हैं, मिथिलेश श्रीजनकजी की पुत्री श्रीजानकीजी के चरणों की भक्ति में संलग्न हैं, निरन्तर श्रीहरिनाम को हृदय से धारण किये हुये हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।

(३)

जो सदा अपने स्वामी श्रीराम के गुणों का स्मरण करते रहते हैं, शरणागत भक्तजनों के लिये अभय दान करने में महान् निपुण हैं, कर से ताल बजाते हुये श्रीहरिनामसंकीर्तन के साथ नृत्य करते रहते हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।

(४)

वायु-नन्दन, अपने अनादि वैदिक सनातन धर्म एवं परम कर्तव्य में अभिनिरत, वरणीय (श्रेष्ठ) गुणों से युक्त वायु के वेग समान तीव्र गति से विचरण करने वाले, प्रलयकारी भयङ्कर भीम[2] (घोर) गर्जना करने वाले, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परमबल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं।

(५)

कर (हाथ) में पर्वत को धारण किये हुये, द्विज श्रेष्ठ, राक्षसों का अन्त करने वाले, उत्तम सम्मान से युक्त, अत्यन्त मनोहर पीतवर्ण की जटाओं से शोभित, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।

---

१. जयति का अर्थ होता है-सर्वोत्कर्षेण वर्तते (जो सब से बढकर) । इससे प्रणाम अर्थ आक्षिप्त हो जाता है ।
२. भीमो वृकोदरे घोरे शंकरेऽप्यम्लवेतते इति हेमः (२/३३४) ।

(६)

करकंजसुशोभितहेमगदो
निजगर्जनकम्पितशत्रुदलः ।
प्रबलोऽतुलशक्तिधरो वरदो
जयतीशबलो हनुमानजितः ॥

(७)

अभिबद्धकरः शुभदृष्टिधरो
मधुरं मधुरं हरिनाम जपन् ।
प्रतिधामगतो नयशास्त्रपटु-
र्जयतीशबलो हनुमानजितः ॥

(८)

सकलागम-तन्त्र-पुराणमुखः
प्रभुदास्यमतिर्हरिनामरतिः ।
सुविचित्रयतिः कपियूथपति-
र्जयतीशबलो हनुमानजितः ॥

(९)

श्रीसीतारामपादाब्ज-पराभक्तिप्रदं वरम् ।
पठनान्मनसा नित्यं सद्यः सर्वसुखावहम् ॥

(१०)

अर्थदं मुक्तिदं दिव्यं हनुमन्महिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

जिनके हस्त कमल में सुवर्ण की गदा शोभित हो रही है, जो अपनी गर्जना से शत्रु दल को प्रकम्पित कर देते हैं, प्रकष्ट बलवान्, अतुल शक्तिशाली तथा भक्तों को वर देने वाले हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।

(७)

जो शुभ सौम्य दृष्टिवाले, हाथ जोड़े मधुर-मधुर स्वर में श्रीहरि का नाम जपते हुये प्रत्येक धाम में पहुँच सकने वाले, नीति-शास्त्र में निपुण हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।

(८)

सम्पूर्ण आगम (शास्त्र), तन्त्र और पुराण जिनके कण्ठस्थ हैं, स्वामी (श्रीराम) की दासता में जिनकी मति है, और श्रीहरि के नाम-जप में जिनको प्रेम है, जो विलक्षण यति (जितेन्द्रिय) एवं वानर यूथ के स्वामी हैं, जिनको किसी ने नहीं जीता है, श्रीराम ही जिनका परम बल है, ऐसे श्रीहनुमान्जी को प्रणाम करते हैं ।

(९-१०)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज दृवारा विनिर्मित दिव्य यह श्रीहनुमन्महिमाष्टक परम श्रेष्ठ तुरन्त सब प्रकार के सुखों व धन आदि वैभव प्रदाता बन्धन का मोक्ष करने वाला है और श्रीसीतारामजी के चरण-कपलों में पराभक्ति को प्रदान् करता है ।

*

श्रीमिथिलेशसुताष्टकम्

(१)

मिथिलेशसुता श्रुतिमन्त्रवृता
मिथिलामुनिमानसमोदकृता ।
मिथिला यदनन्तपदाङ्कभृता
मिथिला जयतीह च साप्यमृता ॥

(२)

मिथिलास्थलधामवरिष्ठतमा
वुधसेवितशास्त्रसुगीतगुणा ।
नितरामथ यत्र हि पूर्णतमा
मिथिलेशसुता जयतीह मुदा ॥

(३)

मिथिलाधिपतेरखिला मधुरा
सुखदा रसदा वरदा गुणदा ।
अपवर्गमहाफलदाऽऽश्रयदा
मिथिलेशसुता जयतीह शुभा ॥

(४)

अवधेशकुमारसुवामवरा
रसरूपसुधामधुसारभरा ।
विधि-शम्भु-पुरन्दरवन्द्यपदा
मिथिलेशसुता जयतीह सदा ॥

(५)

सुर-किन्नर-मागधसूतगणै-
रवधस्थतपोधनभागवतैः ।
सुभगै रसिकै रसनारसिता
मिथिलेशसुता परितो जयति ॥

श्रीमिथिलेशसुताष्टक

(१)

मिथिलाधिपति राजा जनक की पुत्री श्रीजानकीजी के वैदेही भूमिसुता मैथिली आदि विभिन्न नामों की श्रुति (श्रवण) रूप मन्त्रों से जो व्याप्त है, अथवा जहाँ श्रुतियाँ मिथिलेश कुमारी श्रीसीताजी के गुणगान करती हैं, जो तपोनिष्ठ मुनियों के मानस को आनन्दित करने वाली है, ऐसी उन परम कृपामयी जनकनन्दिनी की जय हो, और जहाँ की पावन भूमि जनक राजदुलारी के चरण युगल से चिह्नित हैं, वह अमृतमयी मिथिलापुरी सर्वोत्कृष्ट है, उसकी भी जय हो ।

(२)

जो परम पावन स्थलों व धामों से वरिष्ठतम है एवं विद्वानों द्वारा संसेवित है । शास्त्र भी जिसके महत्व व गुणों का गान करते हैं । पूर्णतमा श्रीमैथिली जहाँ अत्यन्त प्रसन्नता से विराजमान हैं । उस मिथिला और मिथिलेश दुलारी की समस्त लोक में जय हो ।

(३)

मिथिलापति की सर्वस्व स्वरूपा श्रीमैथिली सुमधुर स्वभाववाली, ऐहिक सुख तथा परम आनन्ददायिनी, वर-प्रदात्री एवं दाक्षिण्य आदि अनेक गुणों को देने वाली है । आप अपवर्ग (मोक्ष) जैसा महान् फल देती हैं तथा भक्तजनों की आश्रयदात्री हैं । ऐसी शुभकारिणी श्रीमिथिलेश किशोरीजी की जय हो ।

(४)

जो अवधेशकुमार मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान् श्रीराघवेन्द्र के वामभाग में सुशोभित हैं, रस रूप सुधा के मधुर सार से परिपूर्ण हैं, तथा ब्रह्मा, शिव, इन्द्र आदि देव जिनके चरण की वन्दना करते हैं, उन श्रीमिथिलेशकिशोरीजी की सदा जय हो ।

(५)

देवता, किन्नर, मागध व सूतगण, अवधपुरी में विराजित तपोधन महाभागवत सन्त तपस्वी वैष्णवजन और श्रेष्ठ रसिक महानुभाव अपनी रसना (जिह्वा) से जिन मिथिलेश सुता श्रीसीताजी का गुण-गान करते हैं ऐसी उन जनकनन्दिनी श्रीकिशोरीजी की सर्वत्र जय हो ।

(६)

नवकोमलमञ्जुलकञ्जकरा
रघुनाथदृगञ्चनहर्षभरा ।
सरयूतटनित्यविहारपरा
मिथिलेशसुता नितरां जयति ॥

(७)

नवहीरक-हाटकहारधरा
नवकुण्डलदिव्यकपोलपरा ।
नवमञ्जुलकिङ्किणिचित्तहरा
मिथिलेशसुता सततं जयति ॥

(८)

रुचिराऽऽननराघववचारुतरा
मुनिमानसनित्यनिवासपरा ।
पवनात्मजपावनचित्तभजा
मिथिलेशसुता जयतीह जया ॥

(९)

सीतारामपदाम्भोज-पराभक्तिप्रदायकम् ।
अयोध्याधामसन्निष्ठा-प्रदं भक्तसुखावहम् ॥

(१०)

मिथिलामहिमाऽऽपूर्णं मिथिलेशसुताष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

नवीन कोमल व सुन्दर कमल को हस्तारविन्द में धारण किये हुये, श्रीरघुनाथजी के मधुर अवलोकन से पुलकित, श्रीसरयूतट पर नित्य विहार परायण मिथिलेशसुता श्रीसीताजी की जय हो, जय हो ।

(७)

जो अभिनव हीरा आदि रत्नों से गुम्फित सुवर्णहार से अलंकृत हैं, जिनके श्रवण युग में नूतन चञ्चल कुण्डल शोभित हो रहे हैं तथा दिव्य कपोल हैं, नवीन सुन्दर किङ्किणी से परम मनोहरा उन श्रीमिथिलेशकुमारीजी की निरन्तर जय हो ।

(८)

मनोहर मधुर मुखारविन्द भगवान् श्रीराघवेन्द्र से भी अधिकतम सुन्दर, मुनियों के मानस में नित्य निवास परायणा, पवनात्मजा (श्रीहनुमानजी) के पावन चित्त में निरन्तर चिन्त्यमान, सदा जयशील मिथिलेशदुलारी श्रीजानकीजी की जय हो ।

(९-१०)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह श्रीमिथिलेशसुताष्टक मिथिला व श्रीमैथिलीजी की महिमा से परिपूर्ण है । श्रीसीतारामजी के चरण-कमल की पराभक्ति देने वाला है भक्तजनों को सुखावह यह संस्तवन श्रीअयोध्या धाम में सन्निष्ठा प्रदान करता है ।

*

श्रीराममहिमाष्टकम्

(१)

विधिदेवबुधावलिगीतगुणः
परमर्षिसमर्चितपादयुगः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो
जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥

(२)

परिपूर्णतमः श्रुतिशास्त्रपरो
निखिलागमचर्चितचारुयशाः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो
जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥

(३)

जनकात्मजया सह कान्तिधरो
निज-धाम्नि सदा विलसच्चरणः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो
जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥

(४)

अनुजाश्रितहर्षधरः सततं
पवनात्मजमानसमोदकरः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो
जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥

(५)

शुचिसुन्दररुपसुधामधुरो
नवफुल्लितनीलसरोजमुखः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो
जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥

श्रीराममहिमाष्टक

(१)

ब्रह्मादिदेव, वेद व विद्वानों के द्वारा जिनके गुण गाये गये हैं, परम ऋषियों ने जिनके चरण युगल की पूजा की है, जो सुर समाज द्वारा अभिवन्दित एवं शरणागत की रक्षा करने वाले हैं, ऐसे हमारे श्रीरामजी की समस्त लोकों में सदा जय हो ।

(२)

जो परिपूर्ण पुरुषोत्तम परब्रह्म हैं, वेद व शास्त्रों की मर्यादा में तत्पर हैं, सम्पूर्ण शास्त्रों में जिनके सुन्दर यश की चर्चा की गई है, सुर समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत के कष्टों को दूर करने वाले उन हमारे श्रीरामजी की सदा सर्वत्र जय हो ।

(३)

जनकलली श्रीसीताजी के साथ सुशोभित, निज धाम में सदा विराजमान, सुर समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत रक्षक हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ।

(४)

स्वकीय भ्रातृवृन्द श्रीभरतलालजी, श्रीलक्ष्मणलालजी तथा श्रीशत्रुघ्न-लालजी से सदा सुशोभित होने से निरन्तर परम प्रसन्न, पवनपुत्र श्रीहनुमानजी के मानस में सदा मोद (हर्ष) करने वाले, सुर समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत रक्षक हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ।

(५)

स्वच्छ सुन्दर रूपसुधा से जो अत्यन्त मधुर हैं, जिनका श्रीमुख नव विकसित नीलकमल के समान श्याम व प्रसन्न है, सुर समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत रक्षक उन हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ।

(६)

भवबन्धनमुक्तिकरः सदयं
करुणारसकोष इनो जगतः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो
जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥

(७)

धृतकंजकरः शिवचापधरः
सरयूमणितीरविहारपरः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो
जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥

(८)

अनुराग-विराग-रहस्यधरः
सुखदः खलु राम उदारवरः ।
मम रामवरः सुरवृन्दनुतो
जयतीह सदा शरणार्तिहरः ॥

(९)

सीतारामरतिप्राप्त्यै श्रीराममहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

दया के साथ संसार के बन्धन से मुक्त करने वाले, करुणारूपी अमृत-रस के आगार, जगत् के स्वामी (सूर्यवंशी) सुर समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागत रक्षक उन हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ।

(७)

जो निज कर में कमल को धारण किये हुये, शिवजी के धनुष को चढाने वाले, श्रीसरयूजी के मणिजटित तट पर विहार करने वाले हैं, सुर समाज द्वारा अभिवन्दित, शरणागतवत्सल उन हमारे श्रीरामजी की सदा जय हो ।

(८)

अनुराग[१] (प्रेम) और विराग (वैराग्य) के रहस्य को समझने वाले, सबको सुख देने वाले, निश्चय ही योगियों की योग-साधना के आश्रय, परम उदार, सुर समाज द्वारा अभिवन्दित, शरण में आये हुए भक्तजनों की पीड़ा को हरने वाले हमारे श्रीरामजी की सदा सर्वत्र जय हो ।

(९)

पाठकों के हृदय में श्रीसीतारामजी के युगल-चरणों की प्रेमाभक्ति का आविर्भाव होने के लिये अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा यह श्रीराममहिमाष्टक विनिर्मित हुआ ।

*

---

१. अनुराग अर्थात् दिव्य प्रेम, विराग अर्थात् उत्कट वैराग्य, इन उभयविध अनुराग-विराग का मनोहर संगम उन राजीवलोचन त्रिभुवनमोहन नयनाभिराम भगवान् श्रीरामभद्र में परम आदर्श रूप है । और यह आपके लोकपावन मनोहर चरित में अनेक प्रसङ्गों पर स्पष्टतया प्रतिबिम्बित है । जगज्जननी श्रीजानकीजी का स्नेह तथा वियोग आदि विविध चरित हैं ।

श्रीदेवीमहिमाष्टकम्

(१)

परात्परब्रह्मपराद्यशक्ति-
मचिन्त्यरूपां रमणीयशोभाम् ।
सिद्धेश्वरीं सिद्धिमतीं सुरेशां
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम् ॥

(२)

समस्तदेवेषु वरिष्ठरूपां
रसप्रदात्रीं भवभीतिहर्त्रीम् ।
अनन्तशक्तिं शिवशक्तिदुर्गां
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम् ॥

(३)

ब्राह्मीमपर्णां शुभशान्तिशक्तिं
समग्रब्रह्माण्डविहारकर्त्रीम् ।
आह्लादशक्तिं गिरिजां मृडानीं
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम् ॥

(४)

श्रीकृष्णशक्तिं कमनीयकान्तिं
कात्यायनीं हैमवतीं भवानीम् ।
भक्तिप्रदात्रीं शरणार्तिहर्त्रीं
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम् ॥

(५)

कृपाब्धिशक्तिं रसपूर्णभक्ति-
मानन्दशक्तिं रसलिप्सुतृप्तिम् ।
रसानुरक्तिं वरणीयवृत्तिं
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम् ॥

श्रीदेवीमहिमाष्टक

(१)

परात्पर ब्रह्म की परा आद्यशक्ति, अचिन्त्य रूप और रमणीय शोभावाली, सिद्धेश्वरी, सिद्धिमती, देवताओं की स्वामिनी, वरेण्य (श्रेष्ठ) श्रीवैष्णवी देवी को नमस्कार करते हैं ।

(२)

समस्त देव समूह में जिनकी परम श्रेष्ठता है और परमानन्द प्रदान करने वाली, भव (संसार) का भय हरने वाली, अनन्त शक्तिशाली, शिव की शक्ति-स्वरूपिणी, दुर्गा (कठिनता से प्राप्त होने वाली), वरेण्य (सर्वश्रेष्ठ) श्रीवैष्णवी देवी को नमस्कार करते हैं ।

(३)

ब्राह्मी, अपर्णा, शुभ शान्ति प्रदान करने वाली शक्ति, सम्पूर्ण ब्रह्माण्ड में विहार करने वाली, आह्लाद शक्ति, गिरिजा (पर्वतपुत्री पार्वती), मृडानी (भगवान् शङ्कर की शक्ति), वरेण्य (भक्तजनों द्वारा वरणीय सर्वश्रेष्ठ) श्रीवैष्णवी देवी को नमस्कार करते हैं ।

(४)

भगवान् श्रीकृष्ण की शक्ति, सुन्दर दिव्य-कान्तिवाली, कात्यानी, हैमवती, भवानी, भक्ति प्रदान करने वाली, शरणागत की पीड़ा को हरने वाली, सर्वश्रेष्ठ श्रीवैष्णवी देवी को नमस्कार करते हैं ।

(५)

जो कृपासिन्धु की अपार शक्ति है और रसपूर्ण भक्तिस्वरूपा होने से आनन्द प्रदान करने वाली शक्ति भी है, रसलिप्सु (रसिक भक्तजनों) की तृप्ति करने वाली, रस (परब्रह्म) में अनुरक्ति (प्रेम) रखने वाली, वरण करने योग्य वृत्तिवाली, सर्वश्रेष्ठ श्रीवैष्णवी देवी को नमस्कार करते हैं ।

(६)

विधीन्द्रवृन्दैरनिशं प्रपूज्यां
योगीन्द्रवृन्दै र्हृदि धारणीयाम् ।
ऋषीन्द्रवृन्दैरभिचिन्तनीयां
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम् ॥

(७)

वेदैः पुराणैरथ मन्त्रतन्त्रै-
र्जेगीयमानां मुनिवृन्दसेव्याम् ।
उपासनीयां समुपासकैश्च
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम् ॥

(८)

श्रीकृष्णभक्ते रसदानशीलां
सर्वार्थसिद्धां भुवने प्रसिद्धाम् ।
शास्त्रानुकूलाय सदा प्रसन्नां
श्रीवैष्णवीं नौमि वरेण्यदेवीम् ॥

(९)

इष्टदं पुण्यदं दिव्यं श्रीदेवीमहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

ब्रह्मा, इन्द्र आदि देवताओं के समूह द्वारा सदा पूजने योग्य, योगीश्वर मुनिजनों द्वारा हृदय में धारण करने योग्य, ऋषि महर्षियों द्वारा सर्वतोभावेन चिन्तन (ध्यान) करने योग्य, सर्वश्रेष्ठ श्रीवैष्णवी देवी को नमस्कार करते हैं ।

(७)

वेद, पुराण और मन्त्र तन्त्रों द्वारा जिसके यश का गान किया जा रहा है, मुनिवृन्द द्वारा जो सेवा करने योग्य हैं, उपासक साधकों द्वारा जो साधना के योग्य हैं, ऐसी सर्वश्रेष्ठ श्रीवैष्णवी देवी को नमस्कार करते हैं ।

(८)

श्रीजी (आह्लादिनी शक्ति श्रीप्रियाजी) के सहित कृष्ण (नित्य निकुञ्जविहारी श्रीश्यामसुन्दर) की भक्ति (युगल उपासना) करने वाली रसिक भक्तजनों के लिये सदा रसदान करते रहने का जिनका स्वभाव है, जो सर्वार्थसिद्धा हैं, विश्व में प्रसिद्ध हैं, वेदादि शास्त्रों के अनुकूल आचरण करने वालों के लिये सदा प्रसन्न रहने वाली है, ऐसी सर्वश्रेष्ठ श्रीवैष्णवी देवी को नमस्कार करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित दिव्य यह श्रीदेवीमहिमाष्टक नित्य पाठ करने वाले भक्तजनों के लिये अभीष्ट कामना पूर्ण करने वाला एवं पुण्य देने वाला है ।

*

श्रीशिवमहिमाष्टकम्

(१)

सुरवृन्दमुनीश्वरवन्द्यपदो-
हिमशैलविहारकरो रुचिरः ।
अनुरागनिधिर्मणिसर्पधरो-
जयतीह शिवः शिवरूपधरः ।।

(२)

भवतापविदग्धविपत्तिहरो
भवमुक्तिकरो भवनामधरः ।
धृतचन्द्रशिरो विषपानकरो
जयतीह शिवः शिवरूपधरः ।।

(३)

निजपार्षदवृन्दजयोच्चरितः
करशूलधरोऽभयदानपरः ।
जटया परिभूषितदिव्यतमो
जयतीह शिवः शिवरूपधरः ।।

(४)

वृषभाङ्गविराजित उल्लसितः
कृपया नितरामुपदेशकरः ।
त्वरितं फलदो गणयूथयुतो
जयतीह शिवः शिवरूपधरः ।।

(५)

अहिहारसुशोभित आप्तनुतो
समुपास्यमहेश्वर आर्तिहरः ।
धृतविष्णुपदीसुजटो मुदितो
जयतीह शिवः शिवरूपधरः ।।

श्रीशिवमहिमाष्टक

(१)

देव वृन्द तथा मुनीश्वरों द्वारा वन्दित चरण-कमल, हिमालय में विहारशील, मनोहर, प्रेम के सागर, मणिधर सर्पों के आभूषणों से अलंकृत, मङ्गलमय रूपधारी भगवान् शिव की जय हो ।

(२)

संसार के सन्ताप को भस्म करने तथा विपत्ति को हरने वाले, भव-बन्धन से मुक्ति के दाता, भव इस नाम से प्रसिद्ध, मस्तक में चन्द्रमा से भूषित, विष पान-कर्त्ता, मङ्गलमय रूपधारी भगवान् शिव की जय हो ।

(३)

अपने पार्षद वृन्द (भूतादि गण) द्वारा जिनके लिये जय, जय शब्द का उच्चारण किया जाता है, जिन्होंने कर में शूल (त्रिशूल) धारण कर रखा है, जो भक्तों के लिये अभय-दान करने में तत्पर हैं, जटा से भूषित एवं परम दिव्य हैं, ऐसे मङ्गलमय रूपधारी भगवान् शिव की जय हो ।

(४)

जो वृषभ (नन्दिकेश्वर) के अङ्ग (पीठ) पर विराजमान एवं उल्लासयुक्त हैं, कृपा करके अत्यन्त हितकर उपदेश देने वाले हैं, तुरन्त प्रसन्न होकर अभीष्ट फल देने वाले हैं, ऐसे प्रमथादि गणों के समूह से युक्त, मङ्गलमय रूपधारी भगवान् शिव की जय हो ।

(५)

जो सर्पों के हार से सुशोभित, आप्त (यथार्थवादी) भक्तों द्वारा वन्दित, उपासना करने योग्य, परमेश्वर एवं पीडा को हरने वाले हैं । जिन्होंने अपनी जटाओं में विष्णुपदी (श्रीगङ्गाजी) को धारण कर रखा है, ऐसे परम प्रसन्न मङ्गलमय रूपधारी भगवान् शिव की जय हो ।

(६)

व्रजकृष्णपदाब्जपरागरतो
व्रजकुञ्जसखीनवरूपधरः ।
व्रजगोपसुरेश उमाधिपति-
र्जयतीह शिवः शिवरूपधरः ।।

(७)

युगकेलिविलासमहारसिको
रसतन्त्रपुराणकथाचतुरः ।
रसशास्त्ररसज्ञपटुर्मधुरो
जयतीह शिवः शिवरूपधरः ।।

(८)

यमपाशभयाऽपहरोऽघहरः
प्रबलोऽतिमहाप्रबलः प्रखरः ।
परिपूर्णतमो हरिभक्तिभरो
जयतीह शिवः शिवरूपधरः ।।

(९)

शिवशान्त्यर्थदं दिव्यं श्रीशिवमहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

*

(६)

व्रज में भगवान् श्यामसुन्दर श्रीकृष्ण के चरण-कमल की पराग (रज) में निरत, व्रज व कुञ्ज की लीलाओं में सहचरी के अभिनव गोपीश्वर रूप को धारण करने वाले, व्रजवासी गोप स्वरूप देवताओं में श्रेष्ठ, उमा-पति, मङ्गलमय रूपधारी भगवान् शिव की जय हो ।

(७)

युगल सरकार के अनेक विध दिव्य केलि-विहार के महान् रसिक, रस, तन्त्र व पुराणकथाओं में चतुर, रस व शास्त्र के मर्मज्ञों में श्रेष्ठ, मधुर (मनोरम), मङ्गलमय रूपधारी भगवान् शिव की जय हो ।

(८)

शम-पाश के भय एवं अघ (पापों) का नाश करने वाले, प्रकृष्ट बलवाले, अत्यन्त महान् शक्तिशाली, तेजस्वी, परिपूर्णतम तथा श्रीहरि की भक्ति से परिपूर्ण, मङ्गलमय रूपधारी भगवान् शिव की जय हो ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विरचित दिव्य यह श्रीशिवमहिमाष्टक नाम का स्तोत्र नित्य पाठ करने वालों के लिये मङ्गल, शान्ति और अर्थ को देने वाला है ।

*

श्रीसरस्वतीमहिमाष्टकम्

(१)

देवाभिवन्द्यां श्रुतिशास्त्रगीतां
श्रेयस्करीं दिव्यविवेकदात्रीम् ।
वरेण्यशक्तिं करुणामयीं च
सरस्वतीं स्तौमि सदा स्मृतीशाम् ॥

(२)

मयूरपृष्ठासनदर्शनीयां
वीणाप्रवीणां मणिमौलिशीर्षाम् ।
सुकण्ठमालां सुमनोऽभिरामां
सरस्वतीं स्तौमि सदा स्मृतीशाम् ॥

(३)

हंसाधिरूढां स्मितमञ्जुहास्यां
विद्याप्रदात्रीं वरदां विशालाम् ।
पराद्यशक्तिं परमार्थसिद्धां
सरस्वतीं स्तौमि सदा स्मृतीशाम् ॥

(४)

प्रज्ञान-विज्ञान-कलानिधानां
वागीश्वरीं वेदमयीं वरिष्ठाम् ।
परात्परब्रह्मविलासलीलां
सरस्वतीं स्तौमि सदा स्मृतीशाम् ॥

(५)

सुमालिकापुस्तकहस्तकञ्जां
सरोजकुञ्जान्तरशोभमानाम् ।
कारुण्यलावण्यसुधासमुद्रां
सरस्वतीं स्तौमि सदा स्मृतीशाम् ॥

श्रीसरस्वतीमहिमाष्टक

(१)

देवों के द्वारा जो अभिवन्दनीय है, श्रुति (वेद) व शास्त्रों में जिनका गुण गान किया गया है, जो कल्याण करने वाली तथा दिव्य विवेक को देने वाली है, वरेण्य शक्ति एवं करुणामयी, स्मृति की स्वामिनी उन सरस्वतीजी की सदा स्तुति करते हैं ।

(२)

मयूर-पृष्ठ पर विराजमान एवं दर्शनीय, वीणा बजाने में चतुर, मणिजटित मौलि[1] (किरीट) से अलंकृत, कण्ठ में जो माला धारण किये हुये है, सुमनों (पुष्पों व देवताओं) से जो अभिराम (सुन्दर) हैं, ऐसी स्मृति की स्वामिनी उन सरस्वतीजी की सदा स्तुति करते हैं ।

(३)

हंस पर विराजमान, सस्मित सुन्दर हास्यवाली, विद्या-प्रदान करने व वर देने वाली, भव्य श्रेष्ठ स्वरूप, परा आद्यशक्ति, परमार्थ में सिद्धा, स्मृति की स्वामिनी उन सरस्वतीजी की सदा स्तुति करते हैं ।

(४)

प्रज्ञान, विज्ञान कलाओं की आगार, वागीश्वरी, वेदमयी, वरिष्ठ, परात्पर ब्रह्म (नित्य नव निकुञ्जविहारी-विहारिणी श्रीराधाकृष्ण युगल) की विलास लीला-स्वरूपिणी, स्मृति की स्वामिनी उन सरस्वतीजी की सदा स्तुति करते हैं ।

(५)

कर-कमलों में माला व पुस्तक धारण करने वाली, कमल-कुञ्ज में शोभित, कारुण्य, लावण्य, सुधा की समुद्र, स्मृतिं की स्वामिनी उन सरस्वतीजी की सदा स्तुति करते हैं ।

१--चूडा किरीटं केशाश्च संयता मौलयस्त्रयः । इत्यमरः ।
मौलिः किरीटे धम्मिल्ले चूडायामनपुंसकम् ।
अशोक-पादपे पुंसि--इति मेदिनी ।

(६)

अम्भोजहारावलिरम्यरूपां

वन्दारुवृन्दारकहार्दवन्द्याम् ।

सुमन्दविद्यामतिदानशीलां

सरस्वतीं स्तौमि सदा स्मृतीशाम् ॥

(७)

दिव्याम्बरामाभरणप्रकामां

लसत्सुवर्णां धृतकुण्डलाभाम् ।

शुभ्रां सुदिव्यां समुपासनीयां

सरस्वतीं स्तौमि सदा स्मृतीशाम् ॥

(८)

श्रीशारदां शान्तिसुखप्रशस्तां

ब्राह्मीं महाशक्तिवरां वरेशाम् ।

पद्मासनां पद्मकरां प्रसन्नां

सरस्वतीं स्तौमि सदा स्मृतीशाम् ॥

(९)

सरस्वतीस्तवः सेव्यो विद्याबुद्धिप्रदायकः ।

राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितः ॥

*

(६)

कमल के हारों से सुरम्य स्वरूप वाली, भक्त व देवताओं द्वारा हार्द्र[२] (प्रेम) से वन्दनीय, मन्द (मूर्ख) को भी विद्या व सुबुद्धि प्रदान करना ही जिनका सहज स्वभाव है, ऐसी स्मृति की स्वामिनी उन सरस्वतीजी की सदा स्तुति करते हैं ।

(७)

दिव्य अम्बर (वस्त्र) तथा प्रकाम[३] (इच्छानुसार पर्याप्त) आभूषण वाली, सुवर्ण (सुन्दर वर्ण, स्वर्ण) से शोभित होने वाली, धारण किये हुये कुण्डलों की आभा (कान्ति) वाली, शुक्लवर्णा, अति दिव्य, उपासनीय, स्मृति की स्वामिनी उन सरस्वतीजी की सदा स्तुति करते हैं ।

(८)

श्रीशारदा, शान्ति व सुख से प्रशस्त, ब्रह्मा, महाशक्तियों में श्रेष्ठ, वरदायिनी, पद्म के आसन पर संस्थित, अपने श्रीहस्त में कमल लिये हुए, प्रसन्न, स्मृति की स्वामिनी उन सरस्वतीजी की सदा स्तुति करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित, भक्तों द्वारा संसेव्य यह सरस्वतीस्तव नित्य पाठ करने वालों के लिये विद्या और बुद्धि प्रदाता है ।

*

२--प्रेमा ना प्रियता हार्द्रं प्रेम स्नेहः । इत्यमरः ।

३--कामं प्रकामं पर्याप्तं निकामेष्टं यथेप्सितम् । इत्यमरः ।

श्रीगंगामहिमाष्टकम्

(१)

भगवच्चरणाम्बुजदिव्यसुधां
शितिकण्ठजटासुकदम्बगताम् ।
गिरिमौलिहिमालयनिर्झरितां
भज मानस विष्णुपदीं नितराम् ॥

(२)

भगवत्करुणामृतरूपधरां
भगवत्कृपया भुवि नो द्रविताम् ।
कलिकल्मषतप्तजनाऽघहरां
भज मानस विष्णुपदीं नितराम् ॥

(३)

अतितीव्रगभीरतरङ्गवृतां
जलजस्तवकद्युतिपुञ्जयुताम् ।
निजनीरसमस्तसुदत्तसुखां
भज मानस विष्णुपदीं नितराम् ॥

(४)

ऋषि-तापसभक्तिसमुल्लसितां
सततं मुनिवृन्दगिरोच्चरिताम् ।
सुर-किन्नर-साधुजनैः प्रणुतां
भज मानस विष्णुपदीं नितराम् ॥

(५)

यदिहोत्तरभारतभूद्रवितां
गिरि-गह्वरपारकरीं मुदिताम् ।
सह भानुजया व्रजितां खलु तां
भज मानस विष्णुपदीं नितराम् ॥

श्रीगंगामहिमाष्टक

(१)

हे मानस ! (मन) भगवान् श्रीविष्णु के चरणारविन्द की नित्य रस सुधा, शितिकण्ठ (भगवान् श्रीशङ्कर) के जटा-समुदाय में प्राप्त हुई, पर्वतों के मुकुटभूत हिमालय-पर्वत से निर्झरित, विष्णुपदी श्रीगङ्गाजी का तुम निरन्तर भजन करो ।

(२)

हे मानस ! भगवान् के करुणामय अमृत स्वरूप को धारण करने वाली, भगवत्कृपा से ही हमारे लिये इस भूमण्डल में द्रवित हुई (पधारी), कलियुग के कल्मष (पाप) से सन्तप्त जनों के पापों को हरने वाली, विष्णुपदी श्रीगङ्गाजी का तुम निरन्तर भजन करो ।

(३)

हे मन ! अत्यन्त तीव्र व गम्भीर तरङ्गों से सुशोभित कमल के गुच्छों की कान्ति के समूह से युक्त, अपने परम पावन जल से समस्त भक्तों को सुख देने वाली, विष्णुपदी श्रीगङ्गाजी का तुम निरन्तर भजन करो ।

(४)

हे मन ! ऋषियों की तपस्या व भक्ति से उल्लास युक्त, सदा मुनि समुदाय को वाणी द्वारा श्री गङ्गे ! हे गङ्गे ! इस प्रकार कही गई, देवता, किन्नर तथा साधुजनों द्वारा नमस्कृत विष्णुपदी श्रीगङ्गाजी का तुम निरन्तर भजन करो ।

(५)

हे मन ! जो कि उत्तर भारत की भूमि में द्रवित हुई है, पर्वतों व गुफाओं को पार करने वाली व अति प्रसन्न है, श्रीयमुनाजी के साथ जो जा मिली हैं, निश्चय से उन ! विष्णुपदी श्रीगङ्गाजी का निरन्तर भजन करो ।

(६)

श्रुतिमन्त्रगणग्रथितां प्रथितां
निजमञ्जुलनिःस्वननृत्यरताम् ।
अमिताऽमयपीडितपापहरां
भज मानस विष्णुपदीं नितराम् ॥

(७)

स्वकतोयसुधापरितापशमां
प्रणतागतचित्तसुधाप्रतिताम् ।
हरिसच्चरणामृतरूपधरां
भज मानस विष्णुपदीं नितराम् ॥

(८)

भवभीषणशोकविपत्तिहरां
भवसागरमग्नजनोद्धरणाम् ।
व्रजमोहनकृष्णपदाब्जरतां
भज मानस विष्णुपदीं नितराम् ॥

(९)

पराभक्तिप्रदं स्तोत्रं श्रीगङ्गामहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

हे मन ! वेद मन्त्रों की ध्वनि से युक्त, प्रसिद्ध, अपने मधुर कल-कल स्वर के साथ नृत्य करने में निरत, अत्यधिक रोगों से पीडित लोगों का पाप हरने वाली, विष्णुपदी श्रीगङ्गाजी का निरन्तर भजन करो ।

(७)

हे मन ! अपने पवित्र जल रूप अमृत से भक्तों के सन्ताप को शान्त करने वाली, प्रणत एवं शरणागत जनों के चित्त के लिये अमृत जैसी (सुख प्रदायिनी), श्रीहरि के श्रेष्ठ चरणामृत का मङ्गल स्वरूप धारण करने वाली, विष्णुपदी श्रीगङ्गाजी का निरन्तर भजन करो ।

(८)

हे मन ! संसार के भयङ्कर से भयङ्कर शोक व विपत्तियों को हरण करने वाली, भव-सागर में निमग्न जनों का उद्धार करने वाली, व्रज के मोहन श्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र के चरण-कमलों में निरत नित्य निवास करने वाली श्रीगङ्गाजी का निरन्तर भजन करो ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित श्रीगङ्गामहिमाष्टक नाम का यह स्तोत्र नित्य पाठ करने वालों के लिये परा भक्ति देने वाला है ।

*

श्रीगोमहिमाष्टकम्

(१)

केशेन्द्र-गन्धर्वसुरैः सुधीरै-
निषेव्यमानां मुनिभिः समर्च्याम् ।
मोक्षप्रदात्रीं व्रजवल्लभेष्टां
गोमातरं नित्यमहं भजामि ॥

(२)

अनन्तकोटित्रिदशाधिवासां
सर्वार्थसिद्धेरिहदानशीलाम् ।
पीयूषरूपात्मकदुग्धदात्रीं
गोमातरं नित्यमहं भजामि ॥

(३)

मुनीन्द्रयोगीन्द्रगणैरुपास्यां
भूपेन्द्रभावैरनिशं सुपोष्याम् ।
पुण्यां सदाऽनन्तसुखस्वरूपां
गोमातरं नित्यमहं भजामि ॥

(४)

पीत्वा च तोयं रसहीनघासं
भुक्त्वा विशुद्धं मधुरं सुदुग्धम् ।
नित्यं स्रवन्तीं करुणानिधानां
गोमातरं नित्यमहं भजामि ॥

(५)

यद्गोमयस्याशनसुप्रभावा-
ल्लोकाः पवित्रत्वमुपाव्रजन्ति ।
एतादृशीं तां रससिन्धुरूपां
गोमातरं नित्यमहं भजामि ॥

श्रीगोमहिमाष्टक

(१)

ब्रह्मा, शिव, इन्द्र, गन्धर्व, देवता और विद्वानों द्वारा सेवित, मुनियों से संपूजित मोक्ष की दाता, व्रज के प्रिय श्रीश्यामसुन्दर की अभीष्ट गोमाता का हम नित्य भजन (सेवा) करते हैं ।

(२)

अनन्त कोटि देवता जिसमें निवास करते हैं, जो सभी मनोरथों की सिद्धि को देती है, अमृतमय दुग्ध की दाता उस गोमाता का हम नित्य भजन (सेवा) करते हैं ।

(३)

मुनीन्द्र व योगीन्द्र द्वारा उपासनीय, श्रेष्ठ राजाओं के हार्दिक भावों से निरन्तर पोषण योग्य, पवित्र, सदा अनन्त सुख स्वरूप गोमाता का हम नित्य भजन (सेवा) करते हैं ।

(४)

जल पीकर और रसहीन (शुष्क) घास खाकर भी जो नित्य विशुद्ध, मधुर व सुन्दर दूध देती है तथा करुणा की सागर है, उस गोमाता का हम नित्य भजन (सेवा) करते हैं ।

(५)

जिसके गोमय (गोबर) का प्राशन (भक्षण) करने के प्रभाव से लोग अपने को पवित्र कर लेते हैं--यह बड़े महत्व की बात है । जो ऐसी रस-सागर-रूपिणी है, उस गोमाता का हम नित्य भजन (सेवा) करते हैं ।

(६)

यत्पञ्चगव्याऽमृतसेवनेन
रोगाः समग्राः प्रशमं प्रयान्ति ।
एवं जनानां हितमाचरन्तीं
गोमातरं नित्यमहं भजामि ॥

(७)

यत्पृष्ठभागे मुरलीं निधाय
हस्तारविन्दे मधुरां मनोज्ञाम् ।
वृन्दावने गच्छति माधवस्तां
गोमातरं नित्यमहं भजामि ॥

(८)

पञ्चामृतेषु प्रियदुग्धमाज्यं
नित्यं प्रभूतं दधि या ददाति ।
तां वन्दनीयां श्रुतिशास्त्रगीतां
गोमातरं नित्यमहं भजामि ॥

(९)

गोमहिमाष्टकं स्तोत्रं गो-गोविन्दरतिप्रदम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

जिसके अमृतमय पञ्चगव्य (दूध, दही, घृत, गोमय और गोमूत्र) का सेवन करने से सभी तीव्र रोग शान्त हो जाते हैं, ऐसे लोगों का अपार हित करने वाली गोमाता का हम नित्य भजन (सेवा) करते हैं ।

(७)

श्रीवृन्दावन धाम में श्रीश्यामसुन्दर भगवान् श्रीकृष्णचन्द्र अपने कर-कमल में मधुर स्वरवाली सुन्दर मुरली लेकर जिस (गोमाता) के पृष्ठ भाग में (पीछे-पीछे) विचरण करते हैं, उस गोमाता का हम नित्य भजन (सेवा) करते हैं ।

(८)

पञ्चामृत में उपयोगी शुद्ध दूध, घृत और दही जो पर्याप्त मात्रा में प्रतिदिन देती है, श्रुति व शास्त्रों में जिसके यश का गान किया गया है, जो सबके लिये वन्दनीय है, उस गोमाता का हम नित्य भजन (सेवा) करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित श्रीगोमहिमाष्टक नाम का यह स्तोत्र नित्य पाठ करने वालों के लिये गोमाता व श्रीगोविन्द की भक्ति प्रदान करता है ।

*

श्रीपुष्करमहिमाष्टकम्

(१)

ब्रह्मादिदेवैरभिसेव्यमानं
सनातनं दिव्यमनोरमं च ।
समग्रतीर्थेषु वरिष्ठरूपं
श्रीपुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ॥

(२)

अगस्त्यवर्येण सदैव विश्वा-
मित्रर्षिणा यत्र कृतोऽधिवासः ।
श्रीवामदेवेन कृता तपस्या
तत्पुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ॥

(३)

विरञ्चिना यत्र पुरा प्रशस्तः
सम्पादितो दिव्यतमो हि यागः ।
यस्य स्वरूपं परमं वरीय-
स्तत्पुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ॥

(४)

नागाचलाभा-परिशोभितं यत्
सावित्र्यलङ्कारिविधातृ-धाम ।
स्वच्छाम्बुपूर्णं मकरैर्मनोज्ञं
तत्पुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ॥

(५)

अम्भोजशोभाद्भुतकान्तिमञ्जुं
मत्स्यावलीक्रीडनचञ्चलाऽम्भः ।
सुकच्छपै रम्यममसीमरूपं
श्रीपुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ॥

श्रीपुष्करमहिमाष्टक

(१)

ब्रह्मा आदि देवताओं द्वारा सेवित, नित्य, दिव्य, मनोहर और समस्त तीर्थों में अग्रगण्य, तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।

(२)

जहाँ अगस्त्य ऋषि तथा विश्वामित्र ऋषि ने दीर्घकाल तक आराधना की है, वामदेव ऋषि ने जहाँ तपस्या की है, उस तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।

(३)

जहाँ पहले ब्रह्मा ने प्रशस्त एवं अत्यन्त दिव्य याग किया था, जिसका स्वरूप सर्वोत्तम है, उस तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।

(४)

जो नाग पर्वत की आभा से सुशोभित, सावित्रीजी से अलंकृत, विधाता (ब्रह्मा) का धाम है, स्वच्छ जल से परिपूर्ण, मकर-कच्छप आदि से सुन्दर है, उस तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।

(५)

जो कमलों की शोभा व अद्‌भुतकान्ति से सुन्दर है, मछलियों की क्रीड़ा से जिसका जल चञ्चल हो रहा है, कच्छुओं से रमणीय, अनन्त धाम, उस तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।

(६)

सुधीमुखोच्चारितवेदघोषैः
ऋषीश्वरैर्योगिभिरर्च्यमानम् ।
हंसावतारस्थलदिव्यधाम
श्रीपुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ॥

(७)

मयूर-कीर ध्वनितं सुतीर्थं
सुसारिका-कोकिलनादहृद्यम् ।
सद्भृङ्ग-भृङ्गीकलगुञ्जितञ्च
श्रीपुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ॥

(८)

यत्क्षेत्रमध्ये शुभतीर्थपुञ्जे
निम्बार्कतीर्थं खलु राजते च ।
नानाद्रुमैः सुप्लवगैः सुरम्यं
तम्पुष्करं तीर्थगुरुं नमामि ॥

(६)

अनन्तानन्ददं दिव्यं पुष्करमहिमाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

जहाँ विद्वानों के मुख से उच्चरित वेदघोष होता है, जो ऋषिश्वरों व योगीश्वरों द्वारा पूजित, जगद्धाता श्रीब्रह्मा के ही मानस पुत्र महर्षिवर्य श्रीसनकादिक जिन्होंने श्रीब्रह्माजी से **गुणेष्वाविशते चेतो गुणांश्चेतसि च प्रभो ! । कथमन्योन्य संत्यगो मुमुक्षोरतितितीर्षोः** ।। यह गूढतम प्रश्न किया जिसका समाधान न मिलने पर सर्वेश्वर श्रीहरि का अपने मन ही मन स्मरण किया । कृपामय श्रीप्रभु ने इसी पावन स्थल पर प्रश्न समाधानार्थ हंस रूप से अवतार धारण किया, उसी तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।

(७)

मयूर की केका तथा शुक की राधाकृष्ण, गोपीकृष्ण......आदि मधुर वाणी से ध्वनित, स्वच्छ जल से युक्त, सारिका से कूजित एवं कोयल की कुहू-कुहू की ध्वनि से मनोहर, भृङ्ग व भृङ्गी के मनोरम गुञ्जन से गुञ्जित, तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।

(८)

जिस पुष्कर क्षेत्र में पिप्पलाद आदि अनेक तीर्थ हैं, जहाँ निम्बार्कतीर्थ शोभित है--(जो पद्मपुराण में वर्णित है) ऐसे अनेक वृक्षों व वानरों से सुरम्य तीर्थगुरु श्रीपुष्करराज को नमस्कार करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित यह दिव्य पुष्करमहिमाष्टक नामक स्तोत्र नित्य पाठ करने वालों के लिये अनन्त आनन्द प्रदान करता है ।

*

श्रीनिम्बार्कतीर्थाष्टकम्

(१)

अनन्तरूपात्मकविष्टपस्य
प्रकाशको यो न्यवसच्च यत्र ।
दिवाकरो दिव्यगभस्तिमाली
निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ॥

(२)

यद्वर्णनं पद्मपुराणसंस्थं
चकास्ति सम्यक्परमं मनोज्ञम् ।
श्रीपुष्करारण्यसमीपवर्ति-
निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ॥

(३)

निम्बद्रुमे चाऽर्ककृताधिवासा-
न्निम्बार्कतीर्थाऽभिधया प्रसिद्धम् ।
श्रीविष्णुना यत्र हतः क्षपाटः
निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ॥

(४)

नानाद्रुमस्थै र्विहगै र्विचित्रं
केकाऽभिगुञ्ज्यं कमनीयरूपम् ।
निम्बार्कपीठं खलु यत्र रम्यं
निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ॥

(५)

श्रीसाभ्रमत्या रुचिरप्रतीरे
गभीरनीरेण विसारमर्मैः ।
विशोभमानं हृदयाभिरामं
निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ॥

श्रीनिम्बार्कतीर्थाष्टक

(१)

नाना रूपात्मक विश्व के प्रशासक, दिव्य रश्मियों से युक्त जिस सूर्य ने जहाँ (निम्बार्कतीर्थ में) निम्ब वृक्ष पर निवास किया था, उस श्रीनिम्बार्कतीर्थ को नमस्कार करते हैं ।

(२)

जिस (निम्बार्कतीर्थ) का परम सुन्दर वर्णन पद्मपुराण में अच्छी प्रकार से किया गया है, जो पुष्करारण्य के समीप वर्तमान है, उस श्रीनिम्बार्कतीर्थ को नमस्कार करते हैं ।

(३)

जब[१] तक महाविष्णु ने इसी पावन स्थल पर प्रकट होकर कोलाहल नामक दैत्य का वध नहीं किया तब तक सूर्य ने यहाँ निम्बवृक्ष पर निवास किया था, अतः निम्बार्कतीर्थ नाम से प्रसिद्ध, उन्हीं महाविष्णु द्वारा जहाँ पर उस कोलाहल असुर का संहार किया ऐसे सूर्य के धाम स्वरूप उस श्रीनिम्बार्कतीर्थ को नमस्कार करते हैं ।

(४)

जो मनोहर विविध लता वृक्षों में स्थित पक्षियों के कलरव से विचित्र, मयूर की कमनीय केका वाणी से चारों ओर गुञ्जित, सुन्दर स्वरूप से युक्त है, जहाँ परम रमणीय जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठ है, उस श्रीनिम्बार्कतीर्थ को नमस्कार करते हैं ।

(५)

श्रीसाभ्रमती नदी के सुन्दर तीर पर गहरे नीर एवं मछली, कछुए आदि जलचरों से सुशोभित, मनोरम उस श्रीनिम्बार्कतीर्थ को नमस्कार करते हैं ।

१--पिप्पलादि तीर्थ के समीप ही साभ्रमती नदी के तट पर पिचुमन्दार्क (निम्बार्क) तीर्थ है, जो व्याधि व दुर्गन्ध का नाश करता है । यहाँ पहले कोलाहल नामक दानव के साथ देवताओं का युद्ध हुआ था । उसमें देवता पराजित हो गये । वे प्राण रक्षा के लिए अपने सूक्ष्म रूप से वृक्षों में निवास करने लगे । जब तक महाविष्णु ने कोलाहल नाम के दैत्य का वध नहीं किया तब तक यहाँ शम्भु बिल्व-वृक्ष में, श्रीहरि अश्वत्थ (पीपल) में, इन्द्र शिरीष में तथा सूर्य निम्ब-वृक्ष में रहे ।

यहाँ सूर्य ने निम्ब-वृक्ष पर विश्राम किया, अतएव इसका नाम निम्बार्कतीर्थ हो गया । यह साभ्रमती नदी के तट पर है । इसमें स्नान करने से रोगों का नाश होता है तथा अभीष्ट फल मिलता है ।

(पद्मपुराण--उत्तर खण्ड--अध्याय--१५८)

(६)

स्नानेन यत्राऽस्ति महाफलञ्च
दानेन यत्राऽस्ति सुखार्थलाभः ।
भावेन सर्वेश्वरभक्तिलाभो
निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ॥

(७)

यच्चारुतीरे भजते मुकुन्दं
चित्तं स्थिरीकृत्य सुनिष्ठया यः ।
ध्रुवं स भक्तो लभतेऽपवर्गं
निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ॥

(८)

संशोभते यत्र मनोज्ञरूपं
श्रीराधिकामाधव आप्तवन्द्यः ।
सर्वेश्वरः श्रीसनकादिसेव्यो
निम्बार्कतीर्थं तदहं नमामि ॥

(९)

निम्बार्कतीर्थसंस्तोत्रं हरिभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

*

(६)

जिस निम्बार्कतीर्थ में स्नान करने से महान् फल मिलता है, जहाँ दान देने से सुख व अर्थ का लाभ होता है, भाव (निष्ठा) से श्रीसर्वेश्वर प्रभु की भक्ति प्राप्त होती है, उस श्रीनिम्बार्कतीर्थ को नमस्कार करते हैं ।

(७)

जिसके सुन्दर तट पर अपने मन को स्थिर करके निष्ठा के साथ जो श्रीराधामुकुन्द का भजन करता है, वह निश्चय ही मोक्ष प्राप्त करता है, ऐसे महत्वशाली उस श्रीनिम्बार्कतीर्थ को नमस्कार करते हैं ।

(८)

जहाँ यथार्थवादी रसिक भक्तों द्वारा वन्दनीय, सुन्दर स्वरूप भगवान् श्रीराधामाधव एवं श्रीसनकादिकों के संसेव्य श्रीसर्वेश्वर प्रभु विराजमान हैं, उस श्रीनिम्बार्कतीर्थ को नमस्कार करते हैं ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित श्रीनिम्बार्कतीर्थाष्टक नाम का सुन्दर स्तोत्र नित्य पाठ करने वालों के लिए श्रीहरि की भक्ति प्रदान करता है ।

*

श्रीसत्पथाष्टकम्

(१)

राधेतिनामामृतदिव्यसिन्धो-
विन्दुं मुदा ये हृदि धारयन्ति ।
निश्चप्रचं ते भुवि तीर्थरूपा
गायन्ति तेषां चरितानि देवाः ॥

(२)

वृन्दावने श्रीयमुनाप्रतीरे
कदम्बकुञ्जे प्रजपन्ति ये च ।
स्वान्ते स्वकीये हरिनाम नित्यं
ते साधवः साधुवरेण्यरूपाः ॥

(३)

श्रीकृष्णलीलाऽमृतदिव्यधारां
पिवन्ति नित्यं खलु भाग्यवन्तः ।
ते सद्वरिष्ठा इह मर्त्यलोके
देवाऽभिवन्द्या नितरां वसन्ति ॥

(४)

समीप्सतीहानिशमन्नवित्ते
यशश्च भार्यामथ पुत्ररत्नम् ।
अहो परं संसृतिसिन्धुपोतं
स नेच्छति श्रीप्रभुपादयुग्मम् ॥

(५)

नानाविधं वै भुवनं विचित्रं
संदृश्यते मित्रकलत्ररूपम् ।
तथैव पुत्रादिधनादिदृश्यं
स्यान्निष्फलं श्रीहरिमन्तरेह ॥

श्रीसत्पथाष्टक

(१)

श्यामसुन्दर, नित्यनिकुञ्जविहारी श्रीकृष्ण की आह्लादिनी शक्ति श्रीप्रियाजी के राधा इस नामामृत के दिव्य सिन्धु की एक बिन्दु को भी जो प्रसन्नता से हृदय में धारण करते हैं, वे भू-मण्डल में निश्चय ही तीर्थ स्वरूप हैं । देवता उनके चरित का गान करते हैं ।

(२)

श्रीवृन्दावन में श्रीयमुनाजी के तट पर कदम्ब-कुञ्ज में जो अपने हृदय में श्रीहरि के नाम का नित्य जप करते हैं, वे साधुओं में श्रेष्ठ स्वरूपवान् साधु (सज्जन) हैं ।

(३)

श्रीकृष्ण के लीलामृत की दिव्यधारा का जो पान करते हैं, वे निश्चय ही भाग्यशाली हैं । सज्जनों में उत्तम वे इस मृत्युलोक में देवों द्वारा वन्दनीय होते हुये निवास करते हैं ।

(४)

अहो ! इस लोक में मानव सदा अन्न, धन, यश, भार्या और श्रेष्ठ पुत्र को प्राप्त करना तो चाहता है किन्तु वह संसार-सागर से पार होने के लिये नौका स्वरूप श्रीसर्वेश्वर प्रभु के युगल-चरण की इच्छा नहीं करता--यह महान् आश्चर्य की बात है ।

(५)

जिस प्रकार मित्र और कलत्र (स्त्री) रूप अनेक विध चित्र विचित्र यह जगत् दृष्टिगोचर होता है, उसी प्रकार पुत्रादि व धनादि का दृश्य भी विचित्र सुन्दर लुहावना लगता है, किन्तु यह सब श्रीहरि के भजन के बिना निष्फल है ।

(६)

शास्त्राणि नित्यं सुधयः पठन्तु
कर्माणि कुर्वन्तु सुखप्रदानि ।
परञ्च तेषां यदि चारुचित्ते
कृष्णस्मृतिर्नास्ति तदा वृथैव ॥

(७)

उपासका ये व्रजकुञ्जधाम्नि
गोविन्दगाथां श्रुतिसम्पुटैश्च ।
पिवन्ति चित्ते सततं पवित्रां
ते पुण्यरूपाः सफला भवन्ति ॥

(८)

सर्वं विहायाऽऽत्मसुखाय पूर्णं
सनातनं ब्रह्म परं वरेण्यम् ।
राधामुकुन्दं रससिन्धुरूपं
निरन्तरं संभज सर्वतश्च ॥

(९)

हरिभक्तिप्रदं शीघ्रं सरसं सत्पथाष्टकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ॥

॥ इति उत्तरार्द्धम् ॥

*

(६)

यदि विद्वज्जन नित्य शास्त्रों का अध्ययन करते रहें तथा सुखदायक कर्म भी करते रहें किन्तु हृदय में यदि श्रीकृष्ण का स्मरण न करते हों तो उनके वे सब कर्म व्यर्थ हैं ।

(७)

व्रज धाम एवं निकुञ्ज धाम में जो उपासक पवित्र श्रीगोविन्द-गाथा का अपने कर्णपुटों से निरन्तर पान करते रहते हैं, जिससे चित्त में पवित्रता आ जाती है, वे सब पुण्यात्मा सफल कहलाते हैं ।

(८)

हे मन ! अन्य सब कुछ छोड़कर आत्म--सुख के लिये पूर्ण सनातन (नित्य), उत्कृष्ट, आश्रयणीय रस (आनन्द) के सिन्धु रूप परब्रह्म श्रीराधामुकुन्द का ध्यान, धारणा, सेवा, संकीर्तन, आदि सब प्रकारों से निरन्तर भजन कर ।

(९)

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधिपति श्री श्रीजी श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्यजी महाराज द्वारा विनिर्मित सरस यह सत्पथाष्टक नाम का स्तोत्र नित्य पाठ करने वालों के लिये शीघ्र ही श्रीहरि-भक्ति को प्रदान करता है ।

॥ उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

*

श्रीहरिपादोदकस्तोत्रम्

(१)

सुधारूपं परं दिव्यं श्रीहरेश्चरणोकम् ।
प्रत्यहं श्रद्धया सेव्यं सर्वपातकसंहरम् ॥

(२)

भवरोगहरं सद्यः परमं पावनं वरम् ।
विधिना प्रत्यहं पेयं श्रीहरिचरणामृतम् ॥

(३)

सर्वेश्वराऽभिषेकाऽम्बु योऽभिगृह्णाति निष्ठया ।
स प्रयाति हरेर्धाम नैवाऽस्ति कोऽपि संशयः ॥

(४)

हरिमन्दिरमागत्य विधाय हरिदर्शनम् ।
चरणामृतमाचम्य गोविन्दं मनसा स्मरेत् ॥

(५)

शालग्रामाऽभिषेकस्य पवित्रं जलमुत्तमम् ।
सादरं नित्यमादाय राधाकृष्णमनुस्मरेत् ॥

(६)

भवाऽऽधि-व्याधिसन्दोह-समूलपरिदाहकम् ।
एवंविधं हरेरङ्घ्रि--पङ्कजाऽम्बुरसं पिबेत् ॥

(७)

चरणामृतपानेन नश्यन्ति दुरिता ध्रुवम् ।
इति शास्त्राणि गर्जन्ति वदन्ति श्रुतिकोविदाः ॥

श्रीहरिपादोदकाष्टक

(१)

भगवान् श्रीहरि राधासर्वेश्वर के अभिषेक किये हुए परम पावन, परम दिव्य, अमृत रूप चरणामृत जो समस्त त्रिविध पाप-तापों का शमन करने वाला है, उसे प्रतिदिन अत्यन्त श्रद्धा के साथ सेवन करना चाहिए ।

(२)

जो तत्काल इस जगत् की जन्म-मरणादि महाव्याधि को हरने वाला है, अत्यन्त पावन परम श्रेष्ठ है, ऐसे उन सर्वान्तर्यामी सर्वेश्वर श्रीहरि के चरणामृत का शास्त्र विहित विधानानुसार प्रतिदिन पान करना नितान्त अपेक्षित है ।

(३)

भगवान् श्रीसर्वेश्वर के अभिषेक किये हुए चरणामृत को जो श्रद्धालु भक्त निष्ठापूर्वक लेता है वह सर्वाधार श्रीप्रभु के नित्य दिव्य सच्चिदानन्दमय धाम को प्राप्त करता है, इसमें लेशमात्र भी सन्देह नहीं है ।

(४)

सर्वनियन्ता श्रीहरि के दिव्य मन्दिर में आकर उन अखिलसौन्दर्यसिन्धु श्रीप्रभु के परम मनोहर मंगलमय दर्शन करके भावयुक्त चरणामृत को लेकर परम करुणावरुणालय भगवान् श्रीगोविन्द का अवश्य ही स्मरण-चिन्तन करे ।

(५)

शालग्राम स्वरूप श्रीसर्वेश्वर के अभिषेक किये हुए परम पवित्र परमोत्तम श्रीचरणोदक को आदर सहित नित्य प्राप्त कर भगवान् श्रीराधाकृष्ण का ध्यान युक्त हो अनुस्मरण-भजन करे ।

(६)

जो इस संसार की सम्पूर्ण आधि-व्याधि शोक-संताप समूह को समूल ही भस्मसात् करदे, ऐसे श्रीहरिचरणामृतरस का अवश्य ही पान करे ।

(७)

वस्तुतः ऐसे श्रीप्रभु के दिव्य चरणामृत पान से समग्र जन्मान्तरीय पाप-पुञ्ज निश्चित रूप से विनष्ट हो जाते हैं,--इस सम्बन्ध में श्रुति-स्मृति-सूत्र-तन्त्र-पुराणादि सम्पूर्ण शास्त्र उद्घोष करते हैं एवं इसी प्रकार निगमागमादि शास्त्रविद् विद्वान् भी इसी भाव को अभिव्यक्त करते हैं ।

(८)

गङ्गारूपं हरेश्चारु--चरणामृतमद्भुतम् ।
अथ प्रतिदिनं प्रातराचम्य प्रभजेत्प्रभुम् ॥

(९)

अनन्तसद्गुणाधारं भगवच्चरणोदकम् ।
अवाप्य शिरसा धार्य मनसा श्रीहरिं भजेत् ॥

(१०)

श्रीचरणोदकं ग्राह्यमविवेकनिवारणम् ।
श्रीप्रदं धीप्रदं श्रेष्ठ-मकालमृत्युसंहरम् ॥

(११)

मुनिभिः साधुभिः पीतं निर्जरनिकरैः सदा ।
धात्रा शिवेन सम्पीतं श्रीहरिचरणामृतम् ॥

(१२)

श्रीखण्डचन्दनघ्रातं तुलसीदलशोभितम् ।
राधाकृष्णाऽङ्घ्रिदिव्याऽम्भः सेव्यं वैष्णवसत्तमैः ॥

(१३)

महर्षिसनकाद्यैश्च देवर्षिनारदादिभिः ।
प्रगीतं सततं प्रेष्ठं गोविन्दचरणामृतम् ॥

(१४)

पादोदकप्रभावेण यमदूता यमालयम् ।
पलायन्ति भयापन्ना इति शास्त्रानुशासनम् ॥

(८)

गङ्गा स्वरूप श्रीहरि चरणामृत जो अत्यन्त कमनीय और परम अद्भुत है, उसे प्रतिदिन प्रातःकाल आचमन रूप में पान कर श्रीराधामाधव प्रभु का तन्मयता से भजन अवश्य करे ।

(९)

श्रीप्रभु के पावन चरणामृत में अनन्त गुण विद्यमान हैं, ऐसे दिव्य चरणामृत को पान कर अपने शिर पर भक्तिपूर्वक धारण करें और उन सर्वान्तर्यामी सर्वेश्वर श्रीहरि का अपने अन्तःकरण से भजन करें ।

(१०)

हमारे अज्ञान का निवारण करने वाला, समस्त ऐश्वर्य का दाता सद्-बुद्धि प्रदायक, अकालमृत्यु-निवारक श्रीभगवच्चरणामृत जिसे नियमित ग्रहण करना चाहिये ।

(११)

बड़े-बड़े मुनिजनों सन्तजनों ने निखिलजगत् के रचयिता श्रीब्रह्मा ने चन्द्र-मौलि भगवान् श्रीशंकर ने तथा समस्त देववृन्दों ने जगन्नियन्ता सर्वान्तरात्मा परमे-श्वर श्रीप्रभु के दिव्य चरणामृत का सर्वदा पान किया है जिसकी अपार महिमा है ।

(१२)

श्रीखण्डचन्दन से परम सुवासित, भगवत्प्रिया श्रीतुलसी पत्र से अतीव सुशोभित वृन्दावनेश्वर सर्वेश्वर युगलकिशोर भगवान् श्रीराधाकृष्ण के पावनतम चरणामृत का वैष्णव परमभागवत भगवज्जनों को नित्य सेवन करना चाहिये ।

(१३)

श्रीसनक-सनन्दन-सनातन-सनत्कुमार इन महर्षि-चतुष्ट ने तथा देवर्षिवर्य श्रीनारद प्रभृति समस्त ऋषि-मुनिजनों ने भगवान् श्रीगोविन्द के परमोत्तम चरणामृत के दिव्य सुयश का सोल्लास सतत गान किया है, इस प्रकार श्रीहरिचरणामृत की अपार महिमा है ।

(१४)

श्रीसर्वेश्वर के दिव्य चरणामृत के प्रबल प्रभाव से यमदूत अत्यन्त भयभीत होकर यमलोक की ओर तत्काल पलायन कर जाते हैं, जिसका वर्णन सम्पूर्ण शास्त्र अनवरत करते हैं ।

(१५)

भवार्णवं समुत्तीर्य चरणोदकसेवनात् ।
प्राप्नोति भगवद्धाम लभते परमं सुखम् ।।

श्रीभगवच्चरणोदक के नित्य सेवन करने से इस भीषण भवसिन्धु को पार कर भगवद्-भक्त श्रीभगवद्धाम की प्राप्ति करता है और जिसकी प्राप्ति से इस भवबन्धन का सर्वदा के लिये छुटकारा मिल जाता है । ऐसे श्रीप्रभु के सच्चिदानन्दमय दिव्य धाम को प्राप्त कर वह भक्त अखण्ड आनन्द का अनुभव करता है ।

(१६)

हरितीर्थोदकं पीत्वा सश्रद्धं जयमुच्चरेत् ।
नामसंकीर्तनं कृत्वा साष्टाङ्गं प्रणमेत्प्रभुम् ।।

श्रीहरि के तीर्थोदक अर्थात् चरणामृत को प्राप्त कर श्रद्धायुक्त मंगलमय जय ध्वनि करें और युगलविहारी श्रीराधासर्वेश्वर का मधुर नाम-संकीर्तन कर श्रीप्रभु को साष्टांग प्रणाम करें । यहीं हमारे जीवन का परम धर्म एवं परम कर्तव्य है ।

(१७)

हरिपादोदकस्तोत्रं हरिभक्तिप्रदायकम् ।
राधासर्वेश्वराद्येन शरणान्तेन निर्मितम् ।।

श्रीहरि भक्ति को प्रदान करने वाला यह **श्रीहरिपादोदकस्तोत्र** जिसकी रचना उन्हीं श्रीराधासर्वेश्वर प्रभु के शरणागत श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य श्री श्रीजी महाराज द्वारा सम्पन्न हुई ।

अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु श्रीनिम्बार्काचार्यपीठाधीश्वर

श्रीराधासर्वेश्वरशरणदेवाचार्य

श्री श्रीजी महाराज

द्वारा विरचित--

✻ ग्रन्थमाला ✻

		प्रकाशित	श्लोक सं.
१.	श्रीनिम्बार्क भगवान् कृत प्रातः स्वतवराज पर (युग्मतत्त्व प्रकाशिका) नामक संस्कृत व्याख्या	,,	
२.	श्रीयुगलगीतिशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	११८
३.	उपदेश-दर्शन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
४.	श्रीसर्वेश्वर-सुधा-बिन्दु (पद सं. १३२)	,,	
५.	श्रीस्तवरत्नाञ्जलिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	३६५
६.	श्रीराधामाधवशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०५
७.	श्रीनिकुञ्ज-सौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	५८
८.	हिन्दु संघटन (हिन्दी-गद्यात्मक)	,,	
९.	भारत-भारती-वैभवम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१३५
१०.	श्रीयुगलस्तवविंशतिः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१८६
११.	श्रीजानकीवल्लभस्तवः (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	४०
१२.	श्रीहनुमन्महिमाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	२२
१३.	श्रीनिम्बार्कगोपीजनवल्लभाष्टकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१५
१४.	भारत-कल्पतरु (पद सं० १४६)	,,	
१५.	श्रीनिम्बार्कस्तवार्चनम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६५
१६.	विवेक-वल्ली (पद सं० ४१६)	,,	
१७.	नवनीतसुधा (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
१८.	श्रीसर्वेश्वरशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०८
१९.	श्रीराधाशतकम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	१०३
२०.	श्रीनिम्बार्कचरितम् (संस्कृत-गद्यात्मक)	,,	
२१.	श्रीवृन्दावनसौरभम् (संस्कृत-पद्यात्मक)	,,	६०

कुल हिन्दी पद सं० १४६२ कुल श्लोक सं० १७७५